वर्ष 26 | चैत्र-वैशाख | अप्रैल-2021 | अंक 04 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एन.डी. 08/2021-2023
मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक
डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन
सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन
46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय
प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"
1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

मानव अगरः- बुलाने पर शान्त हो, कहने पर क्षमाशील बने, प्रसंग पर धैर्यवान बने, आवश्यकता पड़ने पर विशाल बने, भूमिका में संयमी बने, विचार करने पर संस्कारी बने, औचित्य पर सात्विक बने, अधिकार में प्रौढ़ बने, चारित्र बल में सबका विश्वास पात्र बने।

दिव्य आर्शीवाददाता
प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.
मार्गदर्शक एवं प्रेरक
प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन
अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य।
अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतुणो॥

जन्म दुःख है, वृद्धावस्था दुःख है, रोग दुःख है और मृत्यु दुःख है। अहो! यह संसार नितान्त दुःखमय है, जिसमें संसार के प्राणी क्लेश पा रहे हैं।

- उत्तरा. सूत्र, 19.16

पाथेय

हे प्रभु और पवित्रता के दिव्य स्वामी! कृपा करो कि अपनी निम्नतम क्रियाओं एवं तुच्छतम अवस्थाओं में भी यह यंत्र जो तुम्हारी सेवा करना चाहता है, हो सके पूर्णतया मुक्त एवं निर्मल, सभी अहंकारी वृत्तियों, समस्त मूल भ्रांतियों और समस्त अंधेरों से जिससे उसके अन्दर का कोई भी तत्व तुम्हारे कार्य को न कर सके दूषित, विकृत और बाधित। हमारे अन्दर के कितने ही छोटे-छोटे कोने तुम्हारी ज्योतिर्प्रभा से अछूते, प्रकाश से रहित अंधेरों में पड़े हुए है, छुपे हुए, अनभिज्ञ, अनजान, उनके लिये मैं तुम्हारे प्रकाशों के परम सुख की करती हूं प्रार्थना। प्रभु! मुझे एक विशुद्ध, निर्मलतम स्फटिक बन जाने दो जो तुम्हारी ज्योति को विकृत, अंतिरंजित एवं धूमिल किये बिना अपने अन्दर से गुजरने देता है, अपनी पूर्णता पाने की इच्छा से नहीं अपितु तुम्हारे कार्य को निर्मलता से पूर्ण करने की अभिलाषा से।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-26 चैत्र-वैशाख अप्रेल 2021 अंक-4

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2- विषय सूची	4
3- आत्म वैज्ञानी : प्रभु श्री महावीर....-(सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन	5
4- अघाति कर्म : आयुष्य कर्म- आ.श्रीमद् विजयजिनोत्तम सूरीश्वरजी म.	6
5- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्री अरुणविजयजी म.सा. अति सर्वत्र वर्जयन्ते, आधुनिक युग की सात गैर-समझ	7-8
6- मेरे भाई महाराज-श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म., समर्पण भाव.... वस्तुपाल की अंतिम प्रार्थना	9-11
7- आत्मा का शुद्धिकरण ही सम्यक तप है- प.पू.साध्वी डॉ. सुभाषाजी म.	12
8- भगवान श्री महावीर का जीवन, सुनो और गुनो....	13
9- भगवान श्री महावीरस्वामीजी की उपदेयता	14
10-भावित ज्ञान, गुण और दोष	15
11-श्री महावीर आत्म विज्ञान के सफल अध्येता-डॉ. सुभाष जैन	16
12-प्रभु श्री महावीर के स्थूल 27 भव,जहां रस वहां मन	17-18
13-भगवान श्री महावीर के संदेश व हितोपदेश	19
14-खून का रिश्ता, महाराजा श्रीपाल, पुस्तक प्रेम	20
15-दुनिया का दर्पण-प.पू.पंन्यास प्रवर श्री राजहंसविजयजी म.सा.	21
16-तत्वज्ञान : निर्जरा- श्रीमद् विजयकेशर सूरीश्वरजी म. प्रभु ! हमारे विकास की पराकाष्ठा	22-23
17-गौशाला के भाव एवं भव, समाधि मरण हेतु	24
18-वासक्षेप : मंगल आर्शीवाद- श्रीमती मंजू चौपड़ा स्याद्वाद के सप्त भंग-शांतिलाल सगरावत	25-26
19-विज्ञान के युग में करें अब इलेक्ट्रॉनिक ध्यान	27-28
20-आगमोद्धारक भविष्य फल-अप्रेल-2021- अनु दीपक जैन	29
21-वर्गपहेली- 311 - जयंतीलाल जैन	30
22-ज्ञान गंगोत्री- 311 - आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.	31
23-शासन-समाचार	32-41
24-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है	42

संपादकीय

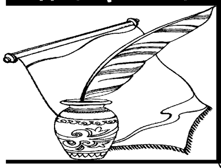

आत्म वैज्ञानी : प्रभु श्री महावीर

आर्यावृत की हमारी पुण्य धरा पर अनेक धर्म संस्कृति और अवधारणाओं का समय-समय पर जन्म होता रहा है, यही नहीं उस संस्कृति का पोषण करने के लिये बहुआयामी बिम्ब भी उदित हुए हैं। जिन्होंने मानवीय चेतना को प्रतिबोधित किया है। जैन संस्कृति की अपनी बहुआयामी आध्यात्मिक विचारधारा और कहें तो प्रागऐतिहासिकता है। वर्तमान काल की चौबीसी तीर्थंकर परमात्मा की परम्परा में प्रभु श्री महावीर ने अपने सामाजिक चिंतन के द्वारा अद्भूत दिशा बोध द्वारा मानवीय सद्भाव की सूक्ष्म संवेदनाओं को संजीव बनाया था। मानवीय सभ्यता, सामाजिकता और करुणामयता से भरा ऐसा ईश्वरत्व प्रभु वीर को एक अद्भूत ज्योतिधर महापुरुष बनाने के लिये काफी है।

श्री महावीर भगवान ने सम्प्रदायवाद से ऊपर उठकर अपने जनोन्मुखी उदार विचारों से मानवीय करुणा को जीवित रखा यही नहीं प्रभु वीर ने अहिंसा मूलक जनसंस्कृति के अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त करने के लिये एक नहीं अनेक बार क्रूर मानवीय राक्षसों के मन, वचन और काया के अत्याचारों को सहन कर समता, सहिष्णुता, परस्पर प्रति और आत्माबलम्बन को यदि परिपोषित किया है, प्रभु महावीर की यही सहनशीलता उन्हें परमात्म गौरव प्रदान कराती है। प्रभु महावीर ने अनार्य क्षेत्रों में पद विहार कर समाज के सबसे कमजोर और निचले तबके के लोगों के बीच में करुणा का संदेश देकर उदारता को पुष्पित पल्लिवित किया, प्रभु महावीर के द्वार सभी के लिये खुले थे, प्रभु ने मनुष्य ही नहीं प्राणीमात्र की स्वतंत्रता को परिभाषित किया है, प्रभु की यही उदारता उन्हें वर्द्धमान बनाती है। प्रभु श्री महावीर एक ऐसे आत्म विज्ञानी थे जिन्होंने आत्मा के गूढ़ रहस्यों को पा लेने के लिये सम्पूर्ण जीवन को त्यागमय बना लिया था, प्रभु ने अपने जीवन को प्रयोगशाला बनाकर आत्मा की खोज में पूर्णता प्राप्त करने के बाद जनमानस के लिये बहुत ही सरल शब्दों में मानव को भगवान बनाने का मार्ग दिखाया। प्रभु ने मनुष्य की मूर्च्छा तोड़कर उसे यह मार्ग दिखलाया कि- वह स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। श्री महावीर का चिंतन स्वयं अनुभव से प्रेषित था। मैं की खोज से आरंभ हुई प्रभु की अंर्तयात्रा आत्मानुभव के बाद तीर्थंकर पद प्राप्त करने पर पूर्ण हुई।

प्रभुवीर का आविर्भाव इस समय हुआ था जब सम्पूर्ण भारतीय समाज अनिश्चतताओं में जी रहा था यही नहीं सामाजिक शोषण और हिंसा का बोलबाला था चारों ओर अंधविश्वास और रुढ़ियों से पूरी मानवता ग्रस्त थी ऐसी विकट परिस्थितियों अपना राजपाट सब छोड़कर मानवता की सेवा का लक्ष्य लेकर प्रभु ने अज्ञानता के खिलाफ एकला चलो रे के सिद्धांत पर ज्ञान का दीप प्रज्जलित कर अहिंसक क्रांति का बिगुल बजा दिया। प्रभु ने जीवमात्र के प्रति अपनी करुणाशीलता को प्रवाहमान कर सच्ची समता का परिचय दिया। समाज में समानता और बराबरी का सिद्धांत देने के साथ प्रभु ने नारी उत्थान की बात को चारित्रार्थ कर आम आदमी को स्वतंत्रता का संदेश दिया। इसी के साथ अपरिग्रह के सिद्धांत की विचारधारा से स्वालबंता की बात को भी परिपुष्ट किया। प्रभु वीर का अपरिग्रह सामाजिक साम्य, स्वस्थ और संतुलित जीवन जीने का शाश्वत मंत्र है। प्रभु श्री महावीर आत्म संशोधक वैज्ञानिक थे उन्होंने शरीर और आत्म के सुन्दर समन्वय से आत्म और जड़ सत्ता का ज्ञान प्राप्त कर मन वचन और कर्म के प्रयोग से आत्मा तक पहुंचने का मार्ग -ढ़ निकाला। आत्मा की स्वाधीनता पाकर प्रभु प्रत्येक मनुष्य को मोक्ष तक जाने का दिग्दर्शन देकर हर जीव को मुक्ति का मार्ग बता गये। प्रभु ने क्रूरता और बैर को करुणा और प्रेम से जीने का अमर संदेश दिया। यह प्रभु के द्वारा मानवता की रक्षा के लिये दी गई मनुष्य को सबसे बड़ी देन है। प्रभु ने वैचारिक संस्कार को आचरण का अंग बनाकर धर्म और संस्कृति का रक्षण करने का बोध कराया।

सम्पूर्ण विश्व के सांस्कृतिक-आध्यात्मिक, क्षितिज पर जीवन की गुण सम्पन्नता एवं सम्मान भावों के साथ अहिंसक क्रांति का अमर संदेश देनेवाले प्रभु श्री महावीर का आत्म दीप आज भी प्रज्जलित है और आगे भी रहेगा। सम्पूर्ण मानवता को जीने की नई -ष्टि प्रदान कर मानव में आस्था और विश्वास पैदा किया। प्रभु वीर ने अपनी साधना, त्याग और तप के द्वारा लोक मानस को आध्यात्मिक विराटता से परिचय कराकर उस अंर्तयात्रा का पार्थक बना दिया जहां आत्मा परमात्मा बन जाती है। भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक आध्यात्मिक चेतना के विशाल पटल पर प्रभु श्री महावीर का अस्तित्व हमें मानवीय संवेदनाओं के जग कल्याणी स्वरुप में दिखाई देता है। ऐसे महामानव का स्मरण कर हमारा जीवन धन्य हो गया है। आप सबकी और से प्रभुवीर का करबद्ध आदरांजलि।

✻ डॉ. सुभाष जैन

अघाति कर्म : आयुष्य कर्म

आ.श्रीमद् विजयजिनोत्तमसूरीश्वरजी म.

अपने स्वरुप में आत्मा जन्म-मरण के बंधने से मुक्त अक्षय स्थिति वाला है। न इसका जन्म होता है, न मरण। किन्तु आयुष्य कर्म के कारण वह विभिन्न शरीरों को धारण कर उनमें कुछ नियत समय तक बंधा रहता है। इस कारण आयुष्य कर्म एक प्रकार का कारागार या पिंजरा है। कहा गया है कि जब तक आयुष्य कर्म रहता है, प्राणी शरीर रुपी पिंजरे में या देह रुपी कारागार में बंद रहता है। आयुष्य की जंजीर से बंधा प्राणी देह में स्थित रहता है। अर्थात् जीवित रहना, प्राण धारण किये रहना, यह आयुष्य कर्म का ही प्रभाव है। एक गति का आयुष्य पूर्ण होने पर ही प्राणी अगली गति (योनि) में जन्म लेता है।

आयुष्य कर्म भी दो प्रकार का है- **1- शुभ आयुष्य तथा 2- अशुभ आयुष्य।**

जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त आयुष्य कर्म का भोग रहता है। सामान्यतः देव यानि (देवलोक) का आयुष्य शुभ माना जाता है। वहां उत्पन्न होने वाले जीव प्रायः मनचाहे सुख व आनन्द का भोग करते है। मनुष्य के जन्म में शुभ आयुष्य व अशुभ आयुष्य दोनों का ही योग होता है। तिर्यच गति व नरक गति अशुभ आयुष्य का ही फल है। नरक में तो घोर दुःख ही दुःख है। नारक जीव उन दुःखों से घबराकर बार-बार भागता है, शरीर का नाश करने का भी प्रयत्न करता है परन्तु आयुष्यकर्म का पूर्ण भोग किये बिना उस योनि से मुक्त नहीं हो सकता। तिर्यच योनि में भी प्रायः दुःख, परवशता का कारण प्राणी दुःखी जीवन व्यतीत करता है।

बंध के कारण-शुभ देव आयुष्य बंध के कुछ विशेष कारण है- जैसे श्रावक-व्रतों का पालन करना अथवा जब तक वीतराग अवस्था प्राप्त न हो तब तक मुनिधर्म रुप चारित्र की आराधना करना, तपस्या करना, देव-गुरु की श्रद्धापूर्वक सेवा-भक्ति करना। सुपात्र त्यागी जनों को शुभभाव भक्ति के साथ निर्दोष आहार आदि देना। सहजभाव से कष्टआदि सहना, दूसरों का कल्याण करने का पुरुषार्थ करना आदि।

मनुष्य आयुष्य बंध के भी मुख्य-मुख्य कारण ये हैं-परिग्रह की सीमा करना, हिंसा-असत्य आदि का अधिक से अधिक त्याग करना, त्याग-प्रत्याख्यान करते रहना। मन को सरल, निष्कपट रखना, सबके साथ विनम्रता पूर्ण मधुर व्यवहार रखना। किसी के मन को, वचन व कर्म से चोट नहीं पहुंचाना। देव, गुरु, धर्म की भक्ति करना इत्यादि।

तिर्यंचायुष्य के बंध के कारण- जो प्राणी कपटी व मायावी होता है, दूसरों के साथ धोखा व विश्वासघाती करता है, धन संग्रह में आसक्ति रखता है, हिंसा-झूठ आदि पापों का त्याग नहीं करता, अपने किये हुए व्रतों में दोष सेवन करता है और दोष सेवन करके भी उसे छिपा कर, उसकी शुद्धि नहीं करता इत्यादि कारणों से तिर्यच गति का आयुष्य बधता है।

नरकायुष्य बंध के कारण- पंचेन्द्रिय प्राणियों की हत्या व घात करना-कराना, मांसाहार का सेवन करना। रात-दिन हिंसा, असत्य व लोभ आदि के वश क्रूर अनैतिक उपायों से धन संग्रह करना तथा धन का राष्ट्रद्रोही, समाजघाती व आपराधिक कार्यों में उपयोग करना। क्रोध, मान, माया, लोभ इन कषायों की अत्यन्त उग्रता रखना। रात-दिन क्रूर, निर्दय, विचारों में रहना। झूठ, चोरी, मैथुन (व्यभिचार, दुराचार) आदि पापों का अधिकतम आचरण करना इत्यादि कारणों से जीव नरक आयुष्य का बंध करता है।

आयुष्य कर्म का क्षयोपशम नहीं होता। क्योंकि जितना आयुष्य अर्थात् जितने समय तक शरीर धारण करने का निश्चित है, उतना आयुष्य भोगना ही पड़ता है। देवगति, नरक गति तथा तीर्थकर, चक्रवर्ती आदि महापुरुष अपना पूर्ण आयुष्य ही भोगते हैं। किन्तु मनुष्य व तिर्यच आदि प्राणी दुःखों से घबराकर या अन्य कारणों से आत्महत्या आदि के उपाय कर अकाल मृत्यु भी प्राप्त कर सकते हैं परन्तु ऐसा करना तो घोर पाप है। आत्महत्या करने वाला नरक आदि दुर्गतियों में जाकर और अधिक दुःख पाता है। अतः जितना आयुष्य प्राप्त हुआ है, वह चाहे सुखमय हो या दुःखमय उसे समता धारण कर शांति के साथ धर्मध्यान करते हुए बिताना चाहिये।

जब आयुष्य कर्म पूर्ण रुप से क्षय हो जाता है, तब आत्मा अजर-अमर शाश्वत सिद्ध दशा को प्राप्त कर लेता है।

आधार-स्थानांगसूत्र, स्थान 4 तत्वार्थ (भाष्य)

गुरु के बंधन में जो न बंधे
वह दुनिया का सबसे बडा अभगा है।

पाप की सजा भारी...!

***प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.**

गतांक से आगे...!

दान-शील-तपो-भावैरस्यैधते वृषो भुवि ।
यस्य मनो वचः कायैः,पैशुन्यं नाभिसंश्रयेत् ॥

पृथ्वी तल पर उसी मनुष्य का दान-शील-तप-भाव का धर्म बढ़ता है, वृद्धि पाता है जिसके मन वचन और काया में भी पैशुन्यवृत्ति के पाप अंश भी न हो। मन से वचन से और काया से भी जो चुंगली खाने का पाप का आश्रय न करता हो उसी के दानादि धर्म वृद्धि पाते है । शोभास्पद बनते हैं । शास्त्रकार महर्षियों के इन उपरोक्त शब्दों पर ध्यान से कभी सेचिए। गौर से विचार कीजिए। आपको सही लगेंगे। उस सज्जन ने भी लाखों रुपये दान पुण्य के धर्मार्थ कार्य में बोले लेकिन एक पैसा भी दिया नहीं। पैसा भयंकर पाप करके कमाया हुआ था। वह पाप उसकी 45-46 वर्ष की नौजवानी में फूट निकला । उसके शरीर में भयंकर रोग हो गया । चिकित्सा के लिए विदेश भी गया परन्तु आखिर खून का कै हो गई और एक क्षण में प्राण पखेरु उड़ गए । उसके पीछे उसने जो संसार खड़ा किया था उसमें से भी उसके पाप की ही बदबू आ रही है और संघर्ष के मामले में परिणाम क्या आएगा वह तो ज्ञानी जानें। अनेक बातें प्रगट हो रही हैं।

ये बिचारे भारत से भगे हुए और अपने आपको भगवान जिसने कई लोगों को पागल बनाया था, दंभ वृत्ति में रहकर भगवे कपड़ों की ढाल में सैकड़ों पापों को सेवन किया आखिर आज उसके पाप का घड़ा फूटा और पाप जगत भर में जाहार हो गया है। ऐसे बिचारे भगवान को हथकड़ी लगी है। भागते हुए पकड़ा गया है, उसे उसके अनुयायियों के साथ कष्टडी में रखा गया है, अखबारवाले लिखते है कि यदि उसके सैकड़ों पाप प्रमाण सहित पकड़े गए तो 175 वर्ष की जेल होने की संभावना है और साथ-साथ तीन लाख डालर का जुर्माना होगा। वैसे ही उसके खास अनुयायि जो पकड़े गए है उन्हें 165 वर्ष की कैद होगी। सोचिए आयु से भी ज्यादा दुगनी कैद ? मतलब कितना भयंकर पापाचार चलाया होगा ?

चुगल खोर को कौए-कुत्ते की उपमा-
अशन मात्र नो हो के शुनक कृतज्ञ छे,
तेहथी भूंडो हो कि पिशुनी लवे पछे ॥
दुधे धोये हो के वायस उजलो,
केम होय प्रकृति हो के नेह छे त्यां लगे ॥

उपाध्यायजी यशोविजयजी वाचक सज्झाय के इस गुजराती पद में कहते है कि चुगलखोर की अपेक्षा है, जो मालिक का खाकर भी उसे वफादार रहता है। रक्षा करता है । अतः कुत्ता कृतज्ञ है परन्तु चुगलखोर तो कुत्ते से भी गया गुजरा हीन है । वह तो जिसका खाएगा उसकी भी चुगली करेगा । अतः पैशुन्यवृत्तिवाला दगजबाज गिना जाता है, उपकारी पर भी अपकार करता है। जैसे दूध से धोने पर भी कौआ सफेद नहीं होता है उसी तरह चुगलखोर हितशिक्षा भी दी जाय तो भी नहीं सुधरता। इतना वह पशु-पक्षी से भी हीन कक्षा का है जब तक तिल में तेल रहता है वहां तक तो सभी तिल कहते है, लेकिन तिल निकाल देने के बाद गुजराती में उस कचरे को खोल (खल) कहते हैं। खल का अर्थ संस्कृत में दुष्ट-दुर्जन होता है। अतः चुगलखोर दुष्ट-दुर्जन कहलाता है । क्योंकि वह निःस्नेही निर्दयी होता है । इसलिए ऐसे चुगलखोर की ज्यादा बात तो क्या करनी वह अपशुकनी होता है । प्रातः उसका मुख भी नहीं देखना चाहिये । ऐसा लोग कहते है। वह सर्वत्र कुत्ते की तरह अपमानित होता है, तिरस्कृत होता है फिर भी चुगली का व्यसन नहीं छोड़ सकता यह कितना आश्चर्य है। कर्मशास्त्रकार कहते हैं चुगलखोर अपने और दूसरे के दोनों के कुल को कलंकित करता है। पिशुनी में कोई गुण नहीं होता है। वह गुण का दुश्मन होता है और कोई गुण हो तो भी गुण की वाड़ी उसकी सूख जाती है। उसमें लोग गुण की कल्पना ही नहीं करते। यह उच्चकुल के सज्जन का काम नहीं है। दुर्जन-दुष्ट नीच कुल के अधम मनुष्य का ही यह पाप है। Back-Biting पीठ के पीछे काटने का यह पाप है। चुगलखोर को लोग बिना पैसे का निकम्मा फेरीया है। बातों की हेराफेरी करने का फेरीया है अपनी अनुपस्थिति में अपनी पीठ के पीछे खराब बोलना यह उसकी आदत है । यद्यपि चुगलखोर को चुगली के हीन धंधे में फायदा या लाभ अंश मात्र भी नहीं है। मिलता कुछ भी नहीं है। फिर भी बिचारा आदत से लाचार है। दुर्व्यसन छुटता नहीं है। मित्र-स्नेही-संबंधीयों में भी कलह करता है। अतः उसकी इज्जत तो अंश मात्र भी नहीं रहती। हमको ऐसा समझना चाहिये कि भस्म लगाकर घिसने से दर्पण शुद्ध ही होता है उसी तरह पिशूनी के द्वारा चुगली करने पर हमारी प्रतिष्ठा कम नहीं होती ऊपर से बढ़ती ही है।

अभ्याख्यान और पैशुन्य से बचने के उपायः-

वाणी संयम- अभ्याख्यान के पाप से बचने के लिए अर्थात्

आरोप या आक्षेप लगाने के पाप से दूर रहने के लिए वाणी का संयम यह सबसे अच्छा उपाय है। किसी पर भी कलंक लगाते पहले सो बार विचार करना चाहिये। विचार शक्ति सजाग रखनी चाहिये। कोई कुछ भी कह दे लेकिन जल्दी मान नहीं लेना चाहिये। परीक्षा करके प्रमाण देखकर फिर मानने की बात करना। कोई अपने ऊपर कलंक लगाए तो कैसा दुःख होता है वैसा ही विचार करके हम भी दूसरों पर कलंक-आरोप न लगाए। ताकि दुसरों को भी समाज में हीलना न हो।

मैत्री भाव से दिल की विशालता रखनी चाहिये। वसुधैव कुटुंबक की उदार वृत्ति रखनी चाहिये। सभी मेरे ही भाई है। सभी मेरे मित्र है इतनी ऊंची विश्वभ्रातृत्व भाव एवं विश्व मैत्री भाव की उदार भावना रखनी चाहिये। ऐसी उत्तम भावना वाला कभी भी ऐसा हल्का पाप नहीं करेगा। दूसरी तरफ ज्ञान के द्वारा उत्पन्न गंभीरता होनी चाहिये, हमारा स्वभाव गंभीर हो तो जीवन में हल्की मनोवृत्ति उत्पन्न ही नहीं होगी। गंभीरता कई दोषों को, कई पापों को देखकर भी शांत रह सकता है। उसका पेट बड़ा होता है। दिल भी बड़ा विशाल होता है। ऐसी अभ्याख्यान वृत्ति या पैशुन्यवृत्ति वाले हल्के पाप वह कभी नहीं करता। मन की विशालता और स्वभाव की गंभीरता कई दोषों को अपने में समा लेता है। जो कईयों के दोषों को देखकर भी नहीं बोलता है वह गंभीर है और गंभीर मनुष्य ही महान बन सकता है। बचपन से यदि गंभीरता अच्छी पड़ी है तो समझ लीजिए कि उसमें महान बनने की क्षमता पड़ी है। बीज पड़े हैं। अब उन्हें सिंचन मिलना चाहिये।

आत्म विकास में बाधक ऐसे पाप तत्व को सभी जीव तिलांजली देकर स्वगुणसाधना करें, यही शुभ कामना...!

(आगे और भी है...!)

अति सर्वत्र वर्जयन्ते

जगत में जीवात्मा के लिये हवा व पानी से बढ़कर और कोई जीवनोपयोगी पदार्थ नहीं परन्तु यदि सीमा का उल्लंघन होता है तो तूफान व बाढ़ का रुप धारण कर नाना विध अनर्थ का मोड़ ले सकता है। पानी जीवन का मूल आधार होने पर भी अतिवृष्टि से जहां बाढ़ का खातरा है वही अनावृष्टि से सूखा पड़ सकता है जिसे अकाल कहते है इसीलिए कहा जाता है कि ''अति सर्वत्र वर्जयेत'' अर्थात् किसी प्रकार का अतिक्रमण नहीं होना ही उपयुक्त है।

जगत की व्यवस्था संतुलन पर टिकी हुई है, संतुलन बनाये रखने के लिये मर्यादाएं व सीमाओं का उल्लंघन नहीं होना चाहिये, वैसे व्यावहारिक क्षेत्र में भी कहा जाता है-

अति का भला नहीं बोलना, अति का भला नहीं चुप।
अति का भला नहीं बरसना, अति की भली नहीं धूप।।

अतिश्योक्ति व अतियुक्ति से कोई प्रभावित नहीं होता क्योंकि इसमें वास्तविकता का अतिक्रमण हो जाता है। किसी भी वस्तु को अथवा बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहने मे अतिश्योक्ति हो जाती है जिसे कोई पसन्द नहीं करते। वर्तमान में प्रायः देखा जाता है कि अधिकतर किसी भी प्रसंग को लेकर प्रशंसा के पुल बांधना आम बात हो गई है जिसे चापलूसी भी कहा जाता है जिससे बचना चाहिये अन्यथा झूठी प्रशंसा से कोई लाभ नहीं बल्कि हानि की ही संभावना अधिक है। महापुरुषों का कहना है कि परनिन्दा व स्व प्रशंसा में लिप्त होने से जहां अहंकार का पोषण होता है, वहीं आत्म विकास में बाधक है, वैसे कहा जाता है- प्रशंसा से बढ़कर पुरस्कार नहीं, आश्वासन से बढ़कर औषधि नहीं परन्तु ओवर डोज का परिणाम अच्छा नहीं, इसे नहीं भूलना चाहिये।

आधुनिक युग की सात गैर-समझ

✲ टेकनो लोजी से प्रकृति को झुकाया जा सकेगा।

✲ मनुष्य को पशु ही गिनो, ताकि उसकी भौतिक आनन्द की अमर्यादित झांखना संतुष्ट करने में कोई बाधा उत्पन्न न हो।

✲ मनुष्य पशु है अतः यंत्र है। (अलबत्त जीवित यंत्र)

✲ मनुष्य में कामवृत्ति ही प्रमुख है, अतः उसे संतुष्ट करना ही मुख्य कार्य है- फ्रोइड़

✲ प्रकृति को दास बनाकर उसका चाहे जितना उपभोग किया जा सकता है।

✲ अब मनुष्य टेकनोलोजी की आड़-पैदाश है। अतः उसमें फिर तत्व-ज्ञान कैसा ?

✲ भगवान मर चुका है, जी सको उस तरह जीओ।

मेरे भाई महाराज

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

आपको कभी क्रोध आता है ? क्रोध नहीं आए हो ऐसा तो कैसे हो सकता है ? यदि आपको बिल्कुल भी क्रोध नहीं आता हो तो तो आप पत्थर है या तो आप वीतराग हैं। छद्मस्थ अवस्था में क्रोध आए ही नहीं ऐसा हो ही नहीं सकता। ''क्रोध से कोड़ पूर्व का चारित्र जीवन क्षणभर में भस्मीभूत हो जाता है। क्रोध एक क्षणिक पागलपन है। क्रोध जीवनरुपी नंदनवन को क्षणभर में रेगिस्तान बना देता है। क्रोध साक्षात् अग्नि हैं। क्रोध वैर का कारण हैं। क्रोध दुर्गति का मार्ग है। क्रोध से परलोक ही नहीं इहलोक भी बिगड़ जाता है। क्रोध से मनुष्य के खून में एक प्रकार का जहर पैदा होता है। ऐसा वैज्ञानिक भी कहते हैं। कभी-कभी तो अतिशय क्रोध करने से दिमाग की नस फट जाती है और ब्रेइन हेमरेज होकर मनुष्य मर जाता है। क्रोध से जो काम हो सकता है, उससे लाख गुना काम क्षमा से अधिक अच्छी तरह से हो सकता है। क्रोध से उस साधु को चण्डकौशिक सांप बनना पड़ा तो उन कुरुट और उत्कुरुट नामक साधुओं को क्रोध से सातवीं नरक में जाना पड़ा। क्रोध दूर करेंगे तो ही क्षमाधर्म को हृदय-मंदिर में प्रतिष्ठा करके आप पर्युषण की आराधना बहुत अच्छी तरह से कर सकेंगे। क्षमापना तो पर्युषण का प्राण है। क्रोध की आग जहां जल रही हो वहां क्षमा का अमृत आ नहीं सकता। यदि आप क्रोध को मन में ही इकट्ठा करके रखेंगे तो वह वैर बन जाएगा। फ्रीज में रहा हुआ पानी जैसे बरफ बन जाता है। वैसे दिमाग में संगृहीत क्रोध भी वैर बन जाता है। वैरी चित्त धर्म का आराधक बन नहीं सकता। यह और ऐसा ही बहुत सा उपदेश आपने सुना होगा ? फिर भी आपका मन बार-बार क्रोध से खलबला उठता है.... सही है न ?

अब मुझे आपको सिर्फ इतना ही पूछना है- आया हुआ क्रोध कितना समय टिका रहता है ? कितनेक का क्रोध बिजली के चमक जैसा चंचल होता है। मन-गगन में क्रोध की बिजली आई नहीं आई और वहीं अदृश्य !

सज्जन का क्रोध दुर्जन के स्नेह जैसा होता है। दुर्जन स्नेह करता ही नहीं। करें तो लंबा टिकता ही नहीं। लंबा चले तो भी अन्त में कोई अच्छा फल नहीं मिलता। सज्जन क्रोध करता नहीं, करें तो लंबा चलता नहीं। लंबा चले तो भी फलता तो नहीं ही है।

कितनेक का क्रोध दीये जैसा होता है। 4-6 घंटों के बाद तेल पूरा होते ही दीया बुझ जाता है। किसी का क्रोध भी 4-6 घंटों में शांत हो जाता है।

कितनेक का क्रोध अंगाठी जैसा होता है, 24 घंटे तक रहने वाला !

कितनेक का क्रोध कुम्हार के निभाड़े जैसा होता है, 10-15 दिनों तक रहनेवाला !

कितनेक का क्रोध कारखाने की भट्ठी जैसा होता है, कभी भी शांत नहीं होनेवाला !

कारखाने की भट्टी एक बार शुरु होने के बाद प्रायः कभी बंद नहीं होती। बंद हो जाये तो शुरु करते दो-तीन दिन लग जाते हैं।

कितनेक का क्रोध भी ऐसा होता है। एक बार गाँठ बांध ली और हो गया। वह गांठ जीवनभर रहती है। जीवनभर दिमाग की भट्टी में क्रोध की आग भभूकती ही रहती है। अनंतानुबंधीवाली आग।

अब आप देख लेना- आपका गुस्सा किस प्रकार का है ?

हां.... कुछ ऐसे होते हैं, जो सरोवर के जैसे शांत होते हैं, चाहे जितने अपराध में भी क्रोधित नहीं होते। सरोवर में जलती लकड़ी डालो तो क्या होगा ? लकड़े की आग बुझनेवाली ही है। कितनेक का मन भी ऐसा शांत होता है। क्षमा उनके स्वभाव में ताने-बाने की तरह ओतप्रोत हो जाती है।

मेरे भाई महाराज स्कंधक ऐसे ही शांत थे। मेरे पिता राजा जितशत्रु और माता धारिणीदेवी। मेरे भाई स्कंधक ने धर्मघोष मुनि की देशना सुनकर वैराग्य-वासित होकर दीक्षा ली और मैं शादी करके ससुराल में आई।

एक बार मैं झरोखे में बैठी थी और मैरी नजर नीचे गई- एक साधु निकल रहे थे। ध्यान से देखा तो मेरे ही भाई महाराज ! ओह ! कहां उस समय का उनका सुंदर शरीर ! और कहाँ अभी का सामने दिखाता सूकलकड़ी शरीर ? मानो चलता-फिरता अस्थिपिंजर ! मेरी आँखों में से अश्रुधारा निकल पड़ी : अरेरे...! मेरे भाई महाराज क्या वापरते होंगे ? कहां रहते होंगे ? कहां से भिक्षा लाते होंगे ? मैं यहां महल में ऐश करती हूं और मेरे भाई महाराज कैसी उग्र साधना कर रहे

हैं ? धन्य है ! धन्य हैं ! कितने ही समय तक मैं भाई महाराज को देखती रही और आँखों में से आँसु बहाती रही।

दो-चार मुर्हूत का समय बितने के बाद अचानक मेरी नजर आंगन में गई और उसी समय आकाश में से मांस का लौंदा पड़ा। ऊपर से जाती चील ने फेंका था। क्षणभर मैं स्तब्ध हो गई। पास में जाकर देखा तो वह मांस का लौंदा नहीं था लेकिन मांस-लोही से भरे हुए ओघा और मुहपत्ति थे। जैन मुनि के उपकरण ! वह भी खून से लथपथ ! क्यों बिगड़े होंगे ? उपर से किसने फेंके होगे ? किसके होंगे ये ? चील ने मांस समझकर उसे लिया होगा और बाद में फेंका लगता हैं। मैंने बराबर ध्यान से देखा तो पता चला- ये तो मेरे भाई महाराज के हैं। अचानक यह क्या हुआ ? अभी कुछ समय पहले तो देखे थे। क्या उन्होंने आत्महत्या की होगी ? किसी ने मार डाले होंगे ? क्यों मारे होंगे ? जैन साधु तो कभी किसी का कुछ बिगाड़ते नहीं। उनकी मुद्रा ही इतनी प्रशांत होती है कि देखने वालों का मन शांत हो जाता है। किसी को मारने का विचार भी नहीं आता। कौन वह कमनसीब होगा, जिसने मेरे भाई महाराज की, एक जैन मुनि की हत्या की ? क्या कारण होगा ? मेरे मन में विचारों की आंधी चलने लगी।

मैं स्पष्टीकरण करने के लिये राजा के पास दौड़कर गई- ''पतिदेव ! गजब हो गया। हमारे नगर में एक जैन साधु की हत्या हो गई हैं। मैं सहसा बोल उठी।

उस जैन साधु को तू पहचानती है ? राजा ने पूछा।

हाँ ! अच्छी तरह से।

वह तेरे क्या लगते हैं ?

वे मेरे सगे भाई होते हैं। सुबह ही मैंने उन्हें झरोखे में से देखे थे और मैं फूट-फूटकर रो पड़ी थी।

मेरी बात सुनते ही राजा के मुख पर पश्चाताप के भाव मंडराने लगे। वे एकदम मौन हो गये।

''क्यों.... मौन क्यों हो गये ? कुछ तो जवाब दो। तहकीकात तो करवाओ। आपके नगर में जैन साधु की भी सलामती न रहती हो तो दूसरों की तो बात ही क्या करनी ? इस विषय पर अभी की अभी तलाश होनी ही चाहिये।

क्या कहूं ? बोलने जैसा कुछ रहा ही नहीं। मैं किसकी तलाश करवाऊं? मैं ही अपराधी रहा हूं वहां....

क्या आप अपराधी ? कैसे ? कुछ समझ में नहीं आया। कुछ खोलकर कहो तो पता चले।

बोलने के लिये जीभ नहीं चलती है। गलती मेरी ही हुई है। मैंने जब तुझे जैन मुनि को देखकर रोते देखी तब मैं कुछ अलग ही विचार करने लगा। शंका की भूतनी ने मुझ पर कब्जा जमाया- अवश्य यह कोई रानी का पुराना यार लगता है। नहीं तो रानी की आँखों में आँसू क्यों ? परिस्थिति अधिक बिगड़े उससे पूर्व ही मुझे काम पूरा कर देना चाहिये। शत्रु, अग्नि, कर्ज और रोग इन सभी को बढ़ने से पूर्व ही नष्ट कर देना अच्छा ! इस कांटे को तत्काल उखाड़ देना चाहिये। और.... आगे-पीछे कुछ भी सोचे बिना सेवक को हुक्म कर दिया- जाओ.... अभी ही उस मुनि की चमड़ी उतार लो.... अरेरे.... मैंने कितनी भूल की ? कितनी जल्दबाजी की ? ''उतावला सो बहावरा, धीरा सो गंभीर।'' इस कहावत को हजार बार सुनने पर भी सही समय पर चूक गया। ''झटपट की धानी.... आधा तेल आधा पानी'' यह उक्ति कई बार सुनी किन्तु सही समय पर चूक गया। सही समय पर चूक जाये वह खोपड़ी ही किस काम की ? मैंने थोड़ा शांति से सोचा होता तो ? किसी की सलाह ली होती तो ? एक सामान्य मनुष्य की हत्या भी भयंकर है, किन्तु मैंने तो मुनि की हत्या कर डाली.... वह भी तेरे ही भाई महाराज की ! अरेरे.... भगवन् ! मुझे कहां स्थान मिलेगा ? सातवीं नरक नहीं.... मैं तो 14 वीं नरक के योग्य हूं।

इतना बोलते-बोलते राजा रो पड़े।

अब मैं राजा को, मेरे पति को क्या कहूं ? बहुत बोली। बहुत रोयी। बहुत विलाप किया.... परन्तु मेरे विलास से थोड़ी ही मेरे भाई महराज वापस आने वाले थे ?

मैंने मेरे भाई महाराज को मारनेवालों को बुलाये। मुझे यह जानना था कि अंतिम समय उन्होंने क्या कहा था ? उनकी कैसी अवस्था थी ? यह सब जानने की मेरी बहुत ही इच्छा थी।

उन हत्यारों ने आकर कहा- राणीमां ! आज तक राजा की आज्ञा से हमने कई लोगों को मारे हैं, परन्तु ऐसा आदमी हमारी जिंदगी में हमने कभी भी नहीं देखा। क्या अपार समता ! क्या अद्भूत सहनशीलता ! क्या धैर्य ! उनका मुख देखाते ही ऐसा हो जाता है कि ऐसे मुनि की हमें हत्या करनी है ? धिक्कार है अपनी नौकरी को ! जहां ऐसे अधमकार्य करने पड़ते हैं। हमने उनके पास जाकर कहा-महाराज ! सीधे खड़े रहो। आपकी चमड़ी हमें छिलनी है। हमारे राजा की ऐसी आज्ञा हैं। हमें ऐसा था कि अभी महाराज भड़क जायेंगे, शाप

देंगे, क्रोध से अंध हो जायेंगे, भागने का प्रयन्त करेंगे परन्तु हम ऐसे भागने नहीं देंगे। उनके शाप या गुस्से से हम नहीं डरेंगे। लेकिन यह तो हमारी धारणा से बिलकुल अलग ही निकले। उन्होंने तो हमारी बात स्वीकार ही ली। हम उन्हें जितना चाहते थे, हराना चाहते थे, झुकाना चाहते थे किन्तु आप, जो स्वयं हार जाता है उसे कैसे जीत सकते हैं ? जो स्वयं झुक जाता है उसे कैसे झुका सकते हैं ? जो स्वयं दुःख का स्वीकार कर लेता है उसे कैसे दुःखी बना सकते हैं ? असंभव ! दुःख का जन्म अस्वीकार की भावना में से पैदा होता है, यह महासत्य हमें पहलीबार समझ में आया, उन्होंने तो सामने से ही कहा- देखो, मेरे शरीर में मांस-खून खास है नहीं। मेरी चमड़ी लगभग हड्डी के साथ चिपक गई है, इसलिए तुम्हें बहुत तकलीफ पड़ेगी। तुम्हें जैसे ठीक लगे वैसे छिलना। कुछ तकलीफ पड़े तो बोल देना। मैं तुम्हें सुविधा रहेगी वैसे खड़ा रहूंगा। हमें तो यह शुरुआत में मात्र वाणी-विलास लगा- ऐसा कभी होता होगा ? कोई चमड़ी छिलता हो तब शांति से रह भी कैसे सकते हैं ? यह तो अभी बोलता है। हम चमड़ी चीरेंगे तब हाय माँ ! हाय बाप। पुकार उठेगा। किन्तु आश्चर्य ! हमने चमड़ी छिलने का शुरु किया वहां से लेकर ठेट अन्त तक 'ओह' तो नहीं किया, लेकिन शरीर भी बिलकुल नहीं हिलाया। न कोई अंग विकृत हुए। न चेहरे के कोई भाव बदलाये ! ऐसी ही समता अन्त तक रही। वे हमसे दूर-दूर.... किसी समाधि के कुंड में डूब गये हो ऐसा लगता था। परन्तु हम हत्यारों को तो समाधि का क्या पता चले ? हमें तो काम पूरा करना था। झटपट काम पूरा करके हम आ गये।

हत्यारों की यह बात सुनकर भाई महाराज की समाधि के लिये आदर हुआ, किन्तु राजा के कुकर्म और मेरी उपेक्षा के प्रति घोर तिरस्कार जगा- अरेरे ! हम कैसे कुकर्मी ? कौन जाने कौन से भव में हमारा निस्तार होगा ? एक तो कोई साधना नहीं, कोई अनुष्ठान नहीं और उसमें भी ऐसे महात्मा की हत्या ? कौन से भव में छुटकारा होगा ?

मुझे और मेरे पति को इतना पश्चाताप हुआ कि संसार से रस ही उड़ गया। हम दोनों ने संयम जीवन स्वीकार करने का निर्णय किया। शुभ कार्य में विलंब कैसा ? हमने तुरन्त ही संयम ले लिया। घोर तपश्चर्या करके, कर्मो को नष्ट करके हम केवलज्ञानी बने। केवलज्ञान में हमने देखा- अपार समता से स्कंधक मुनि उसी समय केवलज्ञानी बनकर मोक्ष में पधार गये थे। पूर्व के किसी जन्म में आरिये की अखाण्ड छाल निकालकर बहुत ही प्रशंसा की थी उसके कारण राजा बने हुए आरिए के जीवने स्कंधाक मुनि की चमड़ी निकलवायी ! किये कर्म सचमुच ही किसी को भी नहीं छोड़ते हैं। ज्ञानी इस कारण ही बाह्य निमित्तों को दोष न देकर कर्मो को.... इससे भी आगे बढ़कर कर्म-बंधक राग-द्वेष से मलिन हमारी आत्मा को ही दोष देते हैं। लकड़ी की मार लगते कुत्ता लकड़ी को काटता है, परन्तु सिंह लकड़ी मारनेवाले आदमी को पकड़ता है। ज्ञानी पुरुष सिंह वृत्तिवाले होते हैं। वे बाहर के किसी भी निमित्त पर क्रोधित नहीं होते। निमित्त तो लकड़ी है। लकड़ी के उपर क्या गुस्सा करना ! जो लकड़ी के ऊपर क्रोधित होते हैं वे कुत्ते जैसी तुच्छ बुद्धिवाले हैं। असली बात लकड़ी की नहीं, लकड़ी को पकड़नेवाले की है। अपराध किसी व्यक्ति या निमित्त का नहीं, लेकिन उस व्यक्ति को प्रेरित करनेवाले कर्म का है, कर्म करनेवाली आत्मा का है। गुस्सा करना है तो कर्म पर करना, रागद्वेष के भावों पर करना ! निमित्त पर किस लिए ? ऐसी सूझ मेरे भाई महाराज में थी और इससे ही ऐसे जानलेवा प्रसंग के समय वे समता रख सके और इतना ऊंचा आलंबन देकर हमें भी केवलज्ञान की भेंट देते गये। ऐसे थे : मेरे भाई महाराज !

समर्पण भाव..............

टूटे वो पाँव जिसको तेरी न तलाश हो !
फूटे वो आँख जिसको न हो जुस्तजू तेरी !
वह घर हो बेचिराग जहां तेरी जू न हो !
वह दिल हो दाग जिसमें न हो आरजू तेरी...

वस्तुपाल की अंतिम प्रार्थना

शास्त्र का अभ्यास !
प्रभु-चरण में वंदना !
सज्जनों की संगति !
संतों के गुणानुवाद !
निंदा में मौन !
प्रिय हित-कर वचन !
आत्म-तव में रमणता !
हे प्रभु ! मुझे भवोभव मिले !

आत्मा का शुद्धिकरण ही सम्यक तप है

✽ प.पू.साध्वी डॉ. सुभाषाजी म.

तप क्या है ? तप किसे कहते हैं ? साधारण भाषा में तप को तपस्या कहा जाता है। तप का मतलब महज भूखा रहना नहीं है। जब ज्ञानपूर्वक तप किया जाता है, तब वह हकीकत में तप कहलाता है। यदि किसी बीमारी के कारण डॉक्टर या वैद्य ने भूखा रहना कह दिया, घर के झगड़े या तनाव में भोजन नहीं किया अथवा अन्य किसी कारण से रोटी नहीं खाई और भूखा रहना पड़ गया, तब वह तप नहीं है। यदि धन, बेटा, नौकरी, पद, निरोग होने या किसी का अहित करने अथवा संसार की अन्य किसी भी भौतिक इच्छा व कामना को लेकर तप किया गया तो वह सम्यक तप नहीं है। शरीर पर ध्यान रखकर किया जाने वाला कभी तप नहीं हो सकता बल्कि वह महज ''डाईटिंग'' है। जो ज्ञान व विवेक के साथ सिर्फ अपनी आत्मा के शुद्धिकरण के ध्येय को लेकर तप करता है, वह सम्यक तप है। तप का मतलब अपनी आत्मा पर भव-भव से चिपके अपने अशुभ कर्मो को क्षय करना है। ऐसी पवित्र भावना के साथ भले ही फिर व्यक्ति पूरे दिन का उपवास नहीं करता हो वरन छोटी सी भी यदि कोई तपस्या करता है तो उस सम्यक तप से आत्मा को असीम शांति अनुभव होगी। ऐसे तप से ही सच्चा आनंद प्राप्त होता है और इसे गरीब-अमीर सब कर सकते है। करना ही चाहिये क्यों कि मनुष्य भव में तप किया जा सकता है। तप से ही आत्मा निर्मल होकर एक दिन संसार चक्र से मुक्त भी हो सकती है।

उपरोक्त मंगल उद्‌गार जैन साध्वी श्री डॉ. सुभाषजी महाराज ने धर्मसभा में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि यदि कोई यह समझ कर तप करता है कि मेरा नाम हो, मेरा मान-सम्मान बढ़े, वह तप नहीं है। तप करने के बाद भी यदि कोई अंदर से मन में किसी का अहित सोचा जा रहा है, गुस्सा, क्रोध, राग-द्वेष किया जा रहा है, घमण्ड और अहंकार भाव बने हुए हैं, छल-कपट बरकरार है, टीवी देख रहे है, बड़ों की उपेक्षा व अनादर की प्रवृत्ति बनी हुई है, फिर भूखे रहकर भले ही आप महिने-महिनों तक की तपस्या कर ले, उसका कोई महत्व नहीं है। प्रभु महावीर के संघ में ऐसे भी साधक (साधु) थे जिन्होंने 2 से 6 माह तक भोजन नहीं किया और ऐसे भी थे जिन्होंने एक दिन का उपवास तक नहीं किया लेकिन वे भी निर्वाण को प्राप्त हुए। निर्वाण (मोक्ष) का संबंध आत्मा से है और भूख का संबंध शरीर से है। भोजन की जरुरत शरीर को है, आत्मा को नहीं। आत्मा का संबंध भोजन छोड़ने या खाने से नहीं है। अगर छोड़ने के बाद भी कषाय नहीं छूट पाते और भीतर की समाधी ना आ पाए फिर वह तप निरर्थक है। जब ज्ञानपूर्वक तप किया जाता है, तब उससे कर्मो का क्षय होता है। उसे ही तीर्थकरों ने सम्यक तप कहा है। साध्वीजी ने कहा कि तपस्या का सबसे बड़ा लाभ शांति है। शांति बाहर नहीं मिलती वरन वह अंदर की वस्तु है जिसे अनुभव किया जाता है। तप के लिये शरीर का भी सहयोग बहुत जरुरी है। प्रश्न उठता है कि जब आत्मा का संबंध भूख से नहीं है फिर शरीर को भूखा रखकर कष्ट क्यों दिया जाए ? हमें यहां तप की नई व्याख्या समझनी पड़ेगी। तप का मतलब तपना-तपाना है। शरीर को नहीं, आत्मा को तपाना है। आत्मा कैसे तपती है ? जिस तरह हमें यदि दूध को दही बनाना है तो उसे किसी पतीले (बर्तन) में रखकर अग्नि में गर्म करना पड़ेगा। दही को यदि घी बनाना है तो फिर उस पतीले की जरुरत पड़ेगी। घी से मक्खन बनाना है तो बिना पतीले के वह भी संभव नहीं है। इसी तरह आत्मा को तपाने के लिए इस शरीर रुपी पतीले की जरुरत है। जैसे घी से मक्खन बनने के बाद उस पतीले का कोई महत्व नहीं रह पाता, वह अपने आप फिर ठण्डा हो जाता है, उसी तरह आत्मा की शुद्धि के लिये शरीर को तपाना जरुरी होता है। जब व्यक्ति का लक्ष्य मक्खन और साधक का लक्ष्य आत्मा से होता है फिर वे पतीले व शरीर की परवाह नहीं करते। शरीर का गुलाम कभी अपना लक्ष्य हांसिल नहीं कर सकता। जो शरीर को गुलाम बनाकर उसे आत्मा की शुद्धि में उपयोगी बनाता है, फिर एक दिन वह शरीर भी नाम कमा लेता है।

साध्वीजी ने कहा कि अपने पुरातन कर्मो के अनुरुप हमारे अशुभ कर्म जो आत्मा से चिपके हुए हैं, उन्हें हटाने में तप का बहुत अधिक महत्व है। सभी धर्म-सम्प्रदायों में तपस्या का इसलिये महत्व बताया गया है। जब साधक का लक्ष्य आत्मा की शुद्धि का होता है, फिर उसे शरीर का कष्ट अनुभव नहीं होता। 12 प्रकार के तप महापुरुषों ने प्रतिपादित किये हैं। अपनी आत्मा के द्वारा जो गंदगी हमने इकट्‌ठी कर ली है उसे हमें ही दूर करनी पड़ेगी। ध्यान रखना-आत्मा को गंदगी से स्वच्छ बनाने के लिये ही तपस्या की जाती है। जब इच्छाओं का निरोध (निषेध) करके तपस्या की जाती है, तब वह सच्चा तपस्वी कहलाता है। सम्यक ज्ञानी ही फिर आत्मा से परमात्मा बनने की राह प्राप्त कर लेता है। आत्मा को शुद्ध, निर्मल, पवित्र, पावन यदि बनाना है तो सम्यक तप के द्वारा आगे बढ़े, एक दिन मंजिल जरुर मिलेगी। केवल व्रत-उपवास करने वाला ही तपस्वी नहीं होता वरन जो व्यक्ति मांस, शराब, अंडे, शिकार, वैश्यावृत्ति, चोरी, जुआं आदि बुराईयों का त्यागी है, वह भी तपस्वी है। अपने जीवन में झांकना कि कहीं ये दुर्व्यसन मेरे जीवन में तो नहीं है ? अगर है तो इन्हें छोड़ना भी तपस्या है।

भगवान श्रीमहावीर का जीवन

सम्यक्त्व धर्म प्राप्ति के बाद भगवान महावीर देव को कुल 27 भव हुए थे। उसमें से प्रभु की आत्मा 14 बार मनुष्य भव, 10 बार देवभव, 2 बार नरकभव और 1 बार तिर्यंचभव में गई थी।

प्रभु पूर्व के तीसरे भव में नंदन नाम के राजकुमार थे, तब उनका 25 लाख वर्ष का आयुष्य था। आखिरी एक लाख वर्ष बाकी रहने पर प्रभु ने दीक्षा ली थी।

'सवी जीव करू शासन रसी' की भावना के साथे प्रभु ने कुल 11,80,645 मासक्षमण की तपस्या पूर्वक बीस स्थानक पद की आराधना की थी।

उसके बाद प्रभु की आत्मा समाधिपूर्वक स्वर्गवास पाकर दसवां प्राणत नाम के देवलोक में पधारे थे। वहां पर 20 सागरोपम देवायु को उदासीन भाव से भुगत कर प्रभु आषाढ़ सुदी-6 के दिन देवलोक से च्यवन पाकर मानव लोक में माता के गर्भ में पधारे थे, तब प्रभु तीन ज्ञान के स्वामी थे। 82 दिवस देवानंदा ब्राह्मणी के कुक्षी में और बाकी के दिन सिद्धार्थ राजा की महारानी त्रिशला की कुक्षी में पूर्ण करके नवमास और साढ़े सात दिन पसार होने के बाद ग्रहो जब उच्छ स्थिति में थे, तब उत्तरा फाल्गुन नक्षत्र में चन्द्रमा के योग के समय में मध्यरात्रि में प्रभु ने जन्म लिया।

प्रभु के जन्म समय में धरती पर से उल्कापात, दिग्दाह, अकाल धरतीकंप और मारीमरकी वगैरह सब रोगों का नाश हुआ। चौदह राजलोक में सर्वत्र उजाला प्रसारित हुआ। सर्व जीव को क्षण भर सुख का अनुभव हुआ। प्रभु का जन्माभिषेक महोत्सव 56 दिक्ककुमारियाँ, 64 इन्द्रों और असंख्य देव-देवियों ने मेरूशिखर पर मनाया था। यौवन पाकर माता-पिता के अतिशय आग्रह के कारण प्रभु ने समरवीर राजा की सुपुत्री यशोदा नाम की राजकन्या के साथ लग्न किया। माता-पिता के स्वर्गवास बाद 28 वर्ष की यौवनवय में प्रभु दीक्षा लेने तैयार हुए, लेकिन बड़े भाई राजा नंदिवर्धन के आग्रह पर वे दो वर्ष से अधिक संसार में रूक गये। प्रभु की दीक्षा का समय हुआ तब नव लोकांतिक देवों ने आकर प्रभु को दीक्षा की विनंती की। जय जय नंदा! जय जय भद्दा! जय जय खत्तिय वर वसहा! हे परमा तारक प्रभु! आप जय पामो, जय पामो। हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ ऋषभ समान प्रभु! आप जय पामो, जय पामो। हे तीन लोक के नाथ! आप बोध पाइए। आप संयम धर्म को स्वीकारो! कर्म क्षय करके केवलज्ञान को प्राप्त करो और सकल जगत के जीवों का हित करने के लिये धर्म तीर्थ की स्थापना करो! उसके बाद प्रभु ने एक वर्ष तक वर्षीदान दिया था। कार्तिक वदी दसम को चन्द्रप्रभा नाम की पालखी में बैठाकर भव्य वरघोड़ा के साथ दीक्षा लेने के लिये प्रभु ज्ञातखंड उद्यान में पधारे थे। उद्यान में आने के बाद प्रभु ने खुद ही सब अलंकारों को उतार दिया, पंचमुष्टी लोच किया। सब पाप कर्मों को त्याग कर नमो सिद्धाणं पद बोलकर प्रभु ने दीक्षा स्वीकार की उस वक्त प्रभु का चौथा मनःपर्यवज्ञान भी उत्पन्न हुआ। दीक्षा लेने के बाद प्रभु ने घोर उपसर्ग और परिषहों को सहन किये थे। साड़े बारह वर्ष में प्रभु ने निंद्रा नहीं ली। हर वक्त मौन रहे और उसमें कभी भी पालकी मार कर बैठे नहीं थे। साढ़े बारह वर्ष में प्रभु ने कुल 4,166 उपवास का तप किया था। जबकि तप के पारणे के दिन मात्र 348 थे। इस प्रकार साढ़े बारह वर्ष बीत जाने के बाद वैशाख सुद-दशम के दिन बिहार देश में जांभिय गांव के पास ऋजुबालिका नदी के किनारे श्याम का नाम के किसान के खेत में भग्न यक्ष मंदिर में पीछे के भाग में शाल वृक्ष के नीचे गोदोहिका आसन में प्रभु को केवलज्ञान और केवलदर्शन उत्पन्न हुआ था।

सुनो और गुनो....

साहम्मियम्मि संपत्ते,
घरङ्गणे जस्स होइ न हु ने हो
जिणसासणे भणियमिणं,समत्ते तस्स संदेहो ॥

घर-आँगन में साधर्मी को आया देखकर हृदय में स्नेह नहीं उमड़ा तो जिनशासन कहता है कि समकित अवस्था में संदेह है तब तो।

अतिथि को देखकर नेह ना आया तो अहंकार को पहचानना। कबीर कहते हैं कि-

साधु आया न हसिया, गया न दीधा रोय।
कबीरा ऐसे जीव की, मुक्ति कबहुँ न होय ॥

भगवान श्री महावीर स्वामीजी की उपादेयता

पौराणिक और ऐतिहासिक महान आत्म विभूतियों में परमात्मा चरम तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामीजी की उपादेयता को आज के हिंसात्मक युग में आँकना अब अपरिहार्य लगता है। इसका प्रबल कारण प्रभु वीर का जीवन दर्शन। यदि हम, हमारे जीवन से भोग और विलासिता के साथ परिगृह की संस्कृति को दूर कर सके,अंध विश्वासों को छोड़कर सत्यानिष्ठामय अहिंसा की साधना कर अपने जीवन का अंग बना ले तो मानव मात्र का जीवन सुखमय हो सकता है और भगवान श्री महावीर स्वामीजी उस समय हमारे सबसे निकट, पास होंगे। आप हम सब जानते हैं कि भगवान का जीवन विरासत में मिले भोग, आनंद, अपार संपदा के त्याग का प्रतीक है, भगवान का जीवन दर्शन अहिंसा की सर्वोच्चतम पराकाष्ठा संयम, विवेक का साधना का अनुपम उदाहरण है।

भारत देश के विविध सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों की गरिमा को बनाये रखते हुए उन्हें मानवमात्र के कल्याण के लिये सर्वथा उपयोगी बनाने में भगवान श्री महावीर के दर्शन की प्रासंगिता से इंकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि वर्तमान युग प्रभुवीर के दार्शनिक मूल्य और जीवन आचरण की उपादेयता आज सर्वाधिक है। जब हम भगवान श्री महावीर स्वामीजी के जीवन दर्शन पर चिंतन और मनन करते हैं तो हमारे सामने बहुत ही गंभीर और विचारणीय बिन्दु सामने आते हैं कि क्या हिंसा, आतंकवाद और सांप्रदायिक अंध विश्वास के महल में बैठकर हम मानव मूल्यों का सरंक्षण कर पायेंगे? क्या ऐसे वातावरण में पनपता लोकतंत्र सबके लिये कल्याणकारी हो सकता है। गले तक भ्रष्टाचार में डूबे देश की प्रतिष्ठा को दलगत राजनीति, पारिवारिक भाई-भतीजावाद के दलदल में उलझा लोकतंत्र सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा को बचा पायेगा? अपहरण-परिग्रह से अपनी जीविका को पुष्ट एवं विकसित करने वाला प्रशासन तंत्र मानव हित के निर्णय ले पायेगा? क्या हम अपने आप को सर्वोशक्तिमान, अधिकारों का अधिष्ठाता-अधिकारी और चाटुकारिता का अभिलाषी बनकर दीनहीन प्रजा का भला कर सकते है? भोग विलास और लोभ की सगान्धता तथा परिग्रह की पराकाष्ठता की कालिमा से हमें बचा सकता है? इन प्रश्नों के कहीं न मिलने वाले आसान उत्तर हमें भगवान श्री महावीर के गणराज में ढुढना चाहिये जहां प्रभु ने गुणराज की स्थापना की थी, भारतीय लोकतंत्र की नींव को मजबूत करने का काम परमात्मा श्री महावीर स्वामीजी के दर्शन ने बहुत पहले कर दिया था, अगर हम उस पर कायम रहते तो न तो आज नारी की प्रतिष्ठा कलंकित होती और नहीं बेटी बचाओ जैसे अभियानों की जरूरत होती। भारत के गौरव और अभिमान को बढ़ाने में भारत का सांस्कृतिक वैभव, विविध जाति धर्म की अनेकाविध योग्यताओं का समावेश, सामाजिक, सौहार्दता, एक दूसरे के प्रति करूणा का भाव धार्मिक क्रिया और अनुष्ठानों का आस्था के साथ पालन और समर्पण है, भारत के इस सांस्कृतिक और दार्शनिक वैभव की शक्ति श्री महावीर के परिप्रेक्ष्य में सदैव विकसित होती रही है, यह हम भारतीयों को महिमा मंड़ित करने में अपनी सार्थकता को सिद्ध करती है, भारत का आध्यात्मिक गौरव श्री महावीर के जीवन दर्शन से प्रभावित हुआ है। श्रमण संस्कृति के महान उन्नायक भगवान श्री महावीर स्वामीजी ने अपने जीवन व्यवहार से सत्य अहिंसा की पुर्नस्थापना करने में गहरा योगदान दिया, उन्होंने यह प्रमाणित कर दिया है कि निश्चल और स्वाधीन अध्यात्म आत्म साधना के द्वारा कोई भी परमात्मा बनने का पुरूषार्थ कर सकता है। आत्मा की परम दशा में पहुंच जाना है परमात्मा होना है, परमात्मा श्री महावीर स्वामीजी ने अपने जीव का पुनरागमन से मुक्त होने के पूर्व जिन सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना की उन्हें ही मानवमात्र के लिये पूर्ण सुखी होने के लिये अपरिहार्य बताया है।

भगवान श्री महावीर स्वामीजी की अहिंसा जीवन दायिनी संजीवनी है, एक शब्द में भगवान ने सबके जीने के अधिकार का मार्गदर्शन दे दिया है, यही नहीं उन्होंने सत्य को अजय और अक्षय बताते हुए अंधविश्वास और कोरी कल्पना को भी जीवन के लिये दुःख का कारण बतलाया है, उन्होंने अपरिग्रह के सिद्धांत के माध्यम से यह इंगित कर दिया कि धर्मप्रिय पुरूषार्थी व्यक्ति भोग विलास और वैभव सम्पन्नता का परित्याग कर सुखी हो सकता है। भव भवान्तरों में भी कर्मफल मिलता ही है। मोह राग, द्वेष वशीभूत होकर हम किसी की भी अभिमानना या अपमान न करें, बल्कि समभाव पूर्ण जीवन जीए। संसार के प्राणीमात्र पर मैत्रीभाव रखें यही क्षमा की सीढ़ी है। विश्व बंधुत्व या सर्वोदय को तभी साकार किया जा सकता है, जब हमारे मन में राग, द्वेषजन्य पक्षपात करने की अवधारणाएं नहीं होगी, भगवान श्री महावीर और उनके द्वारा उपदेशित तत्वज्ञान को अगर आज का मानव अपने जीवन में अंगीकार कर ले तो वह नैतिक होकर पापाचार से बच सकता है और सद्कर्मों से सन्मार्गोन्मुखी बन सकता है। भगवान श्री महावीर स्वामीजी के तत्वज्ञान में यह तो कहा ही गया है कि अच्छे बुरे कर्मों का फल उसे अवश्य ही मिलता है तो जीवन में सचेत हो जाये और इतना तो अवश्य करें की जितने बुरे है उससे अधिक बुरे न बने यही सुधरने की मजबूत पहली सीढ़ी होगी।

भावित ज्ञान

कौन-सा ज्ञान अध्यात्म का कारण बनता है ? अध्यात्मरुप बनता है ? अक्षर से अध्ययन करना अलग बात है, उसका अर्थ समझना अलग बात है और उसे भावित करना तो बिलकुल ही अलग बात है। सिर्फ अक्षरों का अध्ययन तोता-पंडित बना सकता है, उसमें सूत्रों के रहस्य नहीं समझे जातें। ऐसे तोते पंडित सभा इकट्ठी कर सकते हैं, लोक-रंजन कर सकते हैं, लेकिन स्वयं रहस्य नहीं समझ सकतें। एक तोता किसी पंडित के पास पहुंच गया और कहा- पंडित राज ! मुझे ज्ञान दो। ऐसा ज्ञान दो जिसमें मेरा कल्याण हो जाय। पंडितजी ने सोचकर उसके योग्य ज्ञान दिया : शिकारी आयेगा, जाल बिछायेगा, दानें डालेगा, हमें पकड़ेगा। सावधान ! सावधान ! सावधान ! इतना ज्ञान अगर तुझे हो गया तो तू कभी दुःखी नहीं होगा। तेरा कल्याण हो जाएगा।

तोता वैसे तो बुद्धिमान था। उसने तो थोड़ी देर में पाठ पक्का कर लिया। फिर स्वदेश में लौटकर बड़ी-बड़ी सभाएं करने लगा। हजारों तोते उसकी सभा में आने लगे। सब पोपट ज्ञानी बन गये और उस पाठ का रटन करने लगे : शिकारी आयेगा, जाल बिछायेगा, दानें डालेगा, हमें पकड़ेगा। सावधान ! सावधान ! सावधान ! सब को लगा- हम ज्ञानी हो गये ।एक दिन शिकारी की जाल में दाने देखकर सब तोते फंसे। शिकारी उन्हें पकड़कर ले जा रहा था उस वक्त भी उनका पाठ पक्का था और सब बोल रहे थे- शिकारी आयेगा.... जाल बिछायेगा....इसका नाम तोता पंडित। मात्र अक्षरों का ज्ञान तोता-पंडित बनाता है। अर्थ की समझ 'पंडित' बनाती है। उसका चिंतन 'चिंतक' बनाता है। उसे भावित बनाने से आदमी 'आध्यात्मिक' बनता है। सूत्र से अर्थ सूक्ष्म है। अर्थ से चिंतन सूक्ष्म है। चिंतन से भावना सूक्ष्म है। सूत्रादि उत्तरोत्तर उत्कृष्ट है। हमारा ज्ञान जब भावना-कोटि में आता है, तब थोड़ा ज्ञान भी कल्याणकर बन जाता है। 'मा रुष.... मा तुष' इतने ही पदों से माषतुष मुनि केवलज्ञानी बने थे। 'उपशम, विवेक, संवर' इतने ही पदों से डाकू चिलातीपुत्र सद्गतिगामी बना था, उसका कारण भावना ज्ञान था। ऐसा ज्ञान थोड़ा भी मिल जाय तो काम बन जाय। अमृत की एक अंजलि ही काफी है। ऐसे ज्ञान के लिये पू.उपा. भ. ने कहा है : ''एक मोक्षपद का ही ज्ञान प्राप्त कर लो, उसको ही भावित बना लो। यही उत्कृष्ट ज्ञान है। फिर ज्यादा ज्ञान नहीं होगा तो भी चलेगा।''

गुण और दोष

रास्ते पर बबुल के वृक्ष को देखकर बच्चे ने पूछा- पप्पा ! ये बबुल किसने बोये होंगे ?

किसी ने नहीं।

तो कैसे उगे ?

ये बिना बोये ही उग जाते हैं।

और ये आम के वृक्ष भी ऐसे ही उग जाते हैं ?

नहीं बेटा ! इसके लिये तो प्रयत्न करना पड़ता है। उगाने पर ही उगते हैं।

यह संवाद ध्यान से पढ़ेंगे और विचार करेंगे तो बहुत रहस्य ज्ञात होंगे।

दोष बबुल है।

गुण आम है।

दोष बिना प्रयत्न आ जाते हैं।

गुण के लिये प्रयत्न करना पड़ता है।

आम के वृक्ष उगने के बाद भी उनकी रक्षा करनी पड़ती है। गुण आने के बाद भी सावधानी रखनी पड़ती है।

बबुल जैसे दोषों के लिए ऐसी कोई जरुरत नहीं, फिर भी वे दिन-ब-दिन बढ़ते रहते हैं।

क्रोध-मान आदि के लिए कोई स्कूल नहीं। चोरी कैसे करना ? जेब कैसे काटना ? इसके लिये किसी प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं है फिर भी लोग सीख जाते हैं। क्रोध कैसे करना ? इन सबके लिए कोई अपने बच्चे को शिक्षण देते नहीं, फिर भी छोटा बच्चा सीख जाता है जबकि गुणों को तो सीखाने पर भी नहीं सिखाता। ऐसा क्यों ? दोषों का अभ्यास अनादिकाल से है। गुणों का अभ्यास लगभग नहीं है इसीलिए ही दोष बिना सीखे ही आ जाते हैं। किन्तु जगत में गुणों की कीमत है, दोषों की नहीं। आम के भाव पूछे जाते है बबूल को कौन पूछता है ? बबुल अपने पास आनेवालों को कांटे देता है।

दोषवान व्यक्ति दूसरों को दुःख देता है, गुणवान सुख देता है। हमें क्या बनना है। गुणी या दोषी ? आम या बबुल ?

श्री महावीर आत्म विज्ञान के सफल अध्येता

✻ डॉ.सुभाष जैन

विश्वभर में फैली आर्यावर्त की सभ्यता के क्षितिज पर अनेक धर्म संस्कृतियां की अवधारणा का जन्म हुआ और इन्होंने अपने प्रभाव से मानवीय चेतना को प्रभावित किया है। इनमें जैन धर्म परम्परा अनादिकालिन होने के साथ वर्तमान में भी अपना अक्षुण्य प्रभाव रखती है। वर्तमान युग को अपनी अहिंसात्मक विचारधारा उदार और उदात्त स्वरूप में हम परमात्मा श्री महावीर स्वामीजी को पाते हैं, परमात्मा श्रीवीर मानवीय सभ्यता और संस्कृति की विशाल परम्परा के क्षितिज पर अद्भूत, अद्वितीय और ज्योतिर्धर महापुरूष है भगवान श्रीमहावीर स्वामीजी की संज्ञा-संवेदना जनकेन्द्रित जनवादी, सम्प्रदाय से बहुत ऊपर, उदार और वात्सल्यमय विचारों की जननी है। परमात्मा ने समन्वय-सहिष्णुता परस्पर प्रीति-सहयोग की अहिंसात्मक जनसंस्कृति के अभ्युदय के एक ऐसे मार्ग को प्रशस्त किया है जो देशकाल से परे हमेशा चैतन्य, प्राणवंत जीवंत रहेगा हमेशा ही।

परमात्मा श्री महावीर एक अनुपम, महान-महर्षि है जो आज भी निर्बाध गति से प्रवाहमान है। वीर प्रभु का सम्पूर्ण जीवन समता, स्वतंत्रता अहिंसा के स्पंदनों को अपने में समाहित किये हुए, वह एक आचार शास्त्र के रूप में हमारे सामने आता है जो वात्सल्य करूणा और प्रेम की मजबूत और विशाल इमारत के रूप में हमारे सामने जीवन शास्त्र बनकर आती है, जो एक साधारण मनुष्य को लोकार्पित है। परमात्मा भगवान श्री महावीर स्वामीजी आज चाहे बाह्य जगत में हमारे पास नहीं है परन्तु भाव जगत में तो प्रभु करोड़ों लोगों के हृदय में निवास कर रहे है। आस्थाओं के हृदय पटल पर प्रभु हमारे बीच ही है। हमारी संवेदनशीलता कितनी परिपक्व है कि हम पाषाण में भी परमात्मा के दर्शन कर लेते हैं। परमात्मा ने पावन विचारों के द्वारा अपने को पवित्र कर लिया था इसी कारण बचपन में भी प्रभु में बचपना नहीं था। युवा अवस्था में भी प्रभु यौवनाओं से दूर थे और भरपूर जवानी में प्रभु के संयम मार्ग को ग्रहण कर लिया था।

परमात्मा स्वयं तो बंधनमुक्त थे किंतु प्रभु ने हजारों लोगों को बंधन मुक्त किया था। नारी स्वतंत्रता का उद्घोष करने वाले शायद यह बात भूल जाते है कि प्रभु ने चंदनबाला को मुक्त कर 2600 वर्ष पूर्व ही नारी मुक्ति का संदेश दे दिया था। परमात्मा जिसको बंधनों से मुक्त करें उसका कितना परम सौभाग्य होगा हम विचार करें। इस बात से हमें अंदाज हो जाना चाहिये कि परमात्मा ने जीने दो और जीयो का संदेश दिया होगा न कि जीये और जीने दो का। परमात्मा का चिंतन और संदेश दोनों ही उस लोकभाषा में था जो आम आदमी को तुरन्त समझ में आ जाये। श्री महावीर प्रभु ने पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति की स्वतंत्रता संप्राप्ति को अपना अभीष्य बनाया, प्रभु वीर हमारे सामने एक अभूतपूर्व प्रकाश स्तम्भ के रूप में अविर्भूत होते हैं जिसके उजाले में सबको जीवन प्रकाश मिलता है। श्री महावीर ने अपनी देशना पर इस बात पर बल दिया है कि- तन का संवर्तन और मन का संयमन बहुत आवश्यक है, श्री वर्धमान स्वामी का चिंतन बहुत ही स्पष्ट है कि- विश्व में दो सत्ता ही कार्यरत है, एक जड़ और एक चेतन ये ही सृष्टि के दो मौलिक तत्व है। जीव-चेतन, अपनी मन-वचन-कर्म की क्रियाओं के द्वारा अजीव जड़ में जकड़ जाता है यहीं से कर्मबंध आरंभ होते है, हाँ, यह बात भी सत्य है कि तप-साधना के द्वारा कर्मों का क्षय किया जा सकता है, कर्म क्षय के उपरांत जीव मोक्ष तक की यात्रा कर सकता है। विवेक और संयम की बुनियाद पर टिका परमात्मा श्रीवीर का चिंतन प्राणी की स्वतंत्रता के लिये एक अद्वितीय, अद्भूत प्रयोग है, जहां राग-द्वेष, भेदभाव वैषम्य समाप्त हो जाता है।

परमात्मा श्री महावीर स्वामीजी का सम्पूर्ण जीवन दर्शन प्राणीमात्र के सह-अस्तित्व, जीने के अधिकार बोध, आत्म स्वतंत्रता और करूणा-वात्सल्य के असीम विस्तार का संदेश है जिसके कण-कण में संवेदनशीलता का सर्वोदय सम्पूर्ण विश्व को अहिंसा का अमर कालजयी आधार प्रदान कर रही है। प्रभु वीर की जनहितकारी चारित्र क्रांति स्वयं पर, मैं की शोध पर आधारित होने के साथ देह और विदेह (आत्मा) के अंतर को समझने की शक्ति प्रदान करती है। भगवान श्री महावीर हमारे सामने समता के चितरे बनकर आते है, उनके लिये सभी बराबर है न कोई छोटा है न कोई बड़ा। परमात्मा के इस नव चिंतन के उन्मेष में एक नई दृष्टि जनमानस को मिली जिसने सहअस्तित्व, सामजंस्य के साथ सबको जीने का मार्ग प्रशस्त किया, सम्मान, अधिकार और संसाधन की इस धारणा ने समाज में क्रांति ला दी यही नहीं भगवान श्री महावीर नारी स्वतंत्रता के प्रथम उद्घोषक के साथ आत्मशिल्पी के रूप में भी हमारे सामने आते है। सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चरित्र की साधना के द्वारा मानव मात्र आत्मा के कर्म बंधन दूर कर वीतराग स्वरूप को पा सकते हैं, श्री महावीर आत्म विज्ञान के सफल अध्येता होने के साथ इस युग सर्वाधिक सफल महान महार्षि है। आईये! कुछ सीख श्री महावीर से लेकर हम भी जीवन सफलता के मार्ग पर आगे बढ़े यही सम्यर्थता।

प्रभु श्रीमहावीर के स्थूल 27 भव

प्रथम भवः- नयसार नामक राजा का कर्मचारी पश्चिम महाविदेह में उत्पन्न हुआ। जंगल में काष्ट लेने गये और भोजन के समय मार्ग भुले हुए मुनिवरों का योग मिलने पर सुपात्र दान का लाभ प्राप्त किया बाद में मुनिराज को सही मार्ग बताने पर मुनि भगवंतों ने भी भावमार्ग स्वरुप मोक्ष मार्ग दिखलाया और नमस्कार महामंत्र सिखाया। वहां नयसार ने समकित प्राप्त किया।

दूसरा भवः- शुभ ध्यान में मरकर सौधर्म देवलोक में एक पल्योपम आयुष्यवाले देव हुए।

तीसरा भवः- तीसरे भव में भरत चक्रवर्ती के पुत्र मरीची हुए। श्री ऋषभदेव परमात्मा के पास दीक्षा लेकर संयम पालन दुष्कर लगने से त्रिदंडी वेश धारण किया। वहां कुलमद करने से नीच गौत्र का बंध किया और उत्सूत्र भाषण करने से एक कोड़ा-कोड़ी सागरोपम काल प्रमाण संसारवृद्धि की।

चौथा भवः- वहां चौरासी लाख पूर्व का आयुष्य पूर्ण करके पाँचवें ब्रह्मदेवलोक में दश सागरोपम आयुष्यवाले देव में उत्पन्न हुए।

पांचवां भवः- देवायु पूर्ण करके कोल्लाग नामक गाँव में अस्सी लाख पूर्व आयुवाले कौशिक नामक ब्राह्मण हुए। त्रिदंडी वेश धारण करके आयु पूर्ण होने पर बहुत काल संसार में छोटे-छोटे भव किये।

छट्ठा भवः- छट्ठे भव में स्थूणा नगरी में 72 लाख पूर्व आयुवाला पुष्यमित्र नामक ब्राह्मण हुए और उत्तरावस्था में त्रिदंडी संन्यासी हुए।

सातवां भवः- वहां से काल करके सौधर्म देवलोक में मध्यम स्थितिवाले देव हुए।

आठवां भवः- देवायु पूर्ण करके चैत्य नामक गाँव में चौसठ लाख पूर्व आयुवाले अग्निद्योत नामक ब्राह्मण हुए और उत्तरावस्था में त्रिदंडी संन्यासी हुए।

नवमां भवः- संन्यास अवस्था में काल करके ईशान देवलोक में मध्यम आयुष्यवाले देव हुए।

दसवां भवः- देवलोक से च्यवकर मंदिर नाम के सन्निवेश में छप्पन लाख पूर्व आयुष्यवाले अग्निभूति नामक ब्राह्मण हुए और त्रिदंडी संन्यासी हुए।

ग्यारहवां भवः- ग्यारहवें भव में सनत्कुमार देवलोक में मध्यम आयुष्यवाले देव हुए।

बारहवां भवः- देवभव पूर्ण करके श्वेताम्बी नगरी में 44 लाख पूर्व आयुवाले भारद्वाज नामक ब्राह्मण हुए और त्रिदंडी संन्यासी हुए।

तेरहवां भवः- वहां से काल करके तेरहवें भव में माहेन्द्र देवलोक में मध्यम स्थितिवाले देव हुए।

चौदहवां भवः- आयु पूर्ण करके देवलोक में से च्यवकर संसार में छोटे-छोटे अनेक भव किये। चौदहवें भव में राजगृह नगर में चौतीस लाख पूर्व आयुष्यवाले स्थावर नामक ब्राह्मण हुए। उत्तरावस्था में त्रिदंडी संन्यासी हुए।

पंद्रहवां भवः- वहां से काल करके ब्रह्मदेवलोक में मध्यम आयुष्यवाले देव हुए।

सोलहवां भवः- बहुत काल संसार में छोटे-छोटे भव करके सोलहवें भव में राजगृह नगर में विश्वनंदी राजा के घर उनके छोटे भाई युवराज विशाखाभूति की धारिणी नाम की रानी की कुक्षी से विश्वभूति नाम का पुत्र हुआ। युवावस्था में संभूति मुनि के पास चारित्र पालन किया और उग्र तपश्चर्या की। एक बार मथुरा नगरी में मासक्षमण के पारणे के समय गौचरी जाते हुए शरीर क्षीण होने से गाय का सींग लगने से जमीन पर गिर पड़े। यह दृश्य उनके पितराई बंधु विशाखानंदी जो पूर्व में भी विश्वभूति से द्वेषभाव रखता था, उन्होंने मुनि की हंसी मजाक की। वहां मुनि ने क्रोध करके उनको मारने का नियाणा किया और अंत में अनशन किया।

सत्तरहवां भवः- वहां से मरकर महाशुक्र देवलोक में उत्कृष्ट आयुष्यवाले देव हुए।

अट्ठारवां भवः- देवायु पूर्ण करके सोलहवें भव में किये हुए नियाणे के कारण पोतनपुर नगर में प्रजापतिराजा की रानी मृगावती की कुक्षी में सात स्वप्न सूचित त्रिपुष्ठवासुदेव हुए। चौरासी लाख पूर्व का आयु था। विशाखानंदी का जीव अनेक भवभ्रमण कर तुंगगिरी में केशरी सिंह हुआ था, जो प्रति वासुदेव की नगरी को हैरान परेशान कर रहा था। वासुदेव ने उस सिंह का वध किया। उस वक्त गौतम स्वामी का जीव वासुदेव का सारथी था, उसने सिंह को सान्त्वना दी। यहां शय्या पालक के कान में तससीसे का रस डलवाकर उसको मार डाला। इस कारण अशाता वेदनीय कर्म उपार्जन किया, जो कर्म तीर्थंकर के भव में उदय आने से कानों में कीलें पड़ी।

उन्नीसवां भवः- आयुष्य पूर्ण करके वासुदेव के भव में अनेक पाप कर्म करने से सातमी नारक में उत्पन्न हुए।

बीसवां भवः- 33 सागरोपम का आयुष्य पूर्ण करके तिर्यच गति में केशरीसिंह हुए।

इक्कीसवां भवः- वहां से चौथी नरक में नारकी रुप हुए। वहां से आयु पूर्ण करके तिर्यच एवं मनुष्य के अनेक भव किये।

बाइसवां भवः- बाद में रथपुर नगर में विमल नाम के राजा हुए। राज्य पालन करते हुए एक बार वन में क्रीड़ा हेतु गये राजा ने, मृगों को बंधन मुक्त करवाया। आयुष्य के अंत में एक मास का अनशन किया।

तेइसवां भवः-अपर विदेह में मुका नाम की राजधानी में चौरासी लाख पूर्व आयुष्यवाले प्रियमित्र नाम के चक्रवर्ती हुए, पिता धनंजय और माता धारिणी रानी थी। उत्तरावस्था में चारित्र ग्रहण किया। शुद्ध संयम पालन करके क्रोड़ वर्ष तक उग्र तपश्चर्या की।

चौबीसवां भवः- काल करके महाशुक्र देवलोक में सत्तरह सागरोपम आयुष्यवाले देव हुए।

पच्चीसवां भवः- देवभव का आयु पूर्ण करके छत्रिका नगरी के जितशत्रु राजा के घर भद्राराणी की कुक्षी से नंदन नाम के पुत्र हुए। पच्चीस लाख वर्ष का आयु था। चौबीस लाख वर्ष राज्य पालन करके संसार से विरक्त होकर पोट्टिलाचार्य गुरु के पास दीक्षा ली। वहां 11,80,645 मासक्षमण की आराधना से वीसस्थानक तप की आराधना करके तीर्थंकर नाम कर्म निकाचित किया। एक लाख वर्ष तक चारित्र धर्म का शुद्धपालन करते हुए अंत में एक मास का अनशन किया।

छबीसवां भवः- वहां से काल करके प्राणत नाम के दसवें देवलोक में बीस सागरोपम आयुष्यवाले देव हुए। पुष्पोत्तरावतंसक विमान में उत्पन्न हुए।

सत्तावीसवां भवः- देवायु पूर्ण करके सत्ताइसवें भव में देवानंदा की कुक्षी से क्षत्रियकुंड ग्राम में सिद्धार्थ राजा के घर त्रिशला रानी की कुक्षी में तीन ज्ञान (मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान) युक्त श्री महावीर स्वामी नाम के चौबीसवें तीर्थकर हुए। 30 साल गृहस्थावास में रहकर चारित्र ग्रहण किया। कठिन कर्मो की निर्जरा करने के लिये साढ़ेबारह वर्ष कठोर साधना की और साथ में घोर उपसर्ग सहन करते हुए केवलज्ञान, केवल दर्शन प्राप्त किया। केवली अवस्था में तीस साल पृथ्वीतल पर विचरण करते हुए, भव्यजीवों को प्रतिबोध करते हुए 72 साल की आयु परिपूर्ण करके अंतिम चार्तुमास अपापापुरी में हस्तिपाल राजा के कारकुन (कर्मचारी) की सभा में करते हुए कार्तिकी अमावस्या (दीपावली) की मध्यरात्रि में सर्व कर्म क्षय करके मोक्ष में गये।

सारांशः- वीर प्रभु ने 14 भव मनुष्य के, 10 भव देव, 1 भव तिर्यच और दो भव नारकी के किये। अठारहवें भव में वासुदेव, तेईसवें भव में चक्रवर्ती और सत्तावीसवें भव में तीर्थंकर हुए।

जहां रस वहां मन

आज-कल बहुत लोगों की ऐसी फरियाद है कि हमारा मन भगवान में नहीं लगता, तो भक्ति किस तरह करें ?

मैं उन लोगों को कहता हूं कि भगवान में मन नहीं लगता ऐसे मत बोलो, लेकिन मन लगाना नहीं है ऐसे बोलो। सच बात तो यह है कि ऐसे लोगों को भगवान में रस ही नहीं ! जहां रस होता है वहां मन अपने आप लग जाता है। टीवी में, धंधे में, पैसे गिनने में, मन कैसा लग जाता है ? क्योंकि वहां रस है, और रस आता है इसका कारण यह है कि हमें यह सारभूत लगता है। जो चीज सारभूत लगती है वहां मन अपने आप लग जाता है।

आज तक हमें पैसे सारभूत लगे, पत्नी, पुत्र आदि सारभूत लगे, लेकिन प्रभु कभी सारभूत नहीं लगे। प्रभु हमें कहीं भी उपयोगी लगे नहीं। प्रभु का अस्तित्व हमने कभी भी देखा नहीं। प्रभु अगर सारभूत लगते तो भक्ति अपने आप प्रगट होती, अपने आप रस लगता अपने-आप जड़ पदार्थ तुच्छ लगने लगते। जिस तरह रत्न मिलते ही कंकर तुच्छ लगते है उसी तरह भगवान मिलते ही सांसारिक पदार्थ तुच्छ लगने लगते है। उसकी चेतना दीप-शिखा की तरह ऊर्ध्वगामी होने लगती है। मन स्वयं पवित्र होता है। पुण्य का पुंज एकत्रित होने लगता है। उनके पास आनेवालों को भी पवित्रता का अनुभव होता है। भगवान तो पूजनीय है, लेकिन भगवान को हृदय में स्थापित करनेवाला भक्त भी पूजनीय बनता है। लोग उनको भगवान का प्रतिनिधि मानते हैं।

वास्तव में हमारे जीवन में प्रभु के आने से जीवन का परिवर्तन हो जाता है। हीन जीवन उच्च जीवन बनता है। एक सामान्य कागज भी सरकार के हस्ताक्षर होते ही रुपये के रुप में पूजा जाता है तो भगवान की नजर जिस पर पड़े वह भक्त कैसे नहीं पूजा जाता ?

भगवान श्रीमहावीर के संदेश व हितोपदेश

✻ ज्ञान के बिना क्रिया निष्फल हो जाती है, अतः सम्यक ज्ञान की प्राप्ति का पुरुषार्थ करो।

✻ मन और इन्द्रियों की दासता ही दुःख है, मन व इन्द्रयों पर अनुशासन ही सुख है।

✻ सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चारित्र द्वारा ही पूर्ण निराकुल सुख मोक्ष प्राप्त होता है।

✻ अज्ञान और मोह ही दुःख का कारण है।

✻ जगत में प्रत्येक वस्तु अपने आप में परिपूर्ण व स्वतंत्र है कोई भी किसी का कर्त्ता-हर्त्ता नहीं है, यह शाश्वत सत्य है।

✻ प्रत्येक आत्मा अपने सुख-दुःख का विधाता स्वयं ही है।

✻ जगत की प्रत्येक वस्तु अनादि अनंत है और वह प्रति समय नित्य ध्रुव रहते हुए उत्पाद व्ययसहित परिणमनशील है।

✻ जिस व्यवहार से तुम्हें कष्ट होता है वैसा व्यवहार दूसरों के प्रति मत करो, दूसरों के हिस्से पर अधिकार मत करो।

✻ धर्म आत्मा की निर्विकार पवित्र दशा है और वह धर्म चैतन्यमूर्ति अपनी आत्मा के आश्रय से ही प्राप्त होता है, बाहरीक्रियाकाण्ड मात्र धर्म है।

✻ अनेकांत दृष्टि ही जगत में वैचारिक विरोधाभाषों और विषमताओं को दूर करने का एक मात्र उपाय है।

✻ चाहे शत्रु हो या मित्र परिचित हो या अपरिचित सभी जीवों पर समता भाव रखो।

✻ आत्मा स्वयं ही दुःख तथा सुख को उत्पन्न तथा नाश करने वाली है, सन्मार्ग पर चलने वाली सदाचारी आत्मा मित्र रुप है और कुमार्ग पर चलनेवाली दुराचारी आत्मा शत्रु है।

✻ तेरा शरीर जीर्ण होता जा रहा है, केश पक कर श्वेत हो चले हैं, शरीर का सब बल क्षीण होता जा रहा है अतएव है, आत्मन् क्षण भर के लिये भी प्रमाद मत करो।

✻ ज्ञान समान न आन जगत में सुख के कारण।
यह परमामृत जन्म जरा मृत्यु रोग निवारण॥

✻ अभिमानी व्यक्ति सभी का द्वेषपात्र बन जाता है, विनय से संयम, तप और ज्ञान की सिद्धि होती है।

✻ पुण्य का फल पाकर फूलो मत, पाप का उदय होने पर दुःखी मत होओ।

✻ अपनी शक्ति के अनुसार परिग्रह कम रखने का प्रयत्न करो।

✻ अपने मन को विषय, कषायों से दूर हटाओ ताकि उत्तम सुख की प्राप्ति हो। सदाचारहीन मनुष्य का जन्म निरर्थक है।

✻ हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह ये पाप की जड़ है। जे कम्मे सुरा, ते धम्मे सूरा। हिंसादिक पांचों पापों को मन, वचन, काया से त्याग करने पर ही अपना और पर का कल्याण होता है।

✻ उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आंकिंचन, ब्रह्मचर्य ये धर्म के दस अंग है, इनके पालन से निराकुल सुख की प्राप्ति होती है।

✻ जो अपनी आत्मा के शुद्ध स्वभाव का ध्यान करता है वही योगी है और वही जन्म-मरण के चक्र से छूट जाता है। सभी प्राणियों को अभयदान दो, सभी से मित्रता रखो।

✻ अहिंसा, सत्य, अचौर्य ब्रह्मचर्य और अपरिपूर्ण से ही विश्व का कल्याण हो सकता है।

✻ धर्म ही अविनाशी शास्वत निधि है।

✻ सोचो क्या साथ लेकर आये थे, क्या साथ लेकर जाओगे, फिर क्यों पाप करते हो।

✻ क्रोधरुपी अग्नि को क्षमारुपी जल से शीतल करो।

✻ सत् कार्य में प्रमाद न करना ही सफलता की कुंजी है।

✻ आलसी और कर्त्तव्य विमुख व्यक्ति सत्कार्य के योग्य नहीं होते।

✻ विरोधी को अनुकूल बनाने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि उससे सरल एवं सच्चा प्रेम करो, वह तुमसे द्वेष करें, तुम्हारा अनिष्ट करें तब भी तुम तो प्रीति करो, यदि मन में प्रतिहिंसा को स्थान दिया तो तुम अवश्य ही गिर जाओगे।

✻ यदि तुममें स्वार्थ और अहंकार के अभाव के साथ-साथ ज्ञान है तो सद्गति निश्चित है।

✻ धन, मकान, राज्यसत्ता, शरीर, कुटुम्ब आदि के बल पर मत इतराओ, हमारा सारा बल भर में नष्ट हो सकता है व सच्चा बल तो आत्मबल है, जो कभी नष्ट नहीं होता अतः उसी को बढ़ाओ।

खून का रिश्ता

दो भाई थे, जो हर समय झगड़ते रहते। कभी दूध के लिये, कभी खिलौनों के लिए, तो कभी गोली-बिस्कुट के लिए। छोटी-छोटी बात को लेकर दोनों में झगड़ा हो जाता था। माँ सोचती- अभी बच्चे है, थोड़े बड़े होंगे तो समझ जायेंगे। लेकिन हुआ इसके विपरीत ही। उम्र के साथ-साथ झगड़ा भी बढ़ने लगा। स्कूल जाते तो वहां भी शांति नहीं। कभी पुस्तक, कभी पेन, कलम को लेकर झगड़ते, तो कभी बैठने के स्थान को लेकर ही शांति भंग कर देते।

अब उनका झगड़ा घर, परिवार व मोहल्ले में ही नहीं गांव भर में प्रसिद्ध हो गया। माँ बेचारी समझा-समझाकर परेशान हो गई। बड़े होने पर माँ ने सोचा-अब इनका विवाह कर देना चाहिये जिससे इनका ध्यान विकेन्द्रित हो जायेगा और घर-गृहस्थी की जिम्मेदारी आ पड़ने से विवेक भी आयेगा। दोनों का विवाह हो गया, किन्तु लड़ाई कम नहीं हुई और अधिक बढ़ गई क्योंकि अब बेटों के साथ बहुएँ भी उसमें भाग लेने लगी।

हमेशा-हमेशा के झगड़े से परेशान होकर माँ ने एक प्रयोग किया। दोनों भाईयों को अलग-अलग कर दिया किन्तु इससे भी समस्या का समाधान नहीं हुआ। जब भी, जहां भी दिख जाते, वहां झगड़ पड़ते। यही क्रम चलता रहा। एक दिन छोटे भाई का एक्सीडेंट हो गया। अस्पताल में भर्ती कराया गया। शरीर से काफी खून बह गया था। बेहोशी की हालत में अस्पताल में पड़ा था। चिकित्सकों का कहना था कि यदि समय पर खून नहीं चढ़ाया गया तो मृत्यु हो सकती है। माँ को दुर्घटना की जानकारी मिली तो बेहोश हो गई। बड़े भाई को कौन कहे खून देने के लिये। किसी की हिम्मत नहीं थी।

जब बड़े भाई को ज्ञात हुआ तो वह अस्पताल जाने को तैयार हुआ। पत्नी ने टोकते हुए कहा- कहां जा रहे हो, वहां जाने की जरुरत नहीं। पत्नी के रोकने पर भी वह अस्पताल चला गया। छोटे भाई की गंभीर स्थिति को देखते हुए उसने कहा-डॉक्टर साहब ! क्यों विलम्ब कर रहे है ? मेरा खून लें और भैया को चढ़ा दें। कहने की देर थी। व्यवस्था होने लगी। दोनों भाईयों का खून एक ही ग्रुप का था। बड़े भाई का खून निकालकर छोटे भाई को चढ़ाया जा रहा था। खून चढ़ने पर उसे जरा होश आने लगा, निढाल तन में स्फूर्ति आने लगी तो देखा- भाई पास में बैठा है। दोनों भाईयों की नजर मिली तो स्थिति कुछ और ही बन गई। बात-बात में झगड़ने वाले दोनों भाईयों की आँखों में टप-टप आँसू टपकने लगे।

इस दृश्य को देखकर जितने भी लोग वहां उपस्थित थे सबकी आँखें भर आई और परस्पर कह रहे थे-''आखिर खून का रिश्ता है।'' भाई हो तो ऐसा हो।

महाराजा श्रीपाल

समय- 20 वें श्री मुनिसुव्रत स्वामी का शासन काल

	वर्तमान भव	पूर्वभव
नाम-	श्रीपाल राजा	श्री कांत राजा
नगरी-	चंपानगरी	हिरण्यपुर
पत्नी-	मयणा सुंदरी	श्रीमती रानी
साथी-	700 कुष्टी (कोढ़िया)	700 उद्धत सेवक
शत्रुराजा-	अजितसेन काका	सिंह राजा
आराधना-	सिद्धचकजी	सिद्धचकजी
प्रवृत्ति-	आत्म साधना	शिकार का व्यसन

पुस्तक प्रेम:- अब्राहम लिंकन, बर्नार्ड शो, टागोर आदि स्कूल में अधिक पढ़े नहीं थे। डार्विन, विलियम स्कोट, न्यूटन, एडीसन, आइन्स्टाइन आदि स्कूल में भोट विद्यार्थी थे। नेपोलियन 42 वें नंबर पर था, परन्तु इन सबने पुस्तकों के अध्ययन से अद्भूत योग्यता प्राप्त की थी।

नेपोलियन एवं सिकन्दर जैसे तो युद्ध के समय भी पुस्तकें पढ़ते थे। अमेरिका के भूतपूर्व प्रमुख रुजवेल्ट मुलाकात के समय भी समय मिलने पर पुस्तक पढ़ना छोड़ते नहीं थे। एक मुलाकाती जाता और दूसरा आये तब तक के बिल्कुल अल्प समय का भी वे इस प्रकार सदुपयोग कर लेते थे।

दुनिया का दर्पण

✻ प.पू.पंन्यास प्रवर श्री राजहंसविजयजी म.सा.

✻ कितनी जाति का मूलधर्म जैन धर्म था, आज भी प्राचीन बंगाल की कितनी जातिओं में जैन संस्कारों की झलक दिखाती है। इस प्रदेश में सराक नाम की जाति है, और ''साराक'' यह श्रावक में से अपभ्रंश होनेवाला शब्द है पूर्वकाल में भी जैनधर्म के लिये अर्हत-धर्म, श्रावकधर्म, निग्रंथ धर्म आदि अनेक रुढ़ शब्द थे।

✻ इ.स.1993 में लातुर में आये भूकम्प के समय निःसहाय-बेघर ऐसे तीस गांवों में रोज (प्रतिदिन) ताजी रसोई पहुंचती थी। यह रसोई भेजनेवाले जैनों के कर्मठ (कुशल) कार्यकर कुमारपाल भाई वी. शाह थे। ऐसे समय में समग्र जैनों ने बरसाई हुई दानगंगा में से 18 गांवों को घरवखरी मिली थी।

✻ आचार्य धर्मघोष सूरीजी म.सा. पूर्व में चैत्यवासी साधु थे, 500 जिनालयों का हिसाब और उसी कमाई के अधिकारी वे स्वयं ही थे फिर भी उन्होंने संयम स्वीकारा, साधु हुए। 50 वर्ष तक उन्होंने एक दिन उपवास और एक दिन पारणा (एकांतर उपवास) किया और पारणे के दिन भी मात्र कांजी और खीर ही लेते थे। (सिरसा मणसा मत्थएण वंदमि)।

✻ आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी की शुरुआत कब हुई, किसने की, मालूम है ?.... नहीं.... तो पढ़ो। सेठ आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी की स्थापना विक्रम संवत् 1936 में भादरवा सुद एकम के दिन (ईस्वी 19-09-1980) मध्यान्ह समय में, भारत के श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ ने की है।

✻ आज से 700 वर्ष पहले बना हुआ एक प्रसंग है, खंभात के चौक में ''कुमारपाल विहार'' उपाश्रय में आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसूरीजी महाराज व्याख्यान (प्रवचन) दे रहे थे, उस समय धोलका के महामात्य वस्तुपाल गुरुदेव को वंदन करने आये थे। महामंत्रीश्वर वस्तुपाल ने उस समय सामायिक में बैठनेवालों को मुहपत्ति की प्रभावना की, तो मुहपत्ति की संख्या हुई 1800 (यानि 1800 व्यक्ति तो उस समय सामायिक लेकर बैठते थे) (नमो सामाइअवयधारीणं)

✻ जगप्रसिद्ध दानवीर सेठ जगडुशाह जब मृत्यु को प्राप्त हुए तब उनके मृत्यु के समाचार सुनकर दिल्ली के बादशाह ने उनके सम्मान में अपने मस्तिष्क से मुकुट उतारा था और एक संघपति ने तो दो दिनों तक अन्न का त्याग किया था। (धन्य है जैन जगत के इस कोहीनूर हीरे को)।

✻ जगडुशाह ने तीन वर्षी दुष्काल में कुल 9,99,000 मुद्रा यानि 8,06,07,05,072 मण (आठ अबज 6 करोड़ 7 लाख 5 हजार 72 मण) अनाज का दान किया था।

✻ बनारस के डॉ. रामकुमार चौबे 70 वर्ष की उम्र में एम.ए हुए थे। (पढ़ने के लिये उम्र बंधन नहीं।)

✻ 18 देश के अधिपति महाराजा कुमारपाल ने 60 वर्ष की आयु में कलिकाल सर्वत्र हेमचंद्राचार्य के पास सवा लाख श्लोक प्रमाण ''सिद्धहेम'' व्याकरण मात्र एक ही वर्ष में पढ़ा था।

✻ आर्य वज्रस्वामी को दृष्टिवाद पढ़ाने वाले गुरु का नाम था- आचार्य भद्रगुप्तसूरि महाराज।

✻ जिस तरह वीरप्रभु की चोथी पाट पर आनेवाले प्रभवस्वामी 500 चोर के नायक थे, उसी तरह पार्श्वनाथ प्रभु के गणधर शुभदत्तस्वामी के शिष्य मुनि वरदत्त के प्रतिबोध से दीक्षा देनेवाले हरिदत्तसूरि भी 500 चोरों के नायक थे। प्रभवस्वामी 24 में भगवान के गणधर के शिष्य से प्रतिबोध हुए और हरिदत्त सूरि 23 वें भगवान के गणधर के शिष्य से प्रतिबोधित हुए।

✻ आचार्य कनकसूरीजी जीवनपर्यत (जहां तक जीये तब तक) एकांतर उपवास करते थे, यानि एक दिन उपवास और एक दिन पारणा.... तथा पारने में आयंबिल करते थे। (वंदन हो, ऐसे तपस्वी के चरणों में)।

✻ भारत के वैभव और अपूर्वता का विनाश करनेवालों में एक मुहम्मद गजनी भी था, मुहम्मद गजनी ने इ.स. 1014 में कांगड़ (जिसको पहले नगरकोट अथवा भीमनगर भी कहते थे) के किलों को कब्जे किया, उसमें उसने अपार संपत्ति को लूटा। इस संपत्ति थी ''चांदी (रजत) का बंगला। यह बंगला 90 फीट लंबा और 45 फीट चौड़ा था। यह बंगला समेटकर जहां अच्छा लगे वहां पर फिर से खड़ा कर सके ऐसा था। (1000 वर्ष पहले भी ऐसी टेकनिक इस भव्य भारत के पास थी और ऐसे बुद्धिशाली भी थे।)

तत्वज्ञान : निर्जरा

✻ श्रीमद् विजय केशर सूरीश्वरजी म.

निर्जराः- आत्म प्रदेश से ज्ञानावरण आदि पुद्गलों का देश से (अंशतः) अलग होना ''निर्जरा'' है ! यह निर्जरा कर्म पुद्गलों की रुपांतर दशा है, वह आत्मा नहीं है, परन्तु जिस विशुद्ध परिणाम की धारा से जीव प्रदेशों से कर्म दूर किया जाता है वह विशुद्ध भाव ही आत्मस्वरुप निर्जरा है।

निर्जरा का कारण : भाव तपः-

शुद्ध ज्ञान सहित उत्तम तप बारह प्रकार का है। वह तप आत्मशक्ति को उत्पन्न करने वाला और चित्त की वृत्तियों का विरोध करनेवाला है जिस तप को करने से कषायों का निरोध ही, काम विकार की निवृत्ति हो और वीतराग देव का ज्ञान हो वह ही शुद्ध तप है बाकी का तप तो लंघन करने जैसा है। भूख सहन करना या देह को दुर्बल करना यह कोई तप का लक्षण नहीं है। सहनशीलता, ब्रह्मचर्य आदि के निवास रुप ज्ञान दशा ही तप का स्वरुप है। चंदन के साथ सुगंध की तरह शुद्ध ज्ञान के साथ एकमेव बना हुआ तप आत्मा को निर्जरा देता है। उससे विपरीत तप निर्जरा का कारण नहीं होता। तपस्वी, जिनेश्वर की भक्ति करने से तथा शासन के विकास करने की इच्छा के द्वारा विशेष पुण्य बांधता है, परन्तु यदि इतनी सी भी इच्छा नहीं रही हो तो उस शुद्ध तप द्वारा कर्म बंधन से मुक्त हो जाता है। कर्म को तपानेवाला ज्ञान ही तप है ! इसे जो जानता नहीं है वह मलिन अन्तःकरण वाला ब्राह्य तप द्वारा विशुद्ध निर्जरा कैसे प्राप्त कर सकता है ? अज्ञानी मनुष्य अनंत जन्मों तक तपस्या करके जिस कर्म का नाश करता है, उस कर्म का अंत ज्ञानपूर्वक अथवा ज्ञान रुपी तप करने वाला मनुष्य क्षणमात्र में कर सकता है।

ज्ञान योग ही शुद्ध जप है, ऐसा तीर्थकर कहता हैं। ज्ञानयोग तप के द्वारा ही निकाचित कर्मो का भी क्षय हो सकता है, यह उचित और संभव है। कारण कि अज्ञान योगरुप तप से अपूर्व तथा शुद्ध श्रेणी की प्राप्ति होती है और उस श्रेणी में संचित कर्म संग्रह का क्षय होता है अतः ज्ञान स्वरुप शुद्ध तप ही भावनिर्जरा है। यदि शुद्ध निश्चय नय से विचार करें तो आत्मा निरंतर शुद्ध ही है उसे द्रव्य या भाव निर्जरा किसी भी हालत में नहीं होती है।

द्रव्य भाव बंधः-

कर्म और आत्मा का मिलाप या संयोग बंध कहलाता है। द्रव्य से बंध चार प्रकार का है। बंध के हेतु भूत अध्यवसाय वाला आत्मा भाव बंध कहलाता है।

जैसे सांप अपने शरीर के द्वारा अपने आप को लपेटता है वैसे ही आत्मा अध्यवसायों के परिणामों द्वारा अपने आप को स्वयं बांधता है। जिस प्रकार रेशम का कीड़ा अपने तंतुओं द्वारा अपने आपको बांधता है वैसे ही अपने परिणामों द्वारा आत्मा अपने आपको बांधता है।

कोई शंका करते हैं कि अपराधी जीवों को ईश्वर, कर्म से बांधता है ? तो प्रश्न है कि उसे कौन बांधता है ? यह विचार करने से अव्यवस्था का दोष आता है। नहीं बंधाया हुआ मानने से ईश्वर प्रवृत्ति कर ही नहीं सकता, कारण कि अज्ञानी में प्रवृत्ति करने की प्रेरणा, ज्ञान, ईश्वर मे संभावित ही नहीं है। ज्ञानी ईश्वर सबको ज्ञान वाली प्रेरणा ही देता है परन्तु यह जगत में नजर नहीं आता। तब यह कौन है जो जीव को कर्म बंधन आदि की प्रवृत्ति की प्रेरणा देता है। उत्तर यह है कि जीवों में ऐसे स्वभाव वाले बीज बसे हुए है कि जिनकी प्रेरणा से वे परिणाम के अनुसार पुण्य या पाप बांधने में प्रवृत्ति करते हैं।

शुद्ध निश्चय नय की अपेक्षा से तो आत्मा बंधा हुआ नहीं है, परन्तु जैसे रस्सी में सांप की मान्यता से भय कंप आदि अपने आप होते हैं वैसे ही बंधन की शंका द्वारा ही जीव बंधन के योग्य प्रवृत्ति करता है। जैसे- रोग की स्थिति के अनुसार ही रोगी की प्रवृत्ति होती है वैसे ही भावस्थिति के अनुसार ही बंध का वर्णन किया जाता है।

इस दृढ़ अज्ञानमय शंका को दूर करने के लिए अज्ञान दशा से विरक्त हुई आत्मा शास्त्र सुनने की इच्छा करती है। परन्तु यह आध्यात्म शास्त्र शाखा चंद्र न्याय की दृष्टि से (जैसे बीज का चंद्र दिखाने के लिए कोई ऐसे कहे कि इस वृक्ष की शाखा में चंद्र दिखता है) मात्र दिशा बताने वाला है। अपरोक्ष स्थिति वाला शास्त्र प्रत्यक्ष विषय वाली शंका को दूर नहीं कर सकता है। शंख सफेद होता है यह सब जानते है फिर भी पीलिये (पांडु रोग) आदि रोग के कारण शंख पीला है

ऐसी वृद्धि होती है वैसे ही आत्मा सदा कर्म से मुक्त है ऐसा ज्ञान शास्त्र से जानने पर भी, पूर्व के मिथ्या बुद्धि वाले संस्कार से आत्मा में बंधपन की बुद्धि होती है वैसे ही आत्मा सदा कर्म से मुक्त है ऐसा ज्ञान शास्त्र से जानने पर भी, पूर्व के मिथ्या बुद्धि वाले संस्कार से आत्मा में बंधपन की बुद्धि होती है, जो मनुष्य तत्व को सुनकर उन्हें मानकर और बार-बार उनका स्मरण मनन निधिध्यासन करके साक्षात निर्बंध आत्मा का अनुभव करते है उन्हें आत्मा में बंधे हुए की बुद्धि नहीं रहती वरन उनमें कर्म बंध-रहित आत्मा प्रकट प्रकाशित होता है या अनुभव में आता है।

मोक्ष तत्वः-

कर्म द्रव्य का आत्म प्रदेश से सर्वथा क्षय होना द्रव्य मोक्ष है पर यह आत्मा का लक्ष्य नहीं है। कर्म द्रव्यों के क्षय में कारणभूत ज्ञान, दर्शन, चारित्र रुप रत्नत्रयमय आत्मा भाव मोक्ष है। ज्ञान दर्शन चरित्र के साथ जब आत्मा लवलीन होता है तब कर्म आत्मा से तुरन्त ही अलग हो जाते है। जिस तरह से क्रोध में कोपायमान व्यक्ति किसी स्थान या व्यक्ति से दूर भाग जाता है वैसे ही आत्मा से कर्मो का समूह दूर हो जाता है। यह तीन रत्न ही मोक्ष हैं। इन तीन रत्नों के अभाव में साधु वेष या गृहस्थ वेष से कोई लाभ नहीं है, अर्थात ज्ञान दर्शन चारित्र इन रत्नों रहित का केवल वेष निरर्थक है, निरुपयोगी है। जो केवल मात्र त्यागीपन के या गृहस्थपन के वेष में ही आसक्त हैं वे बालबुद्धि वाले व्यक्ति सिद्धांत का रहस्य नहीं जानते। जो भावलिंग में आसक्त है वे सर्वसारभूत तत्व को जानने वाले, तत्वज्ञ है। वे गृहस्थ हों या त्यागी हों तो भी पाप मल को दूर कर के सिद्धांत को पाते हैं। भवलिंग-(ज्ञान दर्शन-चारित्र रुप) ही मोक्ष का अंग है। द्रव्य लिंग कारण रुप भी नहीं है, क्योंकि द्रव्यलिंग, एकांतिक या आत्यंतिक किसी भी तरह मोक्ष में उपयोगी नहीं है। अशुद्ध नय की अपेक्षा से आत्मा बंधा हुआ या मुक्त हुआ है, ऐसी व्यवस्था है! परन्तु शुद्ध नय से तो वह आत्मा बंधता भी नहीं है और मुक्त भी नहीं होता।

इस तरह से अस्वय व्यतिरेक हेतु के द्वारा नव तत्वों से बुद्धिमान व्यक्ति आत्म तत्व का निश्चय करें।

यह आत्मतत्व निश्चित रुप से परम आध्यात्म है यही अमृत है, यही उत्तम योग है। सूक्ष्म नयों के आश्रित रहा हुआ यह तत्व गूढ़और अतिशय गुप्त है! अल्पबुद्धि वालों को यह नहीं बताना चाहिये क्योंकि वे इस तत्वज्ञान के रहस्य की निंदा अपमान करेंगे। अल्पबुद्धि वाले मनुष्यों के लिये यह तत्व-ज्ञान हितकर नहीं है। ज्ञान के एक अंश द्वारा पांडित्य के अभिमानियों के लिये यह तत्व अनर्थकारी है। जैसे- अशुद्ध मंत्र पाठ वाला व्यक्ति फणीधर (नाग) के सिर पर से मणि रत्न लेते हुए अनर्थ व आपत्ति को पाता है, वैसे ही यहां समझना चाहिये। जो व्यवहार में निपुण हुए बिना आत्मतत्व-निश्चय की इच्छा करता है, उसका कार्य उसी प्रकार निष्फल हो जाता है जिस प्रकार कोई मनुष्य छोटे से तालाब को तैर कर पार करने में असमर्थ होते हुए भी महा समुद्र को पार करने की इच्छा रखता है! अतः व्यवहार का आश्रय करने के पश्चात शुद्ध तप का आश्रय करना चाहिये। अन्त में आत्म-ज्ञान में लीन होकर परम साम्यदशा एवं साम्य योग का आश्रय लेवें।

प्रभु !
हमारे विकास की पराकाष्ठा

परमात्मा मतलब हमारे शुद्ध आत्मा का नक्शा!

बड़ा मंदिर या बड़ी बिल्डिंग बनानेवाला शिल्पी रोज काम करता है और देखता है आज कितना काम हुआ ? कितनी बाकी है ? नक्शा (प्लान) और बिल्डिंग में कितना फर्क है ? क्या खामी है ?

हमें भी इसी तरह ही प्रतिदिन परमात्मा के दर्शन करना है। क्योंकि परमाात्मा के मुताबिक ही आत्मा बनानी है।

प्रभु मतलब हमारे विकास की पराकाष्ठा!

प्रभु मतलब हमारा उज्जवलतम भविष्य!

प्रभु मतलब हमारे अंदर रही हुई अनंत संभावनाओं का मूर्तिमंत प्रगट स्वरुप!

प्रभु अगर वृक्ष है तो हम बीज है।

प्रभु अगर घी है तो हम दूध है।

प्रभु अगर प्रतिमा है तो हम पत्थर है।

प्रभु अगर कुंभ है तो हम मिट्टी है।

बीज में वृक्ष की संभावना है।

दूध में घी की संभावना है।

पत्थर में प्रतिमा की संभावना है।

मिट्टी में कुंभ की संभावना है।

हम में प्रभु की संभावना है।

उसे साकार करना यही मानव जीवन का कर्त्तव्य है।

गौशाला के भाव एवं भव

गौशाला ने परम तारक प्रभुश्रीवीरजी पर तेजोलेश्या छोड़ी वह तेजोलेश्या प्रभु को प्रदक्षिणा देकर पुनः गौशाला के शरीर में ही प्रवेश करती है, जिससे उसके शरीर में अत्यन्त दाह ज्वर होता है ।सात दिन तक भारी वेदना को सहन करता है और अंतिम दिन उसे अपने किये हुए पाप के लिए भारी पश्चाताप होता है। जिससे वह अपने शिष्यों को बुलाकर कहते है कि- मैंने मेरे धर्मगुरु वीर परमात्मा की अत्यन्त आशातना की है, मैं सर्वज्ञ नहीं हूं, मेरे गलत उपदेश से मैं और मेरे आश्रित सभी नरक के अतिथि बनेंगे। मैंने बहुत गलत कार्य किया है, अतः मेरे मृत शरीर के चरण को रस्सी से बांधकर कुत्ते की तरह घसीड़ते हुए, मेरे मुंह पर थुंकते हुए, श्रावस्ती नगरी की हर गली से ले जाना और घोषणा करना कि- यह मंखलि पुत्र गौशाला है,गुरुद्रोही है, मुनिघातक है। सर्वज्ञ नहीं होते हुए भी अपने आप को सर्वज्ञ बताकर इसने लोगों को ठगा है, यह ठग है, यह पापी है.... इत्यादि करने की अपने शिष्यों को शपथ दी।

उसके शिष्य वसति (मकान) के दरवाजे बंद कर जमीन पर श्रावस्ति नगरी का बड़ा चित्र बनाकर उसकी गलियों में घोषणा करते हुए गौशाला के शव को घसीड़कर अपनी शपथ से मुक्त हुए। अपने दुष्कृत की निंदा करने से एवं सम्यक्त्व के प्रभाव से गौशाला बारहवें अच्युत देवलोक में गया। वहां से च्यवकर महापद्म नामक राजा होगा और अपने कुसंस्कार के कारण वह साधुओं का द्वेषी होगा। एक बार अवधिज्ञानी मुनि की भारी विडम्बना करेगा, जिससे कुपित होकर वे मुनि उसके ऊपर तेजो लेश्या छोड़ेंगे, उसकी दाह से मरकर सातवीं नरक में जायेगा।

पश्चात सभी नरक में दो-दो बार उत्पन्न होगा। बाद में सभी तिर्यच जाति में बार-बार उत्पन्न होगा, सभी जगह शस्त्र या दाह में मृत्यु को प्राप्त करेगा, इस प्रकार अनन्तकाल तक भ्रमण करके राजगृही नगरी में दो बार वेश्या बनेगा बाद में ब्राह्मणी बनेगा वहां दावानल से भस्म होकर अग्नि कुमार देव बनेगा। फिर मनुष्य बनकर दीक्षा स्वीकार करेगा, परन्तु चारित्र की विराधना करके असुर कुमार में उत्पन्न होगा, इस प्रकार अनेक बार मनुष्य भव में दीक्षा लेकर शुद्ध-विशुद्ध विशुद्धतर चारित्र पालकर, वैमानिक देवलोक में उत्पन्न होता हुआ अंतिम में सर्वार्थसिद्ध विमान में उत्पन्न होगा। वहां से मनुष्य होकर दीक्षा लेकर केवली बनकर मोक्ष को प्राप्त करेगा। वह अपनी पहली देशना में अपना पूर्व वृत्तांत कहेगा और गुरु की अवज्ञा आशातना न करने का उपदेश देगा।

प्रश्न- साहेब ! गौशाले को प्रभु पर इतना द्वेष क्यों था ? उसने पूर्व भव में ऐसा क्या किया था ?

समाधान- (गौशाले ने पूर्व भव में) एक बार ईश्वर नामक दुष्टव्यक्ति ने गणधर भगवान के पास में दीक्षा ली थी, परन्तु गणधर भगवान की देशना का अपमान करके प्रत्येक बुद्ध मुनि के पास गया उनकी देशना की भी अवहेलना करके स्वयं ने अपना मत (जो सभी लोग आसानी से पाल सके ऐसा) स्थापित करने का विचार किया उतने में बिजली गिरने से मृत्यु पाकर (उत्सुत्र प्ररुपणा के विचार से) सातवीं नरक में गया (वहां से समुद्र में मत्स्य माछला) होकर फिर सातवीं नरक में गया। बाद में काकपक्षी (कौआ)- नरक-तिर्यच-नरक-गधा-मनुष्य-वनचर-बिल्ली-नरक-कुष्ट व्याधि वाला कुम्भार-अकाम निर्जरा से देवलोक-राजा-सातवीं नरक-तिर्यंच इस प्रकार उत्सूत्र और उन्मार्ग प्ररुपणा एवं गुरु की अवहेलना के कारण अनेक भवों तक भ्रमण करके वही ईश्वर यह गौशाला बना। पूर्व भव के कुसंस्कार के कारण ही इसने इस भव में गुरु का द्वेष और उन्मार्ग प्ररुपणा की।

कोई भी आत्मा उत्सूत्र या उन्मार्ग प्ररुपणा करता है वह गौशाले की तरह दुर्गति में अनन्त दुःख का भोक्ता बनता है। अतः बोलने से पहले विचार करके ही बोलें। मार्ग से विरुद्ध न बोले, न करें।

समाधि मरण हेतु

1- दीक्षा लेनाः- चारित्र ग्रहण करना । 2- चारों प्रकार के आहार का त्याग । 3- गुरु समक्ष अतिचारों की आलोचना । 4- सभी पापों का त्याग । 5- श्रावक व्रत ग्रहण । 6- दुष्कृत निंदा । 7- सुकृत अनुमोदना । 8- चार शरण स्वीकार । 9- श्री सीमंधर स्वामी आदि का ध्यान धारना । 10- सभी जीवों से क्षमापना । 11- नमस्कार महामंत्र का स्मरण । 12- श्री सिद्ध भगवंतों का स्मरण ।

वासक्षेप : मंगल आशीर्वाद

* श्रीमती मंजू चौपड़ा, पूणे

वासक्षेप क्या है ? इसका क्या महत्व है और इसकी परंपरा का उद्भव कहां से हुआ है ? वासक्षेप अर्थात वास (सुगंधित) चूर्ण एवं क्षेप यानि डालना। वासक्षेप शुद्ध चंदन की लकड़ी का चूर्ण या बुरादा होता है, जिसमें अनेक प्रकार के सुगंधित द्रव्य जैसे गुलाब जल, प्रभु का अभिषेक जल मिलाया जाता है साथ ही अनेक दुर्लभ औषधीय जड़ी-बूटियाँ जैसे अंबर, जटा, सूरि, बरास, केसर, कस्तूरी आदि का समावेश रहता है। उसके बाद कई मंत्रों और मांगलिक के समय होने वाले मंत्रोच्चारों के द्वारा विभिन्न मुद्राओं से मंत्रित किया जाता है। सुद एकम् अमावस्या के बाद के दूसरे दिन विजय मुर्हूत में जो मांगलिक होता है, उसका बेहद प्रभाव एवं चमत्कार होता है। लोगों के दुःख-दर्द, पीड़ा, वेदना, मानसिक अवसाद एवं उलझनों का निवारण हो जाता है। वे दूर होती है। इन सब झंझावातों से उबरने के लिए एक मार्ग मिलता है। असीम महती बरसती कृपा में स्नान करने से संसारी सत्कर्मी जीव को भी सिद्धत्व की प्राप्ति की दिशा में आगे प्रगति यथासंभव शीघ्र होती है। इसमें श्रद्धा, आस्था और समर्पण भाव अपनी अहम भूमिका निभाता है। औरों के लिए यह मात्र मिट्टी सदृश है किंतु एक जैन श्रावक के लिये यह गुरु द्वारा प्रदत्त आर्शीवाद एवं ऊर्जा व शक्ति का केंद्र है। एक गहन शांति और तनाव मुक्ति की अवस्था प्राप्त होती है। आत्मिक और आध्यात्मिक ऊर्जा का सानिध्य प्राप्त होता है, जिसके प्रभाव से हृदय क्षेत्र और कंठ क्षेत्र के चक्र खुल जाते हैं।

सब कुछ प्रत्येक क्षण उत्पन्न हो रहा है। पल-पल में हर चीज में कुछ नया उत्पन्न हो रहा है, इसे ''उपनेई वा'' यानि त्रिपदी का पहला पद कहा गया है। इसी को हम दूसरी भाषा में ऐसे भी व्याख्यातित कर सकते हैं कि सब कुछ बह्ममय है। वेद उपनिषद कहते हैं ''सर्वत्र खलुं इदम ब्रह्म है यानि जो कुछ है, वह विस्तृत होता जा रहा है, उत्पन्न होता जा रहा है, फैलता जा रहा है साथ ही यह अस्तित्व का दूसरा आयाम है कि जो उत्पन्न हो रहा है तो कुछ नष्ट भी हो रहा है तो कुछ नष्ट भी हो रहा होगा क्योंकि बिना नष्ट हुए नया कैसा उत्पन्न हुआ तो कुछ पुराना परा भी तो होगा। इसी को ''विगमेई ता'' जो दूसरा पद है, कहा गया। विगम यानी खत्म होना, समाप्त होना। जो चीज उत्पन्न हो रही है तो पिछली पर्याय नष्टहो रही है, पर रही है। इसको कहते है ''महेश''। अस्तित्व में कुछ नया आया यानी शाश्वत भी है, इसको कहते हैं ''ध्रुववेई वा''। अस्तित्व सदा बना रहता है खत्म नहीं होगा, जैसे सागर सदा सागर ही रहता है।

प्रत्येक व्यक्ति बालक से युवा और युवा से वृद्ध होता हुआ बराबर मृत्यु की ओर दौड़ चला रहा है। इस प्रकार विश्व का प्रत्येक पदार्थ तरंगित व प्रवाहित है। अस्तित्व एक महासागर के समान है, जो सदा रुप बदलता रहता है। इस विश्व पर सूक्ष्मता से दृष्टि डालने पर यहां हमको कुछ भी नित्य दिखाई नहीं देता सभी अनित्य व क्षणिक है। प्रत्येक पदार्थ नए से पुराना होता हुआ, क्षीणता या विनाश की ओर दौड़ चला आ रहा है। इस त्रिपदी में कल्याण की भावना निहित होती है और द्वादशांगी की रचना होती है। तीर्थंकर परमात्मा आर्शीवाद देते हैं। ''नित्यारगपारगाहोह'' यानी इस संसार सागर में तुम्हारा शीघ्र निस्तारा हो। यही परंपरा आज भी चली आ रही है।

आज भी गुरु भगवंत जब चंदन के बुरादे की अंगुष्ठ तर्जनी मध्यमा, अल्पमिका, कनिष्ठा, मुमुष्ठी बना, उससे वासक्षेप करते हैं तो जिस प्रकार ब्रह्माण्ड पांच तत्वों से निर्मित है, उसी प्रकार ये पांचों उंगलियाँ इन तत्वों का प्रतिनिधित्व करती हुई बेशुमार ऊर्जा तरंगों का स्रोत बन अपना चुम्बकीय प्रभाव डालती है और अद्भूत व अलौकिक तरंगों के प्रवाहित होने पर वीर्य एवं आंतरिक शक्तियां ऊर्ध्वगामी हो जाती है। जो ग्रहण करने वालों की शक्ति को द्विगुणित त्रिगुणित कर देती है और उनका सहस्रार चक्र खुल जाता है। आज्ञा चक्र के खुलने पर शक्ति की आवृत्ति और बारंबारता आर्शीवाद और सही व उचित ज्ञान प्राप्त होता है, जो समस्त बुराईयों का नाश करता है। भूत-प्रेत-बाधा, जादू, टोने-टोटके के प्रभाव की नकारात्मकता दूर कर मानसिक एवं आत्मिक शांति का संचार करता है। स्वभाव में उत्साह एवं उमंग प्रदान कर एक जागरुकता से अवगत कराता है। एक ऐसे वलय का निर्माण होता है, जो बहुत ही शुभ पवित्र व पावन होता है। शिष्य इसे ''तहत्ति'' कहकर स्वीकार करते हैं। इसका अर्थ होता है कि आपने गुरु भगवंत की बात स्वीकारी है। यह क्षण आराध्य के दिव्य गुणों से साकार हो उठता है। उस परम स्वरुप में अपने अस्तित्व को समाने का, मिलाने का अद्भूत अलौकिक क्षण होता है। अवसर्पिणी काल में सबसे पहले वासक्षेप आदिनाथ भगवान ने गणधर भगवंत पुण्डरिक स्वामी के मस्तक पर

डाला था, तब से वासक्षेप क्षेपण करने की परंपरा प्रारंभ हुई। ऐसा हेमचंद सूरीश्वरजी ने अपने ग्रंथ में उल्लेखित किया है। विनीता नगरी में आदिनाथ भगवान ने संघपति पद पर से ही देशना दी थी। बाद में भरत चक्रवर्ती ने विनीता नगरी से छःरीपालित संघ निकाला था, तब आदिनाथ भगवान ने भरत चक्रवर्ती पर वासक्षेप डालकर संघपति पद प्रदान किया। महावीर स्वामी ने गौतम स्वामी को सबसे पहले वासक्षेप डाला था। बाद में सभी गणधार भगवंत को डाला था। वीर प्रभु ने श्री सुधर्मा स्वामी को वासक्षेप डाला, बाद में सभी गणधर भगवंत को डाला था।

वासक्षेप गुरु भगवंतों से किस प्रकार लेते हैं ?

हमें अपने गुरु से आर्शीवाद मिले इसलिये उनसे वासक्षेप लेते हैं। परीक्षा में पास हो जाऊँ, धंधा अच्छा चले, मुसाफिरी में भी विघ्न न आए, योग्य पति व पत्नी मिल जाए, वैवाहिक जीवन अच्छी तरह सुचारु रुप से चले, संतान सुख मिल जाए, संतान का सगाई संबंध विवाह हो जाए, अच्छी नौकरी प्राप्त हो, ऐसे अनेकों सांसारिक इच्छाएं पूरी हो जाए इसलिए गुरु भगवंत से वासक्षेप लेने-डलवाने बहुत लोग आते हैं। किसी अपेक्षा से भी यह उचित नहीं है। गुरु भगवंत भवसागर से मुक्ति मिले, आपको मोक्ष मिले, इस प्रकार से आर्शीवाद देते हैं। आने वाला व्यक्ति मात्र अपनी इच्छापूर्ति जितना ही आर्शीवाद लेकर चला जाता है और बाकी के आर्शीवाद का फल उसको नहीं मिलता। 100 रुपये की प्रभावना हो और केवल मात्र 1 रुपये लेकर ही जाना कहां तक उचित है। धंधा अच्छा चले, इसकी वजह से धंधे में नीतिमत्ता आए। व्यापार में बहुत मुनाफा हो इसकी वजह से मन में संतोष आए, दुश्मन पर विजय मिले की बजाए मुझे क्षमा रखने का सामर्थ्य मिले इसीलिए वासक्षेप करवाना उचित है। लग्न जीवन अच्छा व्यतीत हो इसलिए वासक्षेप न करवाकर सदाचारी ब्रह्मचारी बनें, इसकी कामना करके वासक्षेप करवाना उचित है। संसार बढ़े इसलिए वासक्षेप न करवाकर, धर्म की प्रभावना बढ़े इसलिए वासक्षेप करवाना उचित है। गुरु महाराज दीपावली के दिनों में, नवरात्रि के दिनों में, होली पर्व के दिनों में सूरि मंत्र की आराधना के दिनों के समय इस वासक्षेप को मंत्रोच्चार के साथ प्रभावक बनाते हैं। गुरु भगवंतों के पास वासक्षेप के लिए जब भी जाएं तब जरुर से गुरु पूजन, द्रव्य रखाकर करें। गुरु भगवंत पक्षपात नहीं करते हैं कि किसी ने ज्यादा द्रव्य रखा हो तो उसे कम। वे सभी को समान आर्शीवाद प्रदान करते हैं। फिर भी अलग-अलग जीव अपनी इच्छा व योग्यता और भाव के अनुरुप ही फल पाते हैं। सामायिक-पौषध में श्रावक-श्राविकाएं कल्पसूत्र या आगम प्रति की या कोई यंत्र की वासक्षेप पूजा नहीं कर सकते। परमात्मा की वासक्षेप पूजा सुबह सामायिक के कपड़ों में मुख पोश बांधकर परमात्मा को स्पर्श किए बिना की जा सकती है।

स्याद्वाद के सप्त भंग

✻ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

है नांही, नाही सु है, है है नांही नांही।
यह सरवंगी नय धनी, सब मानै सवमांही॥

अस्ति, नास्ति, अस्ति-नास्ति, अवक्तव्य, अस्ति-अवक्तव्य- नास्ति अवक्तव्य, और अस्ति-नास्ति-अवक्तव्य। ऐसे सात भंग होते है जो उन्हें सर्वांग नय का स्वामी स्याद्वाद सर्व वस्तु में मानते हैं।

रचद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल और स्वभाव इस चतुष्टय की अपेक्षा से द्रव्य अतिस्वरुप है अर्थात् आपसा है पर द्रव्य पर क्षेत्र परकाल और परभाव, उस पर चतुष्टय की अपेक्षा द्रव्य नास्ति स्वरुप है अर्थात् परसदृश नहीं है। उपरोक्त स्वचतुष्टय, परचतुष्टय की अपेक्षा द्रव्य क्रम से तीन काल में अपने भावों अस्ति-नास्ति स्वरुप है अर्थात् आपसा है, परसदृश नहीं है। स्वचतुष्टय की अपेक्षा द्रव्य एक ही काल वन गोचर नहीं है, इस कारण अवक्तव्य है अर्थात् कहने में नहीं आता। वही स्वचतुष्टय की अपेक्षा से द्रव्य अतिस्वरुप है तथापि अवक्तव्य है। परचतुष्टय की अपेक्षा और एक ही काल स्वपर चतुष्टय की अपेक्षा नास्ति स्वरुप है तथापि कहा जाता नहीं। वही द्रव्य स्वचतुष्टय की अपेक्षा और परचतुष्टय की अपेक्षा और एक ही बार स्व पर चतुष्टय की अपेक्षा अस्तिनास्ति स्वरुप है तथापि अवक्तव्य नहीं है। जैसे कि एक ही पुरुष पुत्र की अपेक्षा पिता कहलाता है और वही पुरुष अपने पिता की अपेक्षा पुत्र कहलाता है, वही पुरुष मामा की अपेक्षा भांजा कहलाता है और भांजे की अपेक्षा मामा कहलाता है। स्त्री की अपेक्षा पति कहलाता है बहिन के अपेक्षा भाई, वहीं पुरुष बैरी की अपेक्षा दुश्मन और इष्ट की अपेक्षा मित्र भी कहलाता है। एक पुरुष अनेक नातों से अनेक प्रकार का कहलाता है। उसी प्रकार एक द्रव्य सप्त भंग द्वारा साधा जाता है। ''स्याद्वाद जाने जगत जन लहै जगत-जल-कुल'' जैन मत का मूल सिद्धांत स्याद्वाद का ज्ञान होने से जगत के मनुष्य संसार के सागर पार होते हैं। अपने पदस्थ के अनुसार कर्म करते और ज्ञानध्यान की सेवा में रहते है वे स्याद्वाद मंदिर निवासी है।

विज्ञान के युग में करें अब इलेक्ट्रॉनिक ध्यान

मानवी काया से सतत विविध प्रकार के विद्युतीय संकेत निकलकर बाह्य वातावरण में विसर्जित होते रहते हैं, जिन्हें विभिन्न उपकरणों के माध्यम से जांचा-मापा और उनसे उत्पन्न संकेतों को सुना तथा देखा जा सकता है, तदुपरांत यह ज्ञात किया जा सकता है कि शरीर स्वस्थ है अथवा अस्वस्थ। हृदय से निस्सृत विद्युतीय तरंगे सबसे अधिक सशक्त होती हैं। इनके कमजोर पड़ने अथवा अधिक बढ़ जाने पर जीवन-संकट का सामना करना पड़ता है और धड़कन बंद होते ही व्यक्ति को मृतक घोषित कर दिया जाता है।मस्तिष्क से भी लगातार विद्युत तरंगें मानसिक स्थिति के अनुरुप विविध रुपों में निकलती रहती है, परन्तु हृदय से निकलने वाली तरंगों की तुलना में ये अपेक्षाकृत कमजोर और जटिल होती है। इसके अतिरिक्त त्वचा एवं मांसपेशियों से निस्सृत संकेतों की आवृत्ति उच्च होती है। ये सभी संकेत यह बताते हैं कि मनुष्य की वास्तविक मनः स्थिति उससे संचालित शारीरिक स्थिति कैसी है। मानसिक स्थिति के अनुसार ही व्यक्तित्व का निर्धारण होता है।

इस संदर्भ में प्रश्यात अमेरिकी मनोवैज्ञानिक जे. कमिया तथा डॉ. बारबरा ब्राउन ने गहन अनुसंधान करने के उपरांत बताया कि यदि शरीर से निकलने वाले विभिन्न विद्युतीय संकेतों में किसी तरह आवश्यक परिवर्तन या परिवर्द्धन किया जा सके, तो न केवल शारीरिक स्वास्थ्य की अक्षुण्ण रखा जा सकता है, वरन मानसिक चेतना को भी परिष्कृत किया एवं उच्चस्तरीय बनाया जा सकता है। इनका मत है कि जब तक हम अपने अंतर-बाह्य प्रक्रियाओं तथा उन पर पड़नेवाले विचारों एवं संकल्पों के प्रभाव को अच्छी तरह समझ नहीं लेते, तब तक चेतना के क्षेत्र में वांछित परिवर्तन कर सकने में समर्थ नहीं हो सकते, क्रियाकलापों के प्रति जागरुकता न होने पर उनको नियंत्रित नहीं किया जा सकता। इसके लिये बायोफीडबैंक पद्धति को बहुत उपयोगी पाया गया है।

योगविद्या के निष्णात जानते हैं कि योगाभ्यास की विविध प्रक्रियाएं शारीरक एवं मानसिक क्रियाकलापों के नियंत्रण में प्रभावकारी भूमिका निभाती है। उसके साथ विचारणाओं-भावनाओं के परिष्कार का उपक्रम भी जुड़ा रहता है। इसके बिना समाधिस्तर का सुख एवं चेतना के उच्च आयामों की उपलब्धि नहीं होती, परन्तु यह एक समय एवं श्रमसाध्य प्रक्रिया है। आधुनिक विज्ञानवेत्ताओं ने योगाभ्यास परक प्रथम आवश्यक पूर्ति के निमित्त बायोफ ीडबैक पद्धति को सर्वोत्तम पाया है। इसके द्वारा उपलब्ध परिणामों को मशीन पर चर्मचक्षुओं द्वारा सीधे देखा जा सकता है, जबकि पूर्ववर्ती प्रक्रिया अनुभूतिमूलक है। सामने चलते हुए संकेतों अथवा कौंधते हुए विभिन्न लाइटबार को देखकर साधक अपने मानसिक स्तर को स्वयं समझ सकता है और तदनुरुप उसमें हेर-फेर कर सकता है। इतना ही नहीं इसके द्वारा समस्त शारीरिक हलचलों, हृदय, मांसपेशियों, त्वचा, रक्त के अतिरिक्त प्रत्येक कोशिका की गतिविधि को जाना और स्वसंकेत द्वारा उन पर नियंत्रण साधा जा सकता है।

सुप्रसिद्ध मनोवेत्ता एल्मरग्रीन का कहना है कि काया पर मन का आधिपत्य है, अतः उसे प्रशिक्षित करके समस्त कायिक अंग-अवयवों, कोशिकाओं को वशवर्ती बनाया जा सकता है, क्योंकि यह सभी मन से संचालित है, अतएव मांसपेशियों में उत्पन्न तनाव एवं सिरदर्द जैसी सामान्य बीमारियों को बायोफीड बैंक द्वारा सरलतापूर्वक दूर किया जा सकता है। इससे संबद्ध व्यक्ति इलेक्ट्रोमायोग्राफ र अपनी पेशियों द्वारा छोड़े गये विद्युत चुम्बकीय विकिरण को देखता और इच्छाशक्ति का प्रयोग कर उन्हें इच्छित तरीके से सिकुड़ने-फैलने का निर्देश देता है। अभ्यास द्वारा इससे उसी तरह के सुखद परिणाम निकलते हैं, जिस तरह से प्रशिक्षित मस्तिष्क से शांति-दायक अल्फा तरंगों के निर्माण से मिलते हैं। इस उपचार में किसी ब्राह्य चिकित्सक की आवश्यकता नहीं पड़ती वरन विशेषज्ञ द्वारा इलेक्ट्रोड आदि लगाने की प्रक्रिया ज्ञात हो जाने पर अकेले भी किया जा सकता है। यह पूर्णतया ''ऑटोसजेशन'' प्रक्रिया पर आधारित हैं। रॉकफेलर विश्वविद्यालय के मनोविज्ञानी डॉ.एडमण्ड डेवन ने इस विधि द्वारा विकलांग व्यक्तियों की संकल्पशक्ति को जगाकर बेकार बने अंगों को सक्रिय बनाने में आशातीत सफलता पायी है। उनके अनुसार, इससे मांसपेशियों की निष्क्रियता एवं तनाव को भी सफलता-पूर्वक दूर किया जा सकता है।

हृदय की गतिविधियों पर सामान्य मनुष्यों का कोई नियंत्रण नहीं होता, किन्तु योगाभ्यासियों के लिये नाड़ी की गति, हृदय की धड़कन आदि को इच्छानुसार घटा-बढ़ा लेना लयबद्धता को सुस्थिर बना देना एक सामान्य क्रिया होती है। अभ्यास द्वारा अनैच्छिक पेशियों को भी नियंत्रित कर लेने में वे समर्थ होते हैं। हृदय-गति की अनियमितता ''सायनस टैकिकार्डिया'' से लेकर हृदय-गति रुकने (हार्टब्लॉक) तक का निमित्त कारण बनती है। इसे लयबद्ध बनाया जा सके, तो न केवल असामायिक मरण से छुटकारा पाया जा सकता है, वरन दीर्घजीवन की उपलब्धि भी संभव है। अनुसंधानकर्ता डॉ. एल्मर ग्रीन ने हृदय रोगियों पर किये गए बायोफीडबैंक अध्ययनों में पाया है कि जिन व्यक्तियों की हृदयगति 110 प्रति मिनट थी, तीन माह के अभ्यास से वे 70 प्रति मिनट तक गति को कम करने में सफल हुए। उनके अनुसार इस

तरह के बाह्य उद्दीपन, जो यंत्र पर लाल-हरे आदि प्रकाश के रुप में दिखाते रहते हैं, व्यक्ति को अपने संकल्पबल को प्रखर बनाने एवं अधिकाधिक कुशलता प्राप्त करने के लिये प्रोत्साहित करते हैं। इच्छाशक्ति के साथ ही अंतःप्रक्रियाओं पर नियंत्रण सधाता जाता है।

''हाइपरटेंशन'' अर्थात उच्च रक्तचाप इस शताब्दी की सबसे बड़ी बीमारी है। विश्व में ऐसे लोगों की संख्या करोड़ों में है, जिन्हें उच्च रक्तदाब की शिकायत है। अकेले भारत में प्रायः पांच करोड़ से अधिक व्यक्ति इस रोग से पीड़ित है। इस श्रेणी में प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में नये रोगी जुड़ते जाते हैं। चिकित्सक एवं दवाईयाँ भी इसमें कोई स्थाई राहत नहीं दिला पाते। वस्तुतः यह एक मनो-शारीरिक रोग है, जो चिंतनक्षेत्र की विषमता एवं तनाव के कारण पनपता है। इसका उपचार भी तदनुरुप ही ढूंढा जाना चाहिये। विशेषज्ञों ने अल्फा ई.ई.जी. वायोफीड बैंक को इसके लिये बहुत उपयुक्त पाया है। एक ओर इस उपक्रम में जहां मन को विधेयात्मक विचारणाओं से परिपूरित करने का अवसर मिलता है, वहीं भावना क्षेत्र का परिशोधान कर संकल्पबल को बढ़ाया जाता है। हृदय की गतिविधियों एवं ब्लडप्रेशर को नियंत्रित करने में यह युक्ति बहुत कारगर सिद्ध हुई हैं।

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि वर्तमान समय की अधिकांश बीमारियों का जनक दैनिक जीवन में बढ़ता जा रहा तनाव है। इससे शरीर की ऊपरी त्वचा से लेकर रक्तवाही शिराओं की आंतरिक संवेदनशील मांसपेशियाँ तक प्रभावित हुए बिना नहीं रहती। शवासन, शिथिलासन जैसी योगाभ्यास परक प्रक्रियाओं द्वारा इसे दूर कर लिए जाने का विधान योगशास्त्र में है, फिर भी अब नए आविष्कारों के साथ ही मस्तिष्कीय शक्ति एवं यांत्रिक सुविधाओं के सम्मिलित प्रयोग से कम समय में सरलतापूर्वक इसे सम्पन्न किया जा सकता है। इसी प्रकार थर्मल सेन्सर द्वारा शारीरिक तापमान के उतार-चढ़ावों को निरखा-परखा जा सकता है और स्वसंकेत द्वारा उसे नियमित स्तर पर लाया जा सकता है।

इसी प्रकार जी.एस.आर. बायोफीड बैंक द्वारा त्वचा की विद्युतीय प्रतिरोधी क्षमता को घटाया-बढ़ाया जा सकता है। बढ़ी हुई त्वचा प्रतिरोधी क्षमता तनाव शैथिल्य एवं सक्रियता का चिन्ह है। मन की उत्तेजना, व्यग्रता सबसे पहले त्वचा प्रतिरोध में ही परिलक्षित होती है। शरीर की प्रतिरोधी सामर्थ्य को शक्तिशाली बनाने हेतु स्वसंवेदन, ध्यान प्रक्रिया का प्रयोग किया जा सकता है एवं विधेयात्मक प्रतिक्रिया का संकेत यह उपकरण देता रह सकता है। इसे इक्कीसवीं सदी के ''इलेक्ट्रॉनिक मेडीटेशन'' की उपमा दी गई है।

इसके अतिरिक्त अनेक ऐसे उपकरण भी हैं, जिनसे मनोकायिक विद्युतीय संकेतों को पकड़ पाना तो संभव नहीं, पर उस अवस्था का अनुमान लगाना सरल है, जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सके कि शरीर-मन कितने सक्रिय-निष्क्रिय हैं। मन की उत्साहहीनता शरीर पर बोझ बनकर सवार रहती है, जो कार्य के परिणाम को बड़े स्तर पर प्रभावित करती है। मनुष्य इन दिनों अपने ही कारणों को लेकर उधेड़बुन में इस कदर फंसा हुआ है कि इससे उसकी मानसिक सजगता और तत्परता कुंद पड़ गई है। नतीजा यह होता है कि व्यक्ति को कई बार हानि उठानी पड़ती है, लाभ की संभावना कम हो जाती, असफलता के आसार बढ़ जाते हैं एवं सफल लोगों का स्तर घट जाता है, अनेक मौकों पर जीवनसंकट भी उपस्थित हो जाता है। बर्लिन यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञानी जे.ए.वेड का अभिमत है कि वर्तमान में विश्वभर में सड़क दुर्घटनाओं में जो अप्रत्याशित वृद्धि हुई है, उसका एक प्रमुख कारण औसत आदमी की मानसिक सजगता में संव्याप्त कमी है। जैसे-जैसे जीवन की जटिलता बढ़ी है, वैसे-वैसे मानसिक जागरुकता में ह्रास हुआ है और आज वह इस बिन्दु पर पहुंच चुकी है, जिसे चरम नहीं तो कम भी नहीं कहा जा सकता। इस कमी को ''ऑडियो-विजुअल रिएक्शन टाइम'' द्वारा मापा जा सकता है।

मानवी मस्तिष्क सम्पूर्ण व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है। उसके विभिन्न केन्द्रों और हिस्सों में जितना अधिक संतुलन, सक्रियता और प्रखरता होगी, व्यक्तित्व भी उसी के अनुरुप संतुलित, सफल या असफल होगा। अधिकांश व्यक्तियों में देखा गया कि मस्तिष्क के दांये-बायें दोनो गोलार्द्धो के मध्य सामंजस्य का अभाव है। इस अभाव के कारण व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की कठिनाइयों और परेशानियाँ पैदा होती है। विशेषज्ञ बताते हैं कि मस्तिष्क का बांया हिस्सा अनुभूति, अंतर्ज्ञान, भावना, समझ के लिये जिम्मेदार है, जबकि दांया भाग तर्क, बुद्धि, विचार एवं विश्लेषण जैसी भूमिकाओं का निर्वाह करता है। इनमें परस्पर तालमेल न हो, तो स्थिति वैसी ही पैदा हो जाती है, जैसी परिवार के सदस्यों के बीच उक्त गुणों के अभाव में होती है। इस अभाव को जानने और नापने के लिये जो यंत्र उपयोग में लाया जाता है, उसे ''मिरर इल्यूजन'' कहते हैं। उपर्युक्त दोनों स्थितियों में सामंजस्य के लिए जप और ध्यान का अभ्यास काफी कारगर सिद्ध हुआ है।

''न्यू माइण्ड-न्यू बॉडी'' नामक अपनी पुस्तक में मनोचिकित्सक डॉ.बारबरा ब्राउन कहती हैं कि ''बायोफीड बैक'' द्वारा मनःस्थिति की उत्तेजना को शिथिली-करण में बदलना तथा मानसिक सजगता और मस्तिष्कीय सामंजस्य को आंकना इस युग की सबसे बड़ी उपलब्धि है। सचमुच यदि मनश्चेतना पर यंत्रों के माध्यम से ही सही, मनुष्य को योग-साधना द्वारा नियंत्रण करने की विद्या सिखायी जा सके, तो इसे चिकित्सा-विज्ञान का मानवजगत को अद्भूत अनुदान कहा जाएगा।

✻ अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

आगमोद्धारक भविष्य फल अप्रेल-2021

मेष– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में प्रगति रहेगी, आशा अनुसार लाभ प्राप्ति से मन उत्साहित रहेगा, पारिवारिक वातावरण बेहतर रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिए शुभ समाचार संभावित है।

वृष– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र में पदोन्नति की प्रबल संभावना रहेगी, अधिकारी वर्ग का सहयोग शुभ फलदायक रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय रहेगा, स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, कार्यक्षेत्र में मानसिक परिश्रम की अधिकता रहेगी, दूर स्थानों से शुभ समाचार मिल सकते है, महिला वर्ग का बेहतर सहयोग मिलेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिए परिश्रम का समय रहेगा।

कर्क– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में तो आशा अनुसार वृद्धि रहेगी, साथ ही सामाजिक एवं धार्मिक कार्यो में भी रुचि रहेगी, दूर स्थानों की यात्रा शुभ फलदायक रहेगी, विद्यार्थी वर्ग को शुभ समाचार प्राप्त होगा।

सिंह– आपके लिये यह मास सामान्य फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में वृद्धि हेतु परिश्रम की अधिकता रहेगी परन्तु आशा अनुसार लाभ ना होने से निराशा रह सकती है, जीवनसाथी से मनमुटाव की स्थिति रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिए परिश्रम का समय रहेगा।

कन्या– आपके लिये यह मास सामान्य फलदायक रहेगा, कोई नए निवेश की योजना बन सकती है परन्तु इस समय सोच विचार कर आगे बढ़े, वाणी एवं क्रोध पर अवश्य नियंत्रण रखें, विद्यार्थी वर्ग में निराशा संभावित है।

तुला– आपके लिये यह मास सामान्यता शुभ फलदायक रहेगा, संचित धन में वृद्धि के अवसर प्राप्त होंगे इस समय विलासता संबंधी कार्यो पर व्यय रहेगा, परिवार में कोई उत्सव आदि संभावित है, विद्यार्थी वर्ग में उत्साह रहेगा।

वृश्चिक– आपके लिये यह मास सामान्यता मिश्रित फलदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र में बनते हुए कार्य में बाधा आ सकती है, इस समय अनावश्यक वाद-विवाद से दूर रहें, पारावारिक वातावरण बेहतर रहेगा।

धनु– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा,व्यापारिक लाभ में वृद्धि रहेगी एवं सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा,यात्रा शुभ फलदायक रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिए बेहतर समय रहेगा।

मकर– आपके लिये यह मास सामान्य रहेगा, व्यापार में किसी प्रकार का वाद विवाद संभावित है, शीघ्रतम से कोई भी निर्णय मत लें, दूर स्थानों से बेहतर लाभ की संभावना रहेगी, विद्यार्थी वर्ग में निराशा रह सकती है।

कुम्भ– आपके लिये यह मास शुभ फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में तो वृद्धि रहेगी ही साथ ही कोई रुका हुआ लाभ भी प्राप्त हो सकता है, जीवन साथी में मधुर संबंध रहेंगे, सामाजिक कार्यो में रुचि रहेगी,

मीन– आपके लिये यह मास मिश्रित फलदायक रहेगा, आते हुए लाभ में बाधा संभावित है, नए निवेश के बेहतर योजनाएं कार्य रुप होंगी, विरोधी पक्ष हानि पहुंचाने का असफल प्रयास कर सकते हैं, मान सम्मान में बढ़ोतरी रहेगी।

वर्ग पहेली क्रमांक-*311*

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2		3	4	■	5		6
■		■	7		8		■	
9		■		■	10	■	11	
	■	12		13	■	14		■
15	16	■	17		18	■	19	20
■	21	22	■	23			■	
■	24		25	■		■	26	
27	■	28		29		■		■
30			■	31				

बाएं से दाएं:-

1- जैन तीर्थधाम वीरायतन के संस्थापक राष्ट्रसंत उपाध्याय---- (5)

5- त्रिशला माता द्वारा देखे गये 14 स्वप्नों में एक---- (3)

7- पावापुरी प्रभु महावीर की---- मि है (3,1)

9- गौशालक के उपसर्ग से भ.महावीर अस्वस्थ हो गए फिर रेवती द्वारा प्रदत्त बीजोरापाक नामक--- से स्वस्थ हुए (2)

10-नाग, सांप, सर्प का पर्यायवाची शब्द (4)

12-पंद्रहवें तीर्थकर की माता का नाम---- (3)

14-एक कीमती रत्न मा---- (2)

15-महामंत्र नवकार का प्रथम शब्द---- (2)

17-थोड़, कुछ का समानार्थी---- (3)

19-साप्ताहिक अवकाश का दिन---- वार (2)

21-विद्या की देवी सरस्वती का वा---- है हंस (2)

23-कदम बढ़ाए जा न डर---- बढ़ाए जा, पांव तले तेरे जर्मी तू जग पे छाए जा (3)

24-नया का पर्याय---- (3)

26-भ.वासुपूज्यजी की माता का नाम (2)

28-बिहार के बांका जिले में भ.वासुपूज्यजी का जैन तीर्थ---- रि (4)

30-सिद्धाचल ना वासी, विम----ना वासी, जिनजी प्यारा, आदिनाथ ने वंदन हमारा (3)

31-इलाहाबाद में स्थित स्थल जहां से माता मरुदेवी मोक्ष सिधारी---- (5)

वर्ग पहेली क्रमांक-310 का परिणाम

■	प्र	ह	ला	द	■	ने	म	प्र
खां	भा	■	हा	श	त	क	■	भा
■	व	■	बा	■	न्म	■	ज	■
पे	ती	स	■	आ	य	रि	या	णं
■	■	म	■	य	■	या	■	■
क्ष	त्रि	य	कुं	ड	■	ला	ल	घा
■	श	■	ड	■	वि	■	न	■
लो	■	म	ल	य	ज	■	पु	री
च	व्द	ना	■	न	य	सा	र	■

ऊपर से नीचे:-

2- राष्ट्र गौरव वीरचंद राघवजी गांधी की जन्म स्थली (3)

3- कछुआ लांछन वाले तीर्थकर भ. ---- स्वामी(5)

4- अर्ध मागधी में प्रवचन देने वाले तीर्थकर भगवान की----ण भूमि है पावापुरी (2)

5- जैन मतावलम्बी प्रसिद्ध वैज्ञानिक विक्रम साराभाई को 1972 में पद्म ---- से सम्मिनत किया गया (4)

6- यहां दयालशाह के किले में है भ.आदिनाथ का तीर्थः राज----(3)

8- चंदबरदाई के अनुसार पृथ्वीराज चौहान भी शब्द भेदी बा----द्या में निपुण थे (1,1)

9- अष्टमंगल में से एक---- (3)

11-साधना के द्वारा लक्ष्य को सा---- ही सफलता पूर्ण होती है (3)

13- मृगावती कोशाम्बी के राजा श----की रानी थी (3)

16- भ.आदिनाथ का तीर्थ, अभिधान राजेंद्र कोष के रचयिता के जन्मदिवस गुरु सप्तमी पर यहां मेला लगता है----खेड़ा (3)

18- पालीताना के निकट कदम्ब गणधर की मोक्षस्थली ---- (5)

20- भ.अजीतनाथजी की माता का नाम---- (3)

22- प्यारा सीमंधर स्वामी, तुमे मुक्ति ना गामी, विदेहवासी विहरमान ने वंदना हमारी---- स्तवन के रचयिता-ज्ञा---- (1,3)

25- भ.शीतलनाथजी की माता का नाम (2)

26- राजा की माता कहलाती है रा----(2)

27- राजुल नहीं डाल पाई नेम के गले में वर---- (2)

29- अधर में अटके, भ.अंतरिक्ष पार्श्वनाथ का तीर्थ यहां स्थित है शि----र (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-311

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

प्रश्न-प्रस्तुत प्रश्न अंताक्षरी पर आधारित है। पहले प्रश्न के उत्तर का अंतिम अक्षर, दूसरे प्रश्न के उत्तर का प्रथम अक्षर होगा।

1- जो प्रभु प्रथम वासुदेव बने ?

2- अठारह पाप स्थानकों में से एक पाप स्थानक ?

3- कौन से गति के जीवों को जीवनदान प्रदान कर अरिष्टनेमि ने संयम पंथ पर प्रयाण किया ?

4- चक्रवृती के चौदह रत्नों में से एक रत्न का नाम ?

5- चार गतियों में से एक गति का नाम ?

6- पर्युषण पर्व में कौन से सूत्र का श्रवण किया जाता है?

7- वे जीव जो एक स्थान से दूसरे स्थान जा सकते है ?

8- साधु कौन सी विरती को स्वीकारते है ?

9- प्रभु की आज्ञा धारण करने रुप चिन्ह कौन सा है?

10-कौन से पाप स्थानक से झगड़ा होता है ?

✻ अल्प क्षणों के लिए भी किया गया तीव्र क्रोध हमारे लिए अत्यन्त हानिकारक है। गर्मी के दिनों में पांच मिनट की तीव्र आंधी घर में कितना अधिक कचरे का, रेत का संग्रह कर देती है।

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं. 030001000331

IFSC Code ICIC0000300

वर्गपहेली क्रमांक-310 के परिणाम

विजेता:-

1-कृष्णकुमार जालोरी, विदिशा (म.प्र.) - प्रथम

2-प्रिती हिंगड़, नरवर (म.प्र.) -द्वितीय

3-श्रीमती सरोज तलेरा, इन्दौर (म.प्र.) -तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे :–

सुधा धारीवाल, श्रीमती मीना जैन, श्रीमती चंदनबाला जैन,भारती जैन, देवास, रोहितकुमार सकलेचा,नलखेड़ा।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक–310 के परिणाम

विजेता:-

1-शशि भाण्डावत, शाजापुर (म.प्र.) - प्रथम

2-प्रियांशी जैन, नरवर (म.प्र.) -द्वितीय

3-श्रीमती विद्या संघवी, बदनावर (म.प्र.) -तृतीय

सही उत्तर-

1- **सगर**, 2- **रस**, 3- **सत्यकी**, 4- **किल्मीक** 5- **कषाय**, 6- **यशोदा**, 7- **दासी**, 8- **सीता**, 9-**तारा**, 10- **राम।**

इनके भी उत्तर सही थे :–

सुधा लोढा, उज्जैन, कृष्णकुमार जालोरी, विदिशा सुधा धारीवाल, मीना जैन, श्रीमती चंदनबाला जैन, भारती जैन, देवास, रोहितकुमार सकलेचा, नलखेड़ा।

सूचना– अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-4-2021 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

वागड़ नरेश जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागर सूरीजी का चार्तुमास उदयपुर में

✻ महामांगलिक कुकड़ेश्वर में हुई।
✻ सुवासरा कार्यक्रम में उपस्थिति रहेगी।

कुकड़ेश्वर- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागर सूरी जी म.सा. के तीसरे सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा. अर्हम् रत्नसागरजी सा. आदि ठाणा की निश्रा में पूज्यश्री की महामांगलिक का जोरदार आयोजन हुआ। यहां से आपश्री का विहार विभिन्न श्रीसंघों में शासन प्रभावना करते हुए सुवासरा की ओर हुआ था। यहां आपश्री 28 मार्च से 2 अप्रेल तक आयोजित कुमारी चीकु छाजेड़ की दीक्षा एवं पूज्यपाद गुरुदेव श्री मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. के 78 वें जन्मोत्सव (31 मार्च) में सादर उपस्थित रहेंगे। आपका आगामी चार्तुमास उदयपुर आयड़ में सुनिश्चित हुआ है।

जैनाचार्य श्री अशोकसागर सूरीजी का विहार गुजरात की ओर हुआ : चार्तुमास पालीताना में

भोपावर- मालवा के विभिन्न जैन श्रीसंघों में जबर्जस्त शासन प्रभावना करते हुए 88 हजार वर्ष प्राचीन सोलवें तीर्थकर परमात्मा दादा शांतिनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा की प्रथम वर्षगांठ पर ध्वजारोहण महोत्सव में निश्रा में प्रदान करते हुए भोपावर पधारे सिंह गर्जना के स्वामी सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा पूज्य आचार्य श्री सौम्यचंद सागर सूरीजी, पूज्य आचार्य श्री विवेक चंद्र सागर सूरीजी म.सा., पूज्य आचार्य श्री मतिचंद्रसागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा यहां 16 मार्च को भव्य महोत्सव पूर्वक दादा के भव्य जिनप्रमाद पर ध्वजारोहण किया गया। पूज्यपादश्री ने यहां से गुजरात की ओर विहार किया। आपश्री का सूरत कतारगांव होते हुए पालीताना की ओर विहार करेंगे। आपश्री आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास जम्बुद्वीप परिसर पालीताना में सुनिश्चित हुआ है।

चार्तुमास....

✻ जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, मरुधररत्न पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का वि.सं. 2077 का चार्तुमास श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक आराधक संघ बीजापुर (विजयापुर) (कर्णाटक) में निश्चित हुआ है।

जीरण में ध्वजारोहण हुआ

जीरण - मंदसौर (म.प्र.) के समीप जीरण में पूज्य मुनि भगवंत श्री नमीरत्नसागरजी म.सा., मुनिश्री पवित्ररत्नसागरजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में 169 वीं ध्वजारोहण का कार्यक्रम उत्साह से दिनांक 14 मार्च को सम्पन्न हुआ।

अनुयोगाचार्यश्री का 69 वां जन्मोत्सव मना

देवास- अनुयोगाचार्य श्री वीररत्न विजयजी म.सा. 69 वां जन्मोत्सव का त्रिदिवसीय भव्य आयोजन देवास में किया गया। दिनांक 14 से 16 मार्च तक आयोजित जन्मोत्सव कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विशिष्ट अतिथियों का आगमन हुआ। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर परिसर में आयोजित महोत्सव के अंतर्गत परमात्मा के 18 अभिषेक भी हुए। 16 मार्च को भव्य शोभायात्रा निकाली गई जो बाद में एक भव्य धर्मसभा में परिवर्तित हुई। यहां पर आमंत्रित वक्ताओं और अतिथियों ने पूज्यश्री के बारे में अपने अनुभव बतलाये। इस अवसर पर श्री नाकोड़ा भैरवजी की प्रतिमा भराने एवं प्रतिष्ठा का लाभ भी दिया गया। आपश्री का आगामी चार्तुमास श्री चंद्रप्रभ स्वामी श्री संघ के अंतर्गत ओयसिस कालोनी इन्दौर में होगा।

रुचिका माधुरी की दीक्षा 6 मई को

हैदराबाद- पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री जिनमणिप्रभसागर सूरीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में कुमारी रुचिका सकलेचा एवं माधुरी कंकुचोपड़ा की भगवती प्रवज्या 6 मई को दादा के दरबार श्री शत्रुंजय महातीर्थ में होगी। इस निमित्त दोनों मुमुक्षु बहनों का वर्षीदान वरघोड़ा हैदराबाद में 28 मार्च को भव्य रुप से आयोजित किया गया। चैन्नई के श्री मोहन मनोज के द्वारा अंतिम बिदाई कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

मालवा में युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी ने नवरत्न गुरुकुल के साथ ध्वजा, दीक्षा, जन्मोत्सव, पतिष्ठा, जिनालय निर्माण की शासन प्रभाक कार्यों की श्रृंखला खड़ी की

✻ श्री नाकोड़ा महातीर्थ में 1000 धर्मिष्ठों के साथ चार्तुमास का मंगल आयोजन। ✻ झाबुआ महामांगलिक मालवा में पदार्पण, आगामी महामांगलिक राजस्थान में हो सकती है। ✻ उज्जैन में भव्य उपाश्रय आयंबिल भवन की योजना। ✻ 10 मई बाद पुन: उज्जैन आगमन। सुवासरा में दीक्षा एवं गुरुदेव का 78 वां जन्मोत्सव का भव्य आयोजन। ✻ राजस्थान के नगरों में शासन प्रभावना। ✻ श्री नागेश्वर महातीर्थ में चैत्र नवपद ओली आराधना। ✻ श्री अमीझरा तीर्थ के नवनिर्माण आरंभ के निश्रादाता। ✻ मालवा के अनेक छोटे-बड़े नगरों में शासन प्रभावना।

उज्जैन- गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवा हृदय सम्राट, महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य आ.देव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा, वर्धमान ओली आराधक उपाध्याय श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्रीकीर्ति रत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री तीर्थरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री उदयरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री उज्ज्वल रत्नसागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री गंभीररत्नसागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री पवित्ररत्नसागरजी म.सा.प.पू.मुनि श्री रम्यरत्नसागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री लब्धिरत्नसागर जी म.सा.।आदि ठाणा का पालीताना से चार्तुमास उपधान तपाराधना सम्पन्न करवाने के साथ ही पूज्यपाद गुरुदेवश्री का पालीताना में मालवा के धर्मिष्ठों के लिये धर्मशाला हो जिसकी नींव गुरुदेव ही डाल गये थे उसे नवरत्नधाम के रुप में साकार रुप देने का काम भी आपकी निश्रा सुन्दर रुप में सम्पन्न हुआ, यही नहीं चार्तुमास पूर्ण होते ही आपने नेमिनाथ परमात्मा के वंदन करने के भाव पूर्ण करने के लिये श्री गिरनार महातीर्थ की भी यात्रा की अब सम्पूर्ण गुरुकुल के साथ झाबुआ में 14 मार्च को महामांगलिक का आगाज कर मालवा में भव्य प्रवेश किया इसके तुरन्त बाद ही आप श्री भोपावर महातीर्थ की प्रथम वर्षगांठ पर 16 मार्च को उपस्थित हुए। यहां पर श्री अमीझरा पार्श्वनाथ तीर्थ की बैठक का आयोजन भी किया गया। भोपावर से प्रस्थान कर आप मालवा की हृदयस्थली उज्जैन पधारे। यहां 21 एवं 22 मार्च को स्थिरता रखते हुए नवीन उपाश्रय, आयंबिल एवं भोजनशाला हेतु भूमि पूजन भी सम्पन्न करवाया। 23 मार्च को उन्हेल पहुंचे, यहां उपधान तप पालीताना में संसार छोड़ने वाली पुण्यवंता बहन की स्मृति कार्यक्रम में सम्मिलित होकर सुवासरा की ओर विहार किया। सुवासरा में चीकु बहन छाजेड़ की दीक्षा महोत्सव 1 अप्रेल को होने के पूर्व पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के 78 वें जन्मोत्सव पर 31 मार्च को भव्य धर्मसभा में गुणानुवाद किया गया। गुरु भगवंतों और गुरुभक्तों ने पूज्यपादश्री के स्मरण करते हुए गुणानुवाद गाये। इसी दिन चीकू बहन का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा भी आयोजित किया गया। 28 मार्च से 2 अप्रेल तक हुए महोत्सव के अंतर्गत श्री मणिभद्र, श्री सिद्धचक्र, श्री गौतमस्वामीजी की पूजन भी पढ़ाई गई। 31 मार्च को मुमुक्षु बहन का विदाई समारोह आयोजित हुआ। 1 अप्रेल को यहां नव निर्मित उपाश्रय भवन का उद्घाटन प्रसंग भी हुआ। प्रातः शुभ लग्नांशवेला में गुरु भगवंतों की निश्रा में

सुवासरा दीक्षा एवं गुरु जन्मोत्सव में पधारे गुरु भगवंत

गुरु नवरत्न कृपापात्र, युवा हृदय सम्राट, महामांगलिक प्रदाता परम पूज्य आ.देव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा, वागड़ विभुषण प.पू. आचार्यदेव श्री मृदुरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा, वर्धमान ओली आराधक उपाध्याय श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री कीर्तिरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री तीर्थरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री उदयरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री नमिरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री अर्हमरत्न सागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री उज्ज्वल रत्नसागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री गंभीररत्नसागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री पवित्ररत्नसागरजी म.सा.,प.पू.मुनि श्री रम्यरत्नसागरजी म.सा., प.पू.मुनि श्री लब्धिरत्नसागरजी म.सा.।

मालव देश दिपीका मनोहर सुमन शिशु निडर वक्ता प.पू.सूर्योदया श्रीजी म.सा. की शिष्या पू.कल्पज्योति श्रीजी म.सा., पू.शासन ज्योति श्रीजी म.सा. पू.अक्षयज्योति श्रीजी म.सा., पू. सिद्धांत ज्योति श्रीजी म.सा., पू. निरागज्योति श्रीजी म.सा., पू.स्नेहज्योति श्रीजी म.सा., पू. अर्हद्ज्योति श्रीजी म.सा. ,पू. आराध्यज्योति श्रीजी म.सा., पू. शौर्य ज्योतिश्रीजी म.सा., पू.साध्यज्योति श्रीजी म.सा., पू.सूर्यज्योति श्रीजी म.सा. पू.विरमज्योति श्रीजी म.सा.

मुमुक्षु बहन की दीक्षा क्रियाविधि सम्पन्न हुई। इस अवसर पर अनेक अतिथियों का आगमन भी हुआ था। सभी कार्यक्रम जैन मांगलिक भवन सुआसरा में हुए। यहां से आपका विहार अकोला, रामगंज मंडी और भवानीगंज मंडी की ओर हुआ। विभिन्न शासन प्रभावक कार्यो को सम्पन्न कर आपका आगमन विश्व विख्यात महातीर्थ श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ में हुआ। यहां आपकी निश्रा में 19 से 27 अप्रेल तक चैत्र नवपद ओली का आयोजन होने जा रहा है। ओली सम्पन्न करवाकर आप पुनः श्री अमझेरा पार्श्वनाथ तीर्थ पधारेंगे। वे यहां 8 मई को प्रथम ढांकना के साथ भव्य शिलारोपण कर भव्य जिनालय का नवनिर्माण आरंभ हो गया। यहां से आपने 10 मई के बाद पुनः उज्जैन आने की संभावना की है। इसके बाद विभिन्न श्री संघों में शासन प्रभावना करते हुए श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ की ओर विहार होगा। यहां 1000 धार्मिष्ठों को दो माह का चार्तुमास करवाने की भावना के साथ उपधान तप का आयोजन भी करवाया जाएगा।

मोडासा (गुज.) में प्रतिष्ठा वर्षीतप पारणा महोत्सव नीमच में श्री नव अपूर्व अमर बंधु त्रिपटी की निश्रा रहेगी

* चार्तुमास ठाणा (मुंबई) में

पालीताना- पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार श्री नवअपूर्व अमर कृपापात्र बंधु त्रिपठी मुनिप्रवर श्री आगम-प्रशम-वज्ररत्नसागरजी म.सा. की एक माह उपस्थिति मुनिश्री आगम प्रशमरत्नसागरजी को महानिशीध के योगोद्हन के लिये एक माह उपस्थिति पालीताना रही इस दौरान योग की पूर्णाहुति पर मुंबई से दो बस तथा मालवा से 7 बसें आई। लगभग 1500 से अधिक गुरुभक्तों की उपस्थिति के 200 साधु-साध्वी की निश्रा रही। साधु-साध्वी को एक माह गोचरी वोराई गई तथा 6 जिन मंदिरों में 18 अभिषेक भी हुए। पूर्णाहुति पर मुनिश्री का वर्धमान विद्या का पद अर्पण किया गया।महानिशीध योगोद्हन की क्रिया के पूर्ण होने पर आपका विहार हुआ है अब आपश्री 19 अप्रेल को मोडासा (गुज.) में भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव में अमृत निश्रा प्रदान करेंगे। मई में मालवा में पदार्पण कर नीमच में 11दिवसीय वर्षीतप पारणा महोत्सव में निश्रादाता रहेंगे।आपका आगामी चार्तुमास ठाणा (मुंबई) में होने की संभावना है। कोरोनो की स्थिति पर भी कुछ निर्भर करता है।

मुंदेड़ी में ध्वजारोहण हुआ

मुंदेड़ी - श्री वहीं पार्श्वनाथ तीर्थ के समीप मुंदेड़ी में दिनांक 15 मार्च को पूज्य मुनिश्री नमिरत्न सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री पवित्ररत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा की मंगल निश्रा में वार्षिक ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ।

ज्योतिर्विद आचार्य भगवंत श्री जिनरत्नसागर सूरीजी म.सा.का देवलोकगमन भक्तामर तीर्थ धार में हुआ

धार- पूज्य पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी म.सा.के प्रथम शिष्य ज्योतिर्विद आचार्य भगवंत श्री जिनरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. का दिनांक 21 मार्च को प्रातः 4.45 बजे श्री भक्तामर तीर्थ अभ्युदयधाम धार में देवलोक का गमन हो गया। 22 वर्षीतप के आराधक आचार्य भगवंतश्री विगत कई दिनों से अस्वस्थ थे। 21 मार्च की रात्रि में आपका स्वास्थ्य अचानक खराब हुआ, डॉ.नाहर सा. रात्री में उपचार के लिये आये थे। स्थिति विकट थी, प्रातःकाल आपने अंतिम सांस ली। आपश्री आचार्य भगवंत श्री जित-रत्नसागर सूरीजी म.सा.एवं आयंबिल आराधक आचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी म.सा.के गुरु एवं संसारी पिताश्री थे, साध्वी श्री तीर्थरत्नाश्री म.सा. का भी कालधर्म यहीं हुआ था। आप पूज्याचार्य भगवंतों की माता श्रीजी साथ ही तपस्वी साध्वी श्रीगुणरत्नाश्रीजी म.सा. जिनका देवलोक इन्दौर कालानी नगर में हुआ था। आप पूज्य आचार्य भगवंतों की संसारी बहन म.सा. थे। मालवा के इतिहास में प्रथम बार संपूर्ण परिवार ने एक साथ दीक्षा ग्रहण कर इतिहास बनाया था। पू. आचार्य भगवंत श्री जयरत्नसागरसूरीजी म.सा. जिनका देवलोक गमन श्री शत्रुंजय महातीर्थ में हुआ था। आप ज्योतिर्विद आचार्यश्री के संसारी भाई म.सा. थे। इसके साथ ही परिवार में अन्य अनेक दीक्षा हुई थी। ज्योतिर्विद आचार्यश्री का अग्नि संस्कार श्री भक्तामर महातीर्थ धार में किया गया। धार के श्री सुराणाजी एवं राजेश नाहर का विशेष सहयोग मिला। आगमोद्धारक परिवार की ओर से भावभरीआदरांजलि।

वाणी के जादूगर जैनाचार्य श्री जितरत्नसागर सूरी ओली आराधना महिदपुर में करवायेंगे : चार्तुमास मुंबई की संभावना

धार- वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. 100 +100+154 ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरसूरी जी म.सा.,मुनिश्री चैत्यरत्न सागर जी म.सा.,मुनिश्री ज्ञानेश रत्नसागरजी म. सा.,मुनिश्री गोयम सागरजी म.सा. आदि ठाणा मालवा के विभिन्न श्री संघों में शासन प्रभावना कराते हुए श्री भक्तामर महातीर्थ अभ्युदयधाम धार पधारे थे, पिताश्रीजी म.सा. भी साथ में ही थे,आगे के अन्य आयोजन की रुपरेखा भी बन गई थी कि अचानक पिताश्री आचार्य भगवंत का 21 मार्च को देवलोक गमन हो गया। अभी आप धार में ही विराजमान है। 19 से 21 अप्रेल तक महिदपुर में ओली आराधना आपकी निश्रा में होनी है। वहां से उज्जैन आगमन होकर पूज्य वरिष्ठ जैनाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी म.सा. के 7 मई को जन्मोत्सव में पधारने की भी सहमति है इसके बाद आपश्री की निश्रा में सांवेर में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 22 मई को होना है। चार्तुमास मलाड मुंबई में होने की संभावना है

100 जिनमंदिरों में ऐतिहासिक शक्रस्तवाभिषेक

पूना- जिनशासन के एक मात्र 100 वर्षीय महान गच्छाधिपति पू.आ.देव श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा के गच्छाधिपति ग्रहण तिथि निमित्ते भारत वर्ष के 100 मंदिरों में एक ही दिन एक ही समय पर शक्रस्तव महाभिषेक का भव्यातिभव्य आयोजन किया गया। यह ऐतिहासिक महाभिषेक उत्सव श्री राजगृही तीर्थप्रेरक- परम विद्वदर्य पूज्य जैनाचार्य श्री अक्षयचन्द्र सागरसूरीजी महाराजा की परम प्रेरणा से आयोजित किया गया। देश के विभिन्न स्थानों पर स्थित 100+ जिनालयों में एक ही दिन-एक ही समय पर शक्रस्तव महाभिषेक का ऐतिहासिक एवं भव्यातिभव्य आयोजन हुआ। अनेक आचार्य भगवंतों ने निकटवर्ती जिनालयों में आयोजित इस शक्रस्तव अभिषेक में निश्रा प्रदान की। यह आयोजन पू.गच्छाधिपतिश्री की गच्छाधिपति पद ग्रहण तिथि फागण सुद-1 दिनांक 14 मार्च 2021 को हुआ। ऐतिहासिक आयोजन में पू.सा.श्री दिव्यदर्शनाश्रीजी म.सा. का सुन्दर सहयोग शताब्दी शंखनाद परिवार को प्राप्त हुआ।

चार्तुमास....

❋ बारामती- पूज्य साध्वीवर्या श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वीवर्या श्री अर्चितगुणाश्री म.सा. आदि ठाणा-8 का मंगलमय चार्तुमास बारामती जैन श्री संघ में होने जा रहा है। आप मार्च के अंतिम सप्ताह तक कात्राज तीर्थ पूना में विराजमान रहे।

भोपावर महातीर्थ प्रतिष्ठाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीजी का जन्मोत्सव 7 मई 2021 को उज्जैन में मनेगा

उज्जैन- सागर समुदाय के वचन सिद्ध, भोपावर महातीर्थ के प्रतिष्ठाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा, मुनिश्री पद्म कीर्तिसागरजी म.सा.आदि ठाण की निश्रा में अनेक शासन प्रभावक कार्यो की श्रृंखला के साथअपश्री आगर में पारणा महोत्सव में निश्रा प्रदान कर छोटी सादड़ी (राज.) रिंगनोद आदि क्षेत्रों की यात्रा और विभिन्न श्री संघों से शासन प्रभावना के बाद पुनः उज्जैन पधारने पर आपका जन्मोत्सव कार्यक्रम 7 मई 2021 को भव्य रुप से आयोजित किया जावेगा। वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्न सागरसूरीजी म.सा. 100 +100 + 154 ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरसूरी जी म.सा., मुनिश्री चैत्यरत्न सागर जी म.सा., मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी म. सा., मुनिश्री गोयमसागरजी म.सा. आदि ठाणा को उज्जैन में आयोजित पूज्यपाद आचार्य श्री नरदेव सागरसूरीश्वरजी म.सा. के जन्मोत्सव कार्यक्रम के लिये आमंत्राण दिया गया है । आपने अनुकुलता से पधारने की स्वीकृति प्रदान की है । यहां से आपश्री सांवेर पधारेगें जहां प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 22 मई को होगा

सांवेर में 22 मई को प्रतिष्ठा में होगी

उज्जैन- श्री अभ्युदय भक्तामर धाम महातीर्थ धार में पूज्यपाद वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. 100 +100+ 154 ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरसूरी जी म.सा., मुनिश्री चैत्यरत्न सागर जी म.सा., मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी म. सा., मुनिश्री गोयमसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में सांवेर में होनेवाले श्री आदिनाथ परमात्मा के जिनालय की प्रतिष्ठा के लिये जाजम बिछाई गई जिसमें 50 लाख रुपये के चढ़ावे हुए साथ ही 30 लाख रुपये की टीप प्रतिष्ठा आयोजन के लिये भी हुई। प्रतिष्ठा का आयोजन 22 मई को होने जा रहा है।

✲ सागर समुदाय में होनेवाले दीक्षा महोत्सव ✲

- ✲ मुमुक्षु चीकु छाजेड़ 1 अप्रेल सुवासरा (म.प्र.)
- ✲ मुमुक्षु हीना जयंतिभाई धोका, चैत्र वद-5, 1 मई, हालोल (गुज.)
- ✲ मुमुक्ष पूजा जयंतिभाई धोका, चैत्र वद-6, 2 मई, हालोल (गुज.)
- ✲ मुमुक्षु करिश्मा जयंतिभाई धोका, चैत्र वद-6, 2 मई, हालोल (गुज.)
- ✲ मुमुक्षु भाई हितेश दीक्षा महोत्सव 30 मई हरिद्वार(उ.प्र)

✲ विचार करके वस्तु को बारंबार समझो। मन से किये हुए निश्चय को साक्षात् निश्चय न मानना। ज्ञानी द्वारा किये हुए निश्चय को जानकर प्रवृत्ति करने में कल्याण है।

कालधर्म....

✲ श्री केशरसूरीश्वरजी म.सा. के समुदायवर्तीय साध्वीश्री विनाथप्रभा श्रीजी म.सा. का कालधर्म 6 मार्च को हुआ। अहमदाबाद में अग्नि संस्कार हुआ।

✲ श्री हिमाचलसूरीश्वरजी म.सा. के समुदायवर्तीय साध्वी श्री जिनेशरत्ना श्रीजी म.सा. का कालधर्म 5 मार्च को श्री नाकोड़ा महातीर्थ में हुआ।

✲ शासन सम्राट समुदाय के पूज्य मुनिश्री निरागचंदविजयजी म.सा. का सूरत में 14 मार्च की रात में कालधर्म हुआ।

✲ पूज्य युगदिवाकर आचार्य श्री धार्मसूसे समुदाय के साध्वी श्री विचक्षणा श्रीजी म.सा. की शिष्या साध्वी पूर्णकलाश्रीजी (86) दीक्षा (66) का 24 मार्च को श्रमणी विहार पालीताना में कालधर्म हुआ।

श्री जैन श्वेतांबर तीर्थ सोसायटी के चुनाव हुए

वारणसी- 23 मार्च को श्री जैन श्वेतांबर सोसायटी वारणसी के प्रबंध समिति के चुनाव में सभी समुदाय निर्विरोध चुने गये । श्री धनप्रतराज भंसाली-संघपति प्रवीण गांधी, 34 सभापति सुशील बुरड़, प्रधानमंत्री भावेश शाह, उपप्रधानमंत्री अनिल धाम्मावत, कोषाध्यक्ष राहुल गांधी, रसोड़ा मंत्री दिव्येश मेहता, धर्मशाला मंत्री अरुणराय सुराना, चंद्रावती मंत्री विनीत नाहटा, मंत्री अमृत नाहर, भंडार मंत्री प्रदीप कोठारी, सुभाष लोनावत, सुर्भेष कोठारी, अनिल गांधी, कैलाश जैन सदस्य निर्विरोध चुने गये।

पूज्यपाद सागर गच्छाधिपतिश्री की अमृत निश्रा में निकिता बहन ने श्रमण संघ में दीक्षा ली

कामशेल (लोनावाला)- पूना के समीप कामशेल म सुविशाल सामुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलतसागर सूरीजी महाराजा पूज्यपाद अजात शत्रु पूज्य आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धन सागरसूरीजी म. सा., पूज्य आचार्य देव श्री हर्षसागर सूरीजी म.सा. पंन्यास प्रवर प्रवर श्री विरागसागरजी आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंत की निश्रा में निकिता बहन के श्रमण पंथ में दीक्षित होने का कार्यक्रम 6 से 10 मार्च तक भव्य रुप से आयोजित हुआ। पूज्य साध्वीवर्या श्री सिद्धिपूर्णाश्री की शिष्यत्व स्वीकार करनेवाली निकिता बहन का वर्षीदान वरघोड़ा भव्य रुप से 9 मार्च को आयोजित किया गया। 10 मार्च को पूज्यपादश्रीकी अमृत निश्रा में प्रातःकाल शुभलग्नांशवेला दीक्षा क्रिया विधि सम्पन्न हुई। इस अवसर पर संयम उपकरण वंदनावली कार्यक्रम भी हुआ।

36 दिन का श्री नागेश्वर से श्री नाकोड़ा महातीर्थ का संघ जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरी निकालेंगे

उज्जैन - पूज्यपाद अभ्युदय सागरजी म.सा. के सुशिष्य एवं अभ्युदयपुरम् तीर्थ एवं गुरुकुल के संस्थापक मालव मार्तण्ड जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरजी म.सा., पू.पंन्यास श्री अचलमुक्तिसागरजी म.सा., मुनिश्री पावनमुक्तिसागरजी, मुनिश्री मनमुक्ति सागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में 36 दिवसीय श्री नागेश्वर से श्री नाकोड़ा महातीर्थ छःरि पालित यात्रा संघ निकालने पर योजना का काम चल रहा है। यह संघ दिसंबर 2021 में निकलकर जनवरी 2022 में नाकोड़ा तीर्थ पहुंचकर माल होगी। उज्जैन में चार्तुमास सम्पन्न कर आप मालवा के श्रीसंघों में शासन प्रभावना करते हुए 9 से 11 मार्च तक नलखेड़ा रहे। यहां दीक्षार्थी बहन सुश्री युतिका जिनकी दीक्षा 16 अप्रेल को होनेवाली है, उनके वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित किया गया। आप 20 मार्च को उज्जैन पहुंचे आगे की कार्ययोजना पर काम चल रहा है।

देवास में चार्तुमास

पालीताना- विगत दिनों दादा के दरबार श्री शत्रुंजय महातीर्थ में देवास श्रीसंघ की आग्रह पूर्वक विनंती पर मातृ हृदया साध्वी श्री अमितगुणा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री अमिपूर्णा श्रीजी एवं साध्वी श्री अमिदर्शाश्रीजी आदि ठाणा का भव्य चार्तुमास श्री आदिश्वर जिनालय बड़ा बाजार, देवास में आगामी चार्तुमास की स्वीकृति प्रदान की है।

मण्डोरा तीर्थ में मेला

मण्डोरा- श्री पार्श्वनाथ परमात्मा में सुशोभित श्री मण्डोरा तीर्थ में प्रति वर्षानुसार दो दिवसीय 18 एवं 19 मार्च को विशाल मेले का आयोजन किया गया। 18 मार्च को सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई गई। 15 मार्च को भव्य रथयात्रा का आयोजन किया।

मनासा में ध्वजारोहण

मनासा-पूज्य आचार्य भगवंत श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.आदि ठाणा-3 पूज्य साध्वी श्री अर्पितगुणा श्रीजी म.सा.आदि-3 ठाणा का मनासा में भव्य मंगल प्रवेश दिनांक 5 मार्च को बैडबाजों के साथ हुआ, पूज्यश्री निश्रा में ध्वजारोहण प्रतिदिन प्रवचन, बच्चों के शिविर, लघु शांतिस्नात्र महोत्सव, 108 महाआरती, रात्री भक्ति व दिनांक 9 मार्च को प्रातः 10 बजे शुभ मुहूर्त में ध्वजारोहण व उसके पश्चात स्वामी वात्सल्य का आयोजन हुआ। पूज्यश्री की 5 दिन की स्थिरता रही। पूज्यश्री के सभी कार्यक्रम में प्रभावना हुई। पूज्यश्री कुकड़ेश्वर में दिनांक 14-3-2021 महामांगलिक प्रदान करते हुए भवानीमंडी की ओर विहार किया। पूज्यश्री का चार्तुमास आयड़ तीर्थ उदयपुर (राज.) तय हुआ है।

- वीरेन्द्र पोरवाल

राणकपुर में ध्वजारोहण हुआ

राणकपुर- पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री धर्मधुरंधरश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में धन्नाशाह सेठ के द्वारा निर्मित श्री आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी के द्वारा संचालित श्री त्रैलोक्य दीपक राणकपुर तीर्थ में श्री आदिनाथ प्रभु चौनुर की जिनालय का ध्वजारोहण श्री धन्नाशाह सेठ के वंशज की 17 वीं पीढ़ी के परिवार ने ध्वजारोहण किया इसके साथ ही श्री राणकपुर पार्श्वनाथ एवं श्री नेमिनाथ जिनालय में भी ध्वजारोहण हुआ। महातीर्थ को दीपक से सजाया गया इसके साथ ही 19 मार्च को श्री मुछाला महावीर 20 मार्च को सूरीतीर्थ एवं 21 मार्च को नारलाई तीर्थ में ध्वजारोहण हुआ।

दादा के जिनालय की ध्वजा 31 मई को चढ़ाई जावेगी : चढ़ावे हुए

पालीताना- शाश्वत तीर्थराज श्री सिद्धाचल महातीर्थ में दादाश्री आदिश्वर प्रभु के भव्य जिनालय की 490 वीं ध्वजा (1587) चढ़ाने के लिये 29 अक्टूबर को भव्य चढ़ावे पालीताना में भाताघर में हुए। दादा के देरासर के साथ ही राघण पगलियाजी राघण वृक्ष श्री पुंडरिक स्वामीजी देरासर में भी ध्वजा चढ़ाने के लिये चढ़ावे हुए। सेठ श्री आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी के तत्वावधान में ध्वजा की बोलियां हुई। इसके साथ ही श्री शांतिनाथ परमात्मा के जिनालय में 18 अभिषेक का आयोजन भी किया गया। दादा की ध्वजा संवत् 2077 वैशाख वदी-6 (ज्येष्ठ वदी) दिनांक 31 मई, सोमवार को चढ़ाई जावेगी।

गणिवर्य आदर्शरत्नसागरजी का चार्तुमास दिल्ली के मंडार संघ में होगा

*** भाई हितेश का संयम स्वीकार दीक्षा महोत्सव30 मई को।**
*** हरिद्वार में 14 मार्च को महामांगलिक हुई।**

हरिद्वार - आचार्य भगवंत श्रीमृदुरत्नसागर सूरीजी महाराज के सुशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास श्री सुमतिनाथ परमात्मा के परिसर नई दिल्ली के श्री मंडार जैन श्वेतांबर संघ के अंतर्गत होगा। इसकी स्वीकृति विगत दिनों संघ की चार्तुमास विनंती पर दी गई। इस मंगल प्रसंग पर मोंटेक्स ग्रुप के श्री रमणभाई मुथा की विशेष उपस्थिति रही। आपश्री की महामांगलिक का आयोजन 14 मार्च को श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ परमात्मा के जिनालय परिसर हरिद्वार में हुई। साध्वीवर्या अमितगुणा श्रीजी म.सा. की प्रशिष्या साध्वी श्री स्नेहझराश्रीजी का चार्तुमास भी मंडार संघ में होगा। सुश्रावक उच्च शिक्षा, उच्च पद पर कार्य करनेवाले श्री हितेशभाई को संसार की असारता का ज्ञान हुआ। आपने सब कुछ मोह माया का त्याग करते है, श्री महावीर स्वामीजी के श्रमण समुदाय में दीक्षित होने का संकल्प लिया है।श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ परमात्मा के जिनालय परिसर हरिद्वार में 30 मई को भगवती प्रवल्या स्वीकार दीक्षा महोत्सव का आयोजन किया जायेगा।

पूज्यपाद गच्छाधिपति का चार्तुमास मुंबई में

सूरत- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा अजात शत्रु पूज्य आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धन सागर सूरीश्वरजी म.सा.,पूज्य आचार्य देव श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि-12 ठाणा का आगामी चार्तुमास काला चौकी, मुंबई में होगा।

1 अरब चारित्रपद का सामुहिक जाप

पूना- जिनशासन के इतिहास में एक अनुपम-अतुल्य-अद्भूत आयोजन पू.शतकवीर गच्छाधिपति आ.भ.श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा के निर्मल संयम जीवन की अनुमोदनार्थ आयोजित हो रहा है। पूज्यश्री समग्र जैनशासन में सर्वाधिक दीक्षा पर्याय के धारक हैं। पूज्यश्री के इस निर्मल संयम जीवन के अनुमोदनार्थ समग्र विश्व के हजारों लोगों द्वारा एक अरब चारित्रपद के सामुहिक जाप का ऐतिहासिक आयोजन शुरु हुआ। जाप-ध्याननिष्ठ, शासन प्रभावक पू.आ.श्री चंद्राननासागरसूरीजी महाराजा की प्रेरणा से एवं पू.सा.श्री दिव्यदर्शना श्रीजी म.सा. के संयोजन में यह भव्यातिभव्य शासन प्रभावक आयोजन हो रहा है। विश्वभर के हजारों लोग इस सामुहिक जाप में जुड़ चुके हैं।

जैनाचार्य श्री नरेन्द्र-सागर सूरी का 95 वां जन्मोत्सव

पालीताना- सागर समुदाय गीतार्थ ज्योतिर्विध आचार्य भगवंत श्री नरेन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा का 95 वां जन्मोत्सव शासन कंकोटद्वारक जैन ज्ञानशाला में मनाया गया। पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवंत सूर्योदय सागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य मुनि भगवंत श्री गुणरत्नसागरजी म.सा. की निश्रा और साध्वीवर्या श्री अंजना श्रीजी की प्रेरणा से फागण वद दिनांक 29 मार्च 2021 को शक्रस्तव अभिषेक का आयोजन किया गया। अनेक धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही।

श्री अमीझरा पार्श्वनाथ प्रभु के भव्य जिनप्रसाद का नवनिर्माण 8 मई को भट्ट शिलारोपण के साथ आरंभ होगा

- भोपावर महातीर्थ में ट्रस्ट मंडल की मीटिंग युवा जैनाचार्य के मार्गदर्शन में हुई।
- अध्यक्ष श्री रमेशजी मुथा ने कहा-पुण्यबल से हमें प्रभु का कार्य करना है।
- मंदिरजी का नक्शा पास हुआ : मार्बल के लिये एग्रीमेंट हुआ।

भोपावर- दादा शांतिनाथ प्रभु की प्रथम वर्षगांठ पर भोपावर महातीर्थ में पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.की मंगल उपस्थिति में श्री अमीझरा पार्श्वनाथ दादा के भव्य त्रिलोकदर्शयी जिनप्रसाद के नवनिर्माण के लिये 16 मार्च को श्री अमीझरा ट्रस्ट मंडल की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष श्री रमेशजी मुथा मैनेजिंग ट्रस्टी श्री प्रकाश सिरोही के द्वारा भट्ट शिलारोपण के लिये पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वरजी म.सा. से मंगल मुर्हूत प्रदान करने पर आग्रह किया गया। पूज्यश्री ने 8 मई को एक दिवसीय आयोजन के साथ भट्ट शिलारोपण के साथ भव्य जिनप्रसाद निर्माण का संकल्प दोहराया। प्रथम ढांकना विधान के साथ भट्ट शिलारोपण का कार्य विजय मुर्हूत 12.39 बजे सम्पन्न होगा। प्रारंभिक तौर पर 21 लाख का नाम मुर्हूत के लिये आया है, 8 मई को इसका चढ़ावा आगे और बढ़ेगा। लाभार्थी को लाभ दिया जायेगा।

मैनेजिंग ट्रस्टी श्री प्रकाशजी सिरोही ने बैठक में अवगत कराया कि- मकराना में मंदिरजी के लिये संगमरमर के लिये एग्रीमेंट किया गया जिसमें अध्यक्ष श्री रमेशजी मुथा मकराना गये थे साथ ही मंदिरजी का नक्शा में फाईनल किया गया। इस अवसर पर सोमपुरा ी उपस्थिति भी रही, सभी शंकाओं का समधान किया गया। बैठक में अनेक निर्णय लिये गये। श्री रमेशजी मुथा ने कहा क- मंदिरजी निर्माण के सभी नक्शे निश्चित कर देवद्रव्य के लिये अपील तैयार की जावे तथा दादाश्री अमीझरा पार्श्वप्रभु और तीर्थ के सभी देवी-देवताओं से विनंती कर निर्माण की आज्ञा भी प्राप्त करें और शीघ्र ही निर्माण सम्पन्न हो ऐसा आग्रह भी करें। ट्रस्ट मंडल की अगली बैठक अमीझरा में रखने का निश्चित किया गया। भोपावर में हुई मीटिंग में ट्रस्ट मंडल के संघवी श्री रमेशजी मुथा, चैन्नई, संघवी श्री प्रकाशजी सिरोडी वाला, अहमदाबाद, संघवी श्री तेजराज जी कोठारी, चैन्नई, संघावी श्री दिनेशजी दोशी, दिल्ली, श्री रखबजी बिजावत, बडौद, श्री राजेशजी जैन, उज्जैन, श्री मनोहरलालजी काँग्रेसा, राजगढ़, श्री राजेशजी पोसीत्रा, अमेझरा, डॉ.श्री सुभाषजी जैन, उज्जैन, श्री दिलीपजी फरबदा, राजगढ़, श्री राजेन्द्रजी मेहता, सरदारपुर, श्री दिनेशजी संघवी, राजगढ़, श्री सुरेशजी काँग्रेसा, राजगढ़ आदि की उपस्थिति रही।

अभिनव शत्रुंजयधाम की अंजन-प्रतिष्ठा जनवरी 2022 में होगी

रानी- श्री जैनाचार्य श्री नेमी सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवश्री सुशीलसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यदेव श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा. के दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर रानी के सुशील विहारधाम अभिनव शत्रुंजय धाम का नव निर्माण किया गया है। तीर्थ का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 15 से 24 जनवरी 2022 तक आयोजित होगा। प्रतिष्ठा 22 जनवरी को सम्पन्न होगी। प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 153 चढ़ावों का लाभ लेने के लिये 1 लाख 8 हजार का नकरा तैय किया गया जिसका ड्रॉ निकालकर विजेता लाभ दिया जायेगा। ड्रॉ 26 फरवरी 2021 को श्री अष्टापद तीर्थ सुशील विहार रानी में निकाले जायेंगे।

शुभम् दीक्षित होंगे- धार- धार श्री संघ के युवा श्री शुभम् नरेन्द्र छजलानी परमात्मा प्रभुवीर के श्रमण समुदाय में दीक्षित होकर जिन शासन को शोभायमान करने जा रहे है। पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. एवं आचार्य श्री विजयजयरत्न सूरीश्वरजी म.सा.के अमृत सानिध्य में आपका प्रवज्या महोत्सव वैशाख वद-5 शनिवार दिनांक 1 मई 2021 को पाटण तीर्थ में उपस्थित होगा।

पूज्यपाद वरिष्ठ जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी की निश्रा में वर्षी तपाराधना का जोरदार आगाज

✻ 60से अधिक आराधक वर्षभर के तप से जुड़ेगे।
✻ 7 मई को आपका जन्मोत्सव मनाया जायेगा।
✻ ओली आराधना इन्दौर श्रीसंघ में करवायेंगे।
✻ चार्तुमास देपालपुर होने की संभावना।

उज्जैन-पूज्यपाद सागर समुदाय के वचन सिद्ध, भोपावर महातीर्थ के प्रतिष्ठाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा, मुनिश्री पद्म कीर्तिसागरजी म.सा. का विभिन्न श्रीसंघों में धर्म प्रभावना करते हुए दिनांक 18 मार्च को पुनः उज्जैन आगमन होने पर आपका भव्य सामैया आयोजित किया गया। इस मंगल प्रसंग पर पूज्य साध्वीवर्या श्री शशिप्रभा श्रीजी, साध्वी वर्या श्री दमिताश्रीजी, साध्वी श्री मेघावर्षा श्रीजी आदि ठाणा की मंगल उपस्थिति रही। पूज्यपाद आचार्यश्री की निश्रा में यहां सामुहिक वर्षी तपाराधना के आयोजन का भव्य आगज होने जा रहा है। पूज्यश्री की प्रेरणा से लगभग 60 तपाराधकों ने वर्षीतप के लिये नाम लिखाये साथ ही लगभग 10 लाख रुपये का फण्ड भी हो गया। वर्षी तपाराधना 4 अप्रेल से आरंभ होने जा रही है। यहां से पूज्यश्री 4 अप्रेल के बाद इन्दौर के लिये प्रस्थान करेंगे। यहां आपकी निश्रा में शाश्वत नवपद चैत्र ओली का आयोजन 19 से 27 अप्रेल तक होगा। इसके बाद आपश्री का आगमन पुनः उज्जैन होगा यहां आपका 79 वां जन्मोत्सव का कार्यक्रम होने जा रहा है। इसी समय आपके चार्तुमास की घोषणा भी होने की संभावना है। चार्तुमास देपालपुर में होने की बात चल रही है। जन्मोत्सव कार्यक्रम में .वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. 100 +100+154 ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरसूरी जी म.सा.आदि ठाणा का भी आगमन होगा।

उज्जैन में गणिवर्य श्री आनंदचंद्रसागरजी म.सा. की निश्रा में शाश्वत नवपद ओली आराधना

उज्जैन- बंधु बेलड़ी आचार्य भगवंत के गुरुकुल के चमकते श्रमण भगवंत परमात्मा की वाणी प्रभावना से सबको मोहित करनेवाले पूज्य गणिवर्य श्री आनंदचंद्र सागर जी म.सा. मुनि प्रवर श्री चारित्र चंद्रसागरजी म.सा. मुनिश्री उत्सवचंद्र सागरजी म.सा.एवं साध्वीवर्या श्री मेघावर्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 की निश्रा में उज्जैन में नवपद चैत्र ओली आराधना का भव्य आयोजन श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर होने जा रहा है। ओली आराधना दिनांक 19 अप्रेल से 27 अप्रेल तक होगी। 28 अप्रेल को पारणा के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति होगी। आराधना के दौरान प्रतिदिन प्रवचन, पूजन महा पूजन के आयोजन भी होंगे। आपश्री ने बड़नगर में सफल चार्तुमास कर इन्दौर के श्री संघों में प्रभावी शासन प्रभावना कर नवयुवकों में धर्म जागृति का शंख नाद किया। दिनांक 16 मार्च को भोपावर महातीर्थ में आप ध्वजा महोत्सव में भी पधारे। यहां से विभिन्न श्री संघों में धर्म प्रभावना कर आप ओली आराधना के लिये उज्जैन पधारेंगे।

18 वां ध्वजारोहण महोत्सव मना

अहमदाबाद- वेजलपुर में श्री उवसंग्गहरम् तीर्थ में पूज्य आचार्य भगवंत श्री निरंजनसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में तीर्थ में 18 अभिषेक का आयोजन किया गया। 16 मार्च को वार्षिक ध्वजारोहण तथा सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई। आयोजन सागर संस्कार ट्रस्ट के द्वारा किया गया।

श्री हस्तिनापुर महातीर्थ में फाल्गुन मेला लगा

हस्तिनापुर- प्रसिद्ध तीर्थ हस्तिनापुर में प्रतिवर्षानुसार इस बार भी 28 एवं 29 मार्च को दो दिवसीय फाल्गुन मेला आयोजित किया गया। 28 मार्च को होली मिलन समारोह हुआ। 29 मार्च को भव्य वरघोड़ा निकाला गया। श्री हस्तिनापुर श्वेतांबर श्री संघ की ओर से अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई।

आचार्य पद प्रदान किया गया

पूज्य पंन्यास प्रवर श्री उदयरत्न विजयजी को 10 मार्च को आचार्य पद पर आरुढ़ किया गया।

विश्व विख्यात भोपावर महातीर्थ की प्रथम वर्षगांठ भव्यता और गरिमामय आयोजन के साथ सम्पन्न

✻ अध्यक्ष श्री रमणभाई मुथा का तीर्थ और गुरुदेव के प्रति समपर्ण दिखाई दिया।

✻ निर्विध्न रुप से देश के श्रेष्टीवर्यो की उपस्थिति आयोजन हुआ।

भोपावर- 16 वें तीर्थंकर परमात्मा दादा शांतिनाथ प्रभु के काउसग्ग मुद्रावाली 88 हजार वर्ष प्राचीन विश्व विख्यात महातीर्थ भोपावर में बने भव्यातिभव्य त्रिलोक दर्शनीय जिनप्रमाद में गुरुदेव के वहद् हस्ते दादा के विराजमान होने के बाद से महातीर्थ की ख्याति प्रतिदिन वृद्धि पर रही है। विगत वर्ष 2020 में भोपावर महातीर्थ में भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव ने पूरे जैन जगत में प्रसिद्धि पाई गई थी। तीर्थ और गुरु के प्रति आस्थावान मोन्टेक्स ग्रुप सर्वेसर्वा और महातीर्थ के अध्यक्ष श्री रमणभाई मुथा और सहयोगी श्री हितेश भाई के साथ 300 सौ से अधिक लोगों की समर्पित टीम ने अतुलनीय सहयोग और प्रवचन के बल पर सम्पूर्ण प्रति महोत्सव बगैर किसी त्रुटि, बोलचाल घटना के निर्विघ्न रुप से सम्पन्न हुआ था और धर्मिष्ठों के मन मस्तिष्क कई सुनहरी यादगार दे गया था जो लोगों के दिल में आज भी स्थान बनाये है।

ऐसे शांति के सौरभ से भरपूर महातीर्थ की प्रथम वर्षगांठ 14 से 16 मार्च 2021 तक तीर्थ की गरिमा और शान के साथ मनाई गई। पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी महाराजा एवं युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी भगवंतों की पावन निश्रा रही। जैन जगत के श्रेष्टिवर्य का आगमन हुआ। एक बार भी श्री रमणभाई और हितेशभाई सुकुशल प्रबंधन से महोत्सव अच्छी तरह से सम्पन्न हुआ। दादा के 18 अभिषेक हुए। जोरदार रात्री भक्ति और 16 मार्च को लाभार्थी परिवार के द्वारा दादा के जिनालय के साथ देवी देवताओं के मंदिरजी और गुरुदेव के गुरु मंदिर पर ध्वजारोहण के साथ सत्तर भेदी पूजन पढ़ाने के साथ सत्तर भेदी पूजन पढ़ाने के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई।

भवानीमंडी में ध्वजारोहण हुआ

भवानीमंडी- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागर सूरीजी म.सा. के तीसरे सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा. अर्हम्. रत्न सागरजी सा. की निश्रा में मुनिश्री पवित्ररत्नसागरजी म.सा. एवं साध्वी मुक्तिप्रियाश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में ध्वजारोहण एवं दीक्षार्थी बहनों की शोभायात्रा का आयोजन किया गया। दीक्षार्थी युतिका मेहता (रामगंजमंडी) एवं चीकु छाजेड़ (सुवासरा) की दीक्षा आगामी माह में होनेवाली है। 24 मार्च को श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ प्रभु के जिनालय की ध्वजा चढ़ाई गई। सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई गई।

पॉच मुक्ति

1- **सालोक्य**-भगवान के समान लोक की प्राप्ति।

2- **सार्ष्टि**- भगवान के समान ऐश्वर्य की प्राप्ति।

3- **सामीप्य**- भगवान के निकट स्थान की प्राप्ति।

4- **सारुप्य**- भगवान के समान स्वरुप की प्राप्ति।

5- **सायुज्य**- भगवान में लय की प्राप्ति।

भागवत 3/29/93

पुणे में छः मास तक सांकळी आयंबिल

पुना- पुना में जिनशासन के 100 वर्षीय गच्छाधिपति एवं सर्वाधिक दीक्षा पर्याय धारण करनेवाले पू.आचार्य देव श्री दौलतसागरसूरीश्वरजी महाराजा के जन्मशताब्दी निमित्ते छः मास तक सांकळी आयंबिल तप का भव्य आयोजन किया गया है। सुविशाल सागर समुदाय के सभी आचार्य भगवंतों के शुभाशिर्वाद से यह भव्य आयोजन पूना में होने जा रहा है। सांकळी आयंबिल का शुभारंभ पूज्य गच्छाधिपतिश्री की आचार्य पद ग्रहण तिथि (फागण वद-3) दिनांक 31-3-2021 से हुआ तथा पूर्णाहुति पूज्य गच्छाधिपतिश्री की 101 वीं जन्मतिथि (भाद्रपद वद-14) दिनांक 5-10-2021 को होगी। परमतपस्वी पू.सा.श्री प्रशमप्रज्ञाश्रीजी म.सा. के सुशिष्या पू.सा. श्री दिव्यदर्शनाश्रीजी म.सा. का मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा हैं। अनुष्ठान में जुड़नेवालों का बहुमान भी किया जाएगा।

हमारे तीज-त्यौहार

1-	चैत्र वदी-4	गुरुवार	1-4-2021	श्री पार्श्वनाथ प्रभु का च्यवन एवं केवलज्ञान कल्याणक
2-	चैत्र वदी-5 (6)	शुक्रवार	2-4-2021	मालवोद्धारक आचार्य भगवंत श्री चन्द्रसागरसूरीजी म.सा. का काल दिवस
3-	चैत्र वदी-8	रविवार	4-4-2021	श्री ऋषभदेव प्रभु का जन्म-दीक्षा कल्याणक वर्षीतप आरंभ
5-	चैत्र वदी-9	सोमवार	5-4-2021	श्री शंखेश्वर आगम मंदिर संस्थापक पूज्य श्री अभ्युदय सागरजी म.सा.का कालधर्म दिवस
6-	चैत्र सुदी-1	मंगलवार	13-4-2021	गुड़ी पड़वा नववर्ष आरंभ
7-	चैत्र सुदी-2	बुधवार	14-4-2021	मीनार्क कुमुर्हत समाप्त
8-	चैत्र सुदी-4	शुक्रवार	16-4-2021	रोहिणी
9-	चैत्र सुदी-7	सोमवार	19-4-2021	शाश्वत चैत्र ओली आरंभ
10-	चैत्र सुदी-11,12,13	शुक्र,शनि,रवि,	23,24,25-4-2021	साधु-साध्वीजी को अचितरत का काउसग्ग
11-	चैत्र सुदी-13	रविवार	25-4-2021	श्री महावीर प्रभु का 2619 वां जन्म कल्याणक, युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरजी का जन्म दिवस

पुष्प नक्षत्र :–

आरम्भः-चैत्र सुदी-8,मंगलवार,दिनांक 20-4-2021,समय-सुबह 06.53 बजे

समाप्तः-चैत्र सुदी-1,9 बुधवार,दिनांक 21-4-2021,समय-सुबह 07.59 बजे

पंचक :–

आरम्भः-चैत्र वदी-11,बुधवार,दिनांक 7-4-2021, समय-दोपहर 03.02 बजे

समाप्तः-चैत्र वदी-30,सोमवार,दिनांक 12-4-2021, समय-दोपहर 11.31 बजे

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें ।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें ।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें ।

- सम्पादक

मध्यप्रदेश के प्रवेशद्वार... झाबुआ नगरे...
महाराजा का महाप्रवेश... ऐतिहासिक महामांगलिक...

नवरत्न गुरु कृपा प्राप्त, प.पु. युवा हृदय सम्राट आचार्य देव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. के श्रीमुख से हजारों भक्तों की उपस्थित मे मालवभूषण सूरिजी की महामांगलिक सम्पन्न

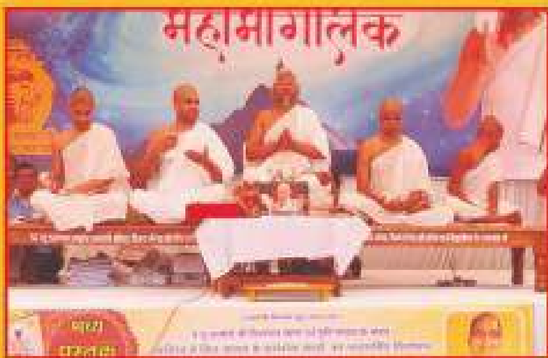

वर्ष 26 | चैत्र-वैशाख | अप्रेल-2021 | अंक 04 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एन.डी. 08/2021-2023

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-
डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

बुक पोस्ट
प्रति,
श्रीमान् ....
....
....

स्टाम्प
टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897